शिक्षित केरल, राजधानी दिल्ली और पड़ोसी मध्यप्रदेश से भी बहुत आगे

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

हमें गर्व है कि... छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी देश में सबसे ज्यादा

लक्ष्मी राजवाड़े
भटगांव

रेणुका सिंह
भरतपुर-सोनहट

लता उसेंडी
कोंडागांव

अनिला भेंड़िया
डौंडीलौहारा

संगीता सिन्हा
संजारी बालोद

सबसे शिक्षित राज्य केरल में महिला विधायकों की भागीदारी 7.86%

रायमुनि भगत
जशपुर

अंबिका मरकाम
सिहावा

सावित्री मंडावी
भानुप्रतापपुर

पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश में महिला विधायकों की भागीदारी 11.7%

शकुंतला पोर्ते
प्रतापपुर

उतरी गनपत जांगड़े
सारंगढ़

उधेश्वरी पैकरा
सामरी

देश के सबसे बड़े राज्य यूपी में महिला विधायक सिर्फ 11.6 फीसदी

कविता प्राण लहरे
बिलाईगढ़

विद्यावती सिदार
लैलुंगा

हर्षिता स्वामी बघेल
डोंगरगढ़

शेषराज हरवंश
पामगढ़

एक राज्य मिजोरम, जहां महिला विधायकों की संख्या शून्य है

भावना बोहरा
पंडरिया

गोमती साय
पत्थलगांव

चातुरी नंद
सराईपाली

यशोदा नीलांबर वर्मा
खैरागढ़

- सुरेन्द्र शुक्ला के साथ विकास शर्मा

गर्व है कि हम छत्तीसगढ़िया हैं। हमारी विधानसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी देश में सबसे ज्यादा है। 95 फीसदी साक्षरता का दम भरने वाला केरल महज 8 फीसदी महिला विधायकों पर सिमट गया। देश की राजधानी दिल्ली, जहां की सियासत पूरे देश के लिए मिसाल बनती है वह महिलाओं की भागीदारी के मामले में हमसे बहुत पीछे है। दिल्ली की तरह मध्य प्रदेश जैसे कई बड़े राज्य 11 फीसदी की दहलीज ही लांघ पाए, वहीं हमारे छत्तीसगढ़ ने 21 फीसदी, 19 महिला विधायकों की भागीदारी के साथ पूरे हिंदुस्तान में 'नारी शक्ति' का परचम लहराया है। सचमुच...यह गर्व की अनुभूति का अहसास कराता है। यह सिर्फ राजनीति नहीं, बल्कि हमारी उस महान संस्कृति की जीत है जहां 'महतारी' का सम्मान सिर्फ नारों में नहीं, बल्कि सत्ता के गलियारों और नीति-निर्माण के फैसलों में भी गूंजता है। 90 सीटों वाली विधानसभा में ये 19 महिला विधायक इस बात का प्रमाण हैं कि छत्तीसगढ़ की महतारी सजग है, सक्षम है और सशक्त है। छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय के अनुसार छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिला विधायकों की हिस्सेदारी पूरे देश में सबसे ज्यादा है। छत्तीसगढ़ जब मध्यप्रदेश से अलग हुआ तब केवल छह महिला विधायक थीं। जो अब बढ़कर 19 हो गई हैं।

आज का अंक नारी शक्ति के नाम- उनके साहस को सलाम और उन दरवाजों पर दस्तक, जो अब भी उनके लिए बंद हैं

क्योंकि महिलाएं घर नहीं समाज चलाती हैं

अगर महिलाएं... सिर्फ एक दिन छुट्टी पर चली जाएं ....

सुबह 5 बजे महिलाएं सबसे पहले उठती हैं। जब पुरुष सो रहे होते हैं तब महिलाएं उठती हैं और घरों में हलचल शुरू हो जाती है। कहीं चूल्हा जलता है, कहीं गैस पर चाय चढ़ाई जाती है। चाय के साथ घरों की सुबह जागती है।

पर ऐसा नहीं हुआ तो?

सोचिए सभी के हाथों में चाय नहीं होगी। सुबह ठंडी होगी और आलस से भरी हुई।

सुबह 7 बजे आम दिनों में यह घरों की सबसे भागदौड़ वाली घड़ी होती है। बच्चों के टिफिन बनते हैं। स्कूल ड्रेस प्रेस होती है। दूध के गिलास और जल्दी-जल्दी खाए जा रहे नाश्ते के बीच दिन की शुरुआत होती है। महिलाएं दौड़ती हैं, भागती हैं। बच्चों के बस्ते जमाती हैं। टिफिन तैयार करती हैं और उन्हें स्कूल के लिए तैयार करती हैं।

ऐसा नहीं हुआ तो...?

टिफिन नहीं बनेंगे। कई घरों में बच्चे स्कूल ही नहीं जा पाएंगे। अगर बच्चे स्कूल जाएंगे तो भी उनके टिफिन खाली रह जाएंगे। मतलब सुबह की शुरुआत ही बिगड़ जाएगी।

सुबह 10 बजे पुरुष आपाधापी में नाश्ता करके दफ्तर रवाना होते हैं। कामकाजी महिलाएं बच्चों को स्कूल भेजती हैं। पुरुषों को नाश्ता देकर खुद दफ्तर भागती हैं। जो दफ्तर नहीं जातीं वे घर को संभालने में जुट जाती हैं। छोटे बच्चे आंगनबाड़ी पहुंचते हैं। मिड-डे मील बनता है। पोषण आहार बांटा जाता है।

स्कूलों में आधी से ज्यादा संख्या महिला शिक्षकों की होती है। वे शिक्षित करने में जुट जाती हैं।

अगर महिलाएं छुट्टी पर चली जाएं तो... ?

आंगनबाड़ी का का दरवाजा बंद हो जाएगा। रसोई सूनी रह जाएगी। पुरुषों को नाश्ता नहीं मिलेगा। दोपहर एक बजे खेतों की तरफ देखिए... रोपाई, निराई, कटाई करती हुई महिलाएं दिखती हैं।

घरों के बिस्तर ठीक होते हैं। कपड़े धुलने में डाले जाते हैं। छोटे-छोटे उद्योगों को संभालने वाली महिलाएं अचार, पापड़, अगरबत्ती और सिलाई करने में जुट जाती हैं।

अगर ऐसा न हो तो...?

किसान खड़े हैं, पर काम करने वाले हाथ कम पड़ गए हैं। कई जगह काम रुक गया है। महिलाओं के छोटे-छोटे उद्योग, पापड़, मसाले, अगरबत्ती, सिलाई , सब ठहर गए हैं। घरों में खाना नहीं बना है। बुजुर्ग टकटकी लगाकर देख रहे हैं। पुरुषों को लंच बाक्स नहीं मिल पाया। घर सूना है बिखरा हुआ है।
बिस्तरों पर चादरें वैसी ही पड़ी हैं जैसा उन्हें सुबह छोड़ दिया गया था। अस्त-व्यस्त घर और मनहूसियत से भरा आंगन।

शाम पांच बजे दिनभर की थकान के बाद परिवार एक साथ बैठकर खाना खाता है।
बच्चे घर चहकते हुए लौटते हैं। महिलाएं उन्हें दुलार करती हैं। आते ही उन्हें खाने को देती हैं। उनके कपड़े बदलती हैं और पहने हुए कपड़ों को धोने में डालती हैं। डिनर की तैयारी में जुट जाती हैं। दफ्तर से लौटी महिलाएं भी काम के बाद घर संभालने में जुट जाती हैं। जो दफ्तर नहीं जाती वे सुबह से लेकर शाम तक पलभर नहीं बैठती और खुद को खपाती हैं।

अगर ऐसा नहीं हो तो...?

रात आठ बजे किसी ने आटा नहीं गूंदा। किसी ने दाल नहीं चढ़ाई। किसी ने सब्जी नहीं काटी। उधर घर के कोने में बैठे बीमार बुजुर्ग को दवा देने वाला भी कोई नहीं है। छोटे बच्चे रो रहे हैं। घर में सब हैं, लेकिन व्यवस्था बिखर गई है।
और तब समझ आएगा कि... महिलाएं केवल खाना नहीं बनातीं। वे केवल बच्चों की देखभाल नहीं करतीं। वे केवल घर के काम नहीं करतीं।

वे केवल घर नहीं चलातीं महिलाएं समाज चलाती हैं

डिजाइनिंग: अशोक कुमार साहू
गोपीचंद जायसवाल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस-2026

के अवसर पर

वृहद महतारी वंदन

छत्तीसगढ़ शासन | छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव 25

महतारी गौरव वर्ष

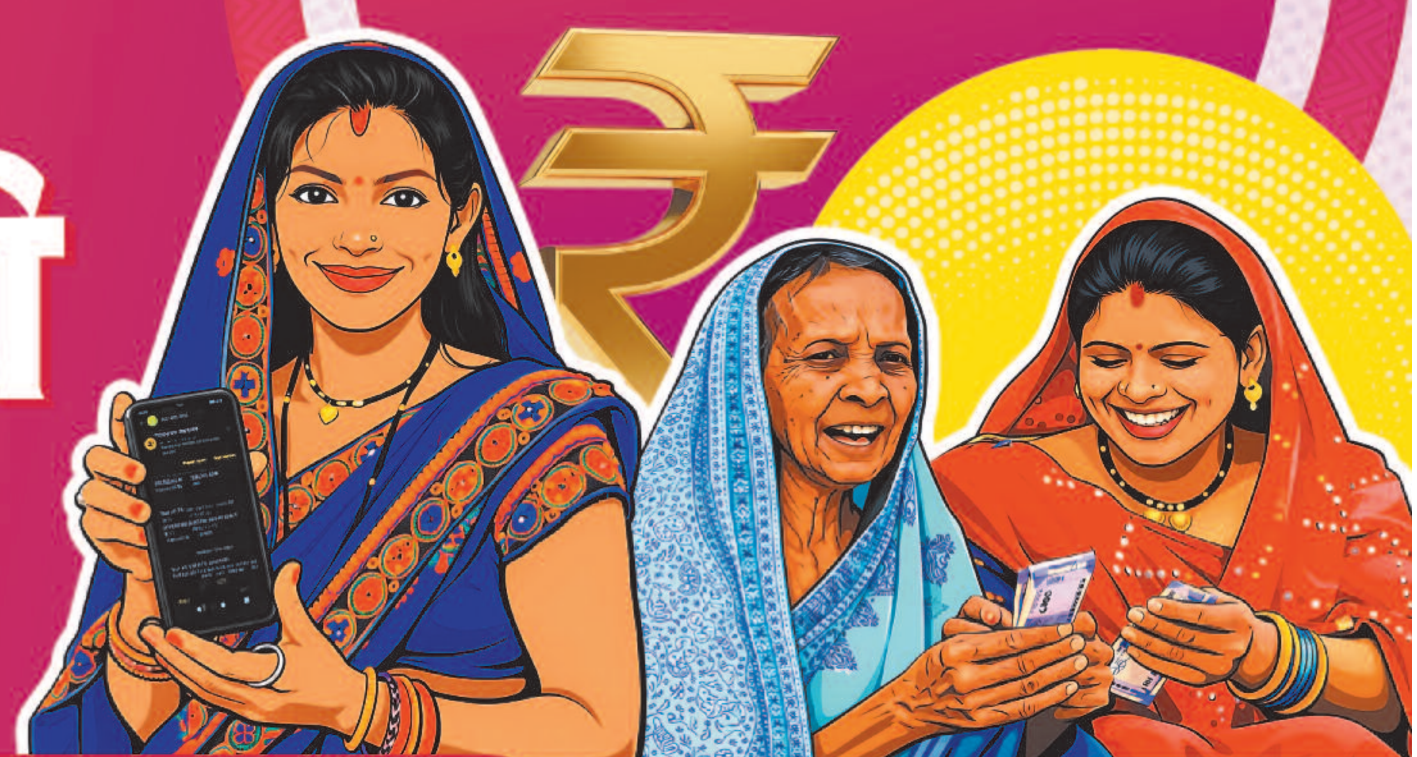

सम्मेलन-2026

08 मार्च 2026

दोपहर 12:00 बजे

लाल बहादुर शास्त्री मिनी स्टेडियम, जनपद पंचायत बस्तर

सखी वन स्टॉप सेंटर
SOP लागू करने वाला **पहला राज्य**, संकटग्रस्त महिलाओं को तत्काल सहायता, परामर्श और कानूनी मदद

महतारी वंदन योजना
69 लाख से अधिक महिलाओं को **₹15,595 करोड़** की सहायता

2026-27 बजट में **₹8,200 करोड़** का प्रावधान

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना
दो वर्षों में **21,754 बालिकाओं** का विवाह संपन्न

प्रत्येक जोड़े को **₹50,000** की सहायता राशि

यूनिटी मॉल
महिला स्व-सहायता समूहों को नवा रायपुर में उत्पादों के विक्रय हेतु **व्यापक बाज़ार**

लखपति दीदी श्रमण योजना
₹05 करोड़ का बजटीय प्रावधान

लखपति दीदियों को कराया जाएगा **एक्सपोजर विज़िट**

लखपति दीदी योजना
8 लाख से अधिक महिलाएं बनीं लखपति दीदी

10 लाख अतिरिक्त महिलाओं को लखपति दीदी बानाने का लक्ष्य

रजिस्ट्री शुल्क
महिलाओं को **रजिस्ट्री शुल्क** में **50%** की छूट का बजटीय प्रावधान

महतारी सदन
368 महतारी सदनों के निर्माण हेतु **₹108.78 करोड़** स्वीकृत

137 महतारी सदनों का निर्माण पूर्ण

बिहान योजना
42,878 महिला स्व-सहायता समूहों को आसान ऋण से अब तक **₹129.46 करोड़** का लाभ

रेडी टू ईट
पायलट प्रोजेक्ट के रूप में **महिला स्व-सहायता समूहों** को पुन: **रेडी टू ईट** के कार्य की ज़िम्मेदारी

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

बस्तर से राजेश दास

मजबूत महतारी, मुट्ठी में दुनिया सारी, लेकिन...बंदिशों में 'आधी आबादी'

वीरता की मिसाल बनी महतारी...अब हर बंद दरवाजे को खोलने की है तैयारी

छत्तीसगढ़ की महतारी...हाथ में बंदूक लेकर नक्सलियों की कमर तोड़ रही है। बीहड़ों में उतरकर उन्हें खदेड़ रही है, उनका एनकाउंटर कर रही है। वह वीरता की मिसाल है। वह योद्धा है, साहसी है। छत्तीसगढ़ की महतारी दंगल में दांव-पेंच सीख रही है...सिखा भी रही है। अखाड़ों में दहाड़ती है। वह जानती है कि सशक्त होना है, सख्त होना है। उसकी देह अब केवल कोमलता का प्रतीक नहीं, शक्ति का भी परिचय है। छत्तीसगढ़ की महतारी पोस्टमार्टम टेबल पर खड़ी है। सड़े-गले शवों की जांच करती है। उसके हाथ कांपते नहीं। वह संकोच नहीं करती, चीर-फाड़ करती है और सच सामने लाती है। यह भी साहस का ही एक रूप है। लेकिन... दूसरा पहलू आज भी कुछ बेड़ियों में जकड़ा हुआ दिखता है। एक ओर बस्तर के जंगलों में हमारी महतारी नक्सलियों से दो-दो हाथ कर रही है, तो दूसरी ओर पुलिस की गाड़ी का स्टेयरिंग थामने में उसके हाथ आज भी कांपते दिखते हैं। हैरत होती है कि छत्तीसगढ़ पुलिस की गाड़ियों की कमान महिलाओं के हाथों में लगभग नजर नहीं आती। फायर ब्रिगेड की आग हो या एंबुलेंस की रफ्तार, इन मोर्चों पर भी उनकी मौजूदगी बहुत कम है। वह जेसीबी चला सकती है, लेकिन बिजली के खंभों पर चढ़ती कम दिखाई देती है। हैरत होती है कि छत्तीसगढ़ में एक भी लाइन वूमेन नहीं है। महिला दिवस पर छत्तीसगढ़ की सभी महिलाओं को शुभकामनाएं...इस उम्मीद के साथ कि जो दरवाजे अभी बंद हैं, उन पर दस्तक और तेज होगी। वे दरवाजे खुलेंगे और आने वाले समय में छत्तीसगढ़ की महतारी हमें हर मोर्चे पर नजर आएगी...

सफलता का शिखरः फतह किए नामुमकिन मोर्चे

नई दहलीज़ : अनछुए रास्तों पर दस्तक देने की तैयारी

बस्तर में कर रहीं नक्सलियों का संहार

बस्तर के बीहड़ों में 21 सौ से अधिक महिला कमाण्डोज नक्सल उन्मूलन में लगी हैं। जंगलों की खाक छानते, दुश्वारियों का सामना करतीं महिला कमांडो साहस की नई कथा लिख रही हैं। फोर्स के साथ कंधे से कंधा मिलाकर ऑपरेशन में शामिल होकर नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराने के साथ ही बस्तर को नक्सलमुक्त करने के अभियान में लगी हुई हैं। वहीं, दूसरी ओर ग्रामीणों महिलाओं और बच्चों से जुड़े मामलों में संवेदनशीलता और विश्वास के साथ कार्य कर रही हैं, जिससे पीड़ितों को अपनी बात खुलकर रखने का अवसर मिलता है। ऑपरेशनों में महिला जवानों ने साहस और धैर्य का परिचय देते हुए सर्चिंग, गश्त और घेराबंदी जैसी जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। बस्तर जैसे कठिन इलाकों में काम करना आसान नहीं होता, लेकिन इन महिलाओं ने यह साबित किया है कि चुनौतियां उन्हें रोक नहीं सकतीं।

पुलिस की गाड़ी चलाने में कांप रहे हाथ नहीं थामती स्टेयरिंग

छत्तीसगढ़ पुलिस में आज हजारों महिला कर्मचारी और अधिकारी विभिन्न जिम्मेदारियां निभा रही हैं। कानून-व्यवस्था बनाए रखने से लेकर जांच और महिला संबंधी मामलों में वे अहम भूमिका निभाती हैं। कई थानों में महिला डेस्क के जरिए पीड़ित महिलाओं को सहारा देने का काम भी किया जा रहा है। इसके बावजूद पुलिस विभाग के अंदर वाहन चालक के रूप में महिलाओं की संख्या नहीं...या नहीं के बराबर है। गश्त और आपात स्थितियों में पुलिस वाहन चलाना महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है, लेकिन इस भूमिका में महिलाओं की भागीदारी बहुत सीमित है। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रशिक्षण की कमी, अवसरों की कमी और लंबे समय से चली आ रही धारणाएं इसके पीछे बड़ी वजह हैं। जब महिलाएँ पुलिसिंग के कठिन काम कर रही हैं, तो वाहन संचालन जैसे कामों में उनकी संख्या क्यों नहीं बढ़ पा रही, यह सवाल अभी भी बना हुआ है।

दंगल में दहाड़ रहीं...

कुश्ती को आमतौर पर केवल पुरुषों का खेल माना जाता रहा है, लेकिन हमारी बेटियां दंगल में दहाड़ रही हैं। हर साल दर्जनों महिला खिलाड़ी छत्तीसगढ़ से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर भारत और छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हरिभूमि टीम अखाड़े में पहुंची। यहां लड़कियां अखाड़े की मिट्टी में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कुश्ती के दांव-पेंच आज़माती नजर आईं। उनके दांव इतने सटीक थे कि पलक झपकते ही वे सामने वाले खिलाड़ी को चित कर देती हैं। रेसलिंग की नेशनल खिलाड़ी अक्षरा साहू ने बताया कि दंतेश्वरी अखाड़ा हमारे जन्म से भी पहले का है।

फायर ब्रिगेड में महिलाएं नहीं...या नहीं के बराबर

प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत कार्य की जिम्मेदारी उठाने वाले आपदा नियंत्रण विभाग में महिलाओं का दखल बरसों से नहीं रहा है। हालात यह हैं कि प्रदेश के अब तक के इतिहास में इस बारे में सोचा भी नहीं गया था। नहीं सोचा गया कि जो महिला फाइटर प्लेन चला सकती हैं उसके लिए आग बुझाना कौनसी बड़ी बात है। यह स्थिति कई सवाल खड़े करती है। जब महिलाएं खेल मैदान में ताकत और साहस का प्रदर्शन कर रही हैं, तो फिर फायर ब्रिगेड जैसी सेवाओं में उन्हें अवसर क्यों नहीं मिल पा रहे हैं? विशेषज्ञ मानते हैं कि भर्ती प्रक्रिया, प्रशिक्षण ढांचे और सामाजिक सोच में बदलाव से ही इस स्थिति को बदला जा सकता है। इसकी शुरुआत शायद इस खबर के बाद छत्तीसगढ़ में शुरू भी हो जाए।

पोस्टमार्टम करती हैं महिलाएं...

शवों का पोस्टमार्टम करने यानी फॉरेंसिक मेडिसिन की पढ़ाई में पुरुषों का दबदबा था। तब रायपुर मेडिकल कालेज में डा. स्निग्धा जैन ने इस विषय का चुनाव कर मिथक को तोड़ा था। लगातार सेवा देते हुए वे विभागाध्यक्ष बनीं और उनके मार्गदर्शन में महिला चिकित्सकों ने भी इस विषय पर अपनी दिलचस्पी दिखाई। अब काउंसिलिंग के दौरान छात्रों के साथ छात्राएं भी च्वाइस फीलिंग के दौरान फॉरेंसिंक मेडिसिन का चुनाव करती हैं। मेडिकल कालेज रायपुर में एमडी फॉरेंसिक मेडिसिन में चार महिला चिकित्सक अपनी पढ़ाई पूरी कर रही हैं। पढ़ाई के साथ प्रैक्टिकल के रूप में यह पीजी छात्राएं अपने पुरुष सहपाठियों के साथ शवों के पोस्टमार्टम में भी हाथ बंटा रही हैं। विभागाध्यक्ष डा. जैन ने बताया कि विषय विशेषज्ञ बनने के बाद ये डॉक्टर प्रदेश के अन्य अस्पतालों में सेवाएं देंगी।

छग में 300 आर्थोपेडिक सर्जन, महिला विशेषज्ञ केवल एक

समाज के विकास में भले ही महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हों, मगर कुछ क्षेत्र अभी भी अनछुए हैं। स्वास्थ्य सेवा के मामले में भले ही महिला चिकित्सकों ने महारत हासिल कर ली हो, मगर हड्डियों से संबंधित समस्याओं के उपचार प्रक्रिया से उनकी दूरी कायम है। महिलाएं न्यूरो सर्जरी, कार्डियक सर्जरी, बर्न प्लास्टिक, नेफ्रोलॉजी जैसे सुपर स्पेशलिटी सेवाएं मरीजों को प्रदान कर रही हैं, मगर अस्थि रोग के इलाज में उनकी अनुपस्थिति की परपंरा आज भी बनी हुई है। छत्तीसगढ़ में वैसे तो आर्थोपेडिक सर्जन यानी हड्डी रोग विशेषज्ञों की संख्या तीन सौ है, मगर इनमें महिला विशेषज्ञ मात्र एक है। छत्तीसगढ़ आर्थोपेडिक एसोसिएशन के अध्यक्ष डा. प्रशांत द्विवेदी के मुताबिक हड्डियों से संबंधित इलाज में महिलाएं शुरू से असहज रही हैं। टूटी-फूटी हड्डियां मरीजों की गंभीर स्थिति और ट्रीटमेंट से संबंधित हार्डवर्क की वजह से इससे दूरी बनाए हुए हैं। राज्य में शासकीय के साथ प्राइवेट सेक्टर में भी अस्थिरोग महिला विशेषज्ञ की संख्या ना के बराबर है।

जेसीबी चला रही हैं आज की नारी

छत्तीसगढ़ में कई महिलाएं अब पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर भारी मशीनें चलाने जैसे काम भी कर रही हैं। कुछ जिलों में महिलाओं ने जेसीबी और अन्य निर्माण मशीनों को चलाकर यह साबित किया है कि तकनीकी कामों में भी वे किसी से पीछे नहीं हैं। रायपुर की रहने वाली काजल खारी महिलाओं में शामिल हैं जो पारंपरिक धारणाओं को तोड़ते हुए भारी वाहनों की दुनिया में अपनी अलग पहचान बना रही हैं। ट्रक और जेसीबी जैसी भारी मशीनें चलाना, जिसे लंबे समय तक पुरुषों का पेशा माना जाता रहा, काजल ने अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से अपना कर दिखाया है। छत्तीसगढ़ में ऐसी महिलाएं हैं जो ट्रक, बस, रिक्शा और गाड़ियां चला रही हैं।

एंबुलेंस चलाने से परहेज करती हैं

बदलते समय में हवाई जहाज से लेकर आटो तक चलाने वाली महिलाओं के हाथ अभी भी स्वास्थ्य विभाग की गाड़ी यानी एंबुलेंस से दूर हैं। विभाग में महिला वाहन चालक पर किसी तरह की पाबंदी तो नहीं है, मगर भर्ती प्रक्रिया के दौरान उनके द्वारा इस पद के लिए आवेदन ही नहीं किया जाता। स्वास्थ्य संचालनालय से लेकर तमाम निजी और शासकीय अस्पतालों के साथ गंभीर मरीजों और गर्भवती महिलाओं को अस्पताल पहुंचाने वाले 108 संजीवनी और 102 महतारी एक्सप्रेस सेवा के एंबुलेंस की स्टीयरिंग अभी महिलाओं के हाथों से दूर है। जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मिथिलेश चौधरी के मुताबिक विभाग में महिला वाहन चालकों की कभी भर्ती ही नहीं हुई। एंबुलेंस इमरजेंसी सेवा में आती है इसमें पदस्थ चिकित्सकीय स्टाफ में महिला पैरामेडिकल स्टॉप की मौजूदगी अनिवार्य होती है। महिलाओं द्वारा इस संवेदनशील सेवा वाले वाहन से दूरी बनाए रखने की वजह कहीं ना कहीं उनकी झिझक हो सकती है।

महिलाएं इतनी सक्षम...15 साल से क्राइम कंट्रोल

खबर सीपत थाना क्षेत्र की है। महिला शक्ति की बदौलत यह गांव जुहली नशा मुक्त, अपराध मुक्त और आदर्श ग्राम बन चुका है। लगभग 300 महिला कमांडो की टोली गांव को सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने में जुटी है, और नतीजा यह है कि बीते 15 वर्षों से गांव से एक भी अपराध थाने तक नहीं पहुंचा। सीपत थाना क्षेत्र के आदिवासी बाहुल्य गांव जुहली में 90 प्रतिशत आबादी आदिवासी समुदाय की है। यहां की लगभग 300 महिलाएं महिला कमांडो के रूप में संगठित होकर 2020 से गांव में नशा, अपराध और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान चला रही हैं। हर रविवार गांव में बैठक होती है, जिसमें महिलाएं बच्चों के भविष्य, महिलाओं की सुरक्षा और गांव के विकास पर चर्चा करती हैं।

छत्तीसगढ़ में एक भी लाइन वूमन नहीं

महिलाएं आज लगभग हर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज करा चुकी हैं। प्रशासन, सेना, पुलिस से लेकर तकनीकी क्षेत्रों तक महिलाएं काम कर रही हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ के बिजली विभाग में आज तक एक भी 'लाइन वूमन' नहीं है। राज्य बिजली वितरण कंपनी में महिलाएं कई पदों पर कार्यरत हैं, पर लाइनमैन का पद अब तक पुरुषों के लिए ही सीमित रहा है। यह परंपरा मध्यप्रदेश के जमाने से चली आ रही है। अब अधिकारी कहते हैं कि यह परंपरा बदली जाएगी। अगली बार जब भी लाइनमैन के लिए रिक्त पदों पर भर्ती की जाएगी महिलाओं को मौका दिया जाएगा। उन्हें प्रशिक्षण भी देंगे और प्रोत्साहित भी करेंगे।

महिला दिवस पर विशेष

रायपुर से लक्ष्मण लेखवानी के साथ रमन हलवाई की रिपोर्ट

हमारे समाज में आज भी कई ऐसे काम हैं, जिन्हें परंपरागत रूप से सिर्फ पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है। भारी वाहन चलाना भी उन्हीं में से एक है। देश में आज भी 99 प्रतिशत से अधिक ट्रक, हाईवा और अन्य भारी वाहन पुरुष ही चलाते हैं। लेकिन इन धारणाओं को तोड़ते हुए कुछ महिलाएं भी आगे आई हैं, जो न सिर्फ भारी वाहन चला रही हैं, बल्कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। ऐसी ही एक कहानी रायपुर जिले की सीमा से लगे अमलेश्वर (दुर्ग) की रहने वाली काजल साहू खारी की है। काजल न सिर्फ हाईवा और जेसीबी मशीन चलाना जानती हैं, बल्कि खुदाई और परिवहन से जुड़े हर काम को पूरी लगन और मेहनत से अंजाम देती हैं। आज वह हर महीने करीब एक लाख रुपए तक की कमाई कर रही हैं। हरिभूमि की टीम ने उनके घर पहुंचकर उनसे खास बातचीत की। काजल ने बताया कि वह विवाहित हैं और शादी के बाद ससुराल में ही रहती हैं। करीब तीन साल पहले उन्होंने राजा उर्फ रुकुम साहू से प्रेम विवाह किया।

अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में बड़ी भूमिका निभा रही हैं

बेटा नहीं था बेटी बनी सहारा, जेसीबी ट्रक चला काजल ने बदला नजारा

12 साल की उम्र से सीखा वाहन चलाना

काजल ने बताया कि उनके पिता मूल रूप से उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं, जबकि उनकी मां छत्तीसगढ़ की हैं। दोनों ने प्रेम विवाह किया था और शादी के बाद से रायपुर में ही रहते हैं। काजल सात बहनों में सबसे बड़ी हैं। परिवार में एक भाई भी हुआ था, लेकिन जन्म के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उनके पिता खुद ट्रक चलाते थे और चाहते थे कि बेटा उनके काम को आगे बढ़ाए। पिता की इसी अधूरी इच्छा को काजल ने अपना सपना बना लिया। उन्होंने सिर्फ 12 साल की उम्र में ट्रक चलाना सीखना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उन्होंने ट्रक के साथ मिनी बस और जेसीबी मशीन चलाना भी सीख लिया। 18 साल की उम्र में ड्राइविंग लाइसेंस बनवाकर उन्होंने पेशेवर तौर पर काम शुरू कर दिया।

चुनौतियों से भी लड़ी

काजल बताती हैं कि शुरुआत में उन्हें कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रिश्तेदार और समाज के लोग उनके ट्रक और जेसीबी चलाने का मजाक उड़ाते थे और परिवार को ताने देते थे। एक बार तो दबाव में आकर पिता ने उन्हें वाहन चलाना बंद करने को कह दिया, लेकिन उनकी मां ने उनका साथ नहीं छोड़ा। मां के हौसले से काजल अपने फैसले पर अडिग रहीं।

ससुराल से भी मिला पूरा साथ

शादी के बाद भी काजल ने अपना काम जारी रखा। उनके ससुर और पति भी हाईवा और जेसीबी से जुड़े काम करते हैं। काजल की मेहनत और जज्बे को देखते हुए परिवार ने लोन लेकर एक नई जेसीबी मशीन भी खरीदी। अब काजल जरूरत के अनुसार कभी हाईवा तो कभी जेसीबी चलाकर काम करती हैं।

रात में भी करती हैं काम

काजल दिन के साथ रात में भी काम करने से नहीं डरतीं। कई बार हेल्पर के छुट्टी पर होने पर उन्होंने अकेले ही रातभर खुदाई और मिट्टी परिवहन का काम किया है। इस दौरान असामाजिक तत्वों से सामना भी हुआ, लेकिन उन्होंने हिम्मत से उन्हें खदेड़ दिया। एक बार ट्रक पलटने जैसी दुर्घटना का सामना भी करना पड़ा, फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

बहनों के लिए बनी प्रेरणा

काजल बीकॉम तक पढ़ाई कर चुकी हैं। सात बहनों में से दो की शादी हो चुकी है। उनकी एक बहन खुशी भी बीकॉम कर रही है और जिम चलाती है। काजल का कहना है कि कोई भी काम मुश्किल नहीं होता, जरूरत सिर्फ मेहनत और लगन की होती है। अगर परिवार और समाज भरोसा करे तो महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर सफलता हासिल कर सकती हैं।

---

300 महिलाओं ने बदली गांव की तस्वीर

15 साल में गांव से एक भी विवाद थाने तक नहीं पहुंचा

बिलासपुर। 'उतारो मुझे जिस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊंगी, औरों से अलग हूं दिखने में, कुछ अलग कर के ही जाऊंगी। चाह नहीं है एक अलग नाम की, इसी को महान बनाऊंगी, नारी हूं मैं इस युग की, नारी की अलग पहचान बनाऊंगी।'

कविता की यह पंक्ति बिलासपुर की इन महिलाओं पर सटीक बैठती है। बिलासपुर जिले में एक छोटा-सा गांव जुहली आज पूरे प्रदेश के लिए एक बड़ी मिसाल बन गया है। एक समय था जब यहां अवैध शराब का बोलबाला था, लेकिन आज महिला शक्ति की बदौलत यह गांव नशा मुक्त, अपराध मुक्त और आदर्श ग्राम बन चुका है। लगभग 300 महिला कमांडो की टोली गांव को सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने में जुटी हैं, और नतीजा यह है कि बीते 15 वर्षों से गांव से एक भी अपराध थाने तक नहीं पहुंचा। सीपत थाना क्षेत्र के आदिवासी बाहुल्य गांव जुहली में 90 प्रतिशत आबादी आदिवासी समुदाय की है। यहां की लगभग 300 महिलाएं महिला कमांडो के रूप में संगठित होकर 2020 से गांव में नशा, अपराध और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान चला रही हैं। हर रविवार गांव में बैठक होती है, जिसमें महिलाएं बच्चों के भविष्य, महिलाओं की सुरक्षा और गांव के विकास पर चर्चा करती हैं।

नशा छोड़ो, समाज जोड़ो है जुहली का मंत्र

इन महिला कमांडो का मानना है कि नशा ने न केवल परिवारों को तोड़ा बल्कि सामाजिक तिरस्कार और आर्थिक बर्बादी का कारण भी बना है। इसलिए गांव की हर महिला अब इस दिशा में सजग प्रहरी बन चुकी है। उनका एकमात्र लक्ष्य है नशा छोड़ो, समाज जोड़ो। जुहली की यह पहल अब आस-पास के गांवों को भी प्रेरित कर रही है। कारिछापर जैसे गांव अब इसी राह पर चल पड़े हैं. महिला कमांडो की इस संगठित कोशिश ने यह दिखा दिया कि अगर महिलाएं ठान लें, तो समाज में बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।

पहले झगड़े आम बात थी, अब शांति

गांव की आदिवासी महिला सरपंच चंदेश्वरी त्रिभुवन मरावी कहती हैं, पहले गांव में झगड़े आम बात थी, अब शांति है। ये सब हम महिलाओं की मेहनत का नतीजा है। उन्होंने कहा जुहली गांव की यह पहल समाज में एक सशक्त संदेश देती है कि जब महिलाएं जागरूक होती हैं, तो बदलाव निश्चित होता है। शराबंदी समूह की अध्यक्ष वेदमती मरावी ने बताया कि 3 वर्ष पहले तक गांव में शराब की बिक्री हो रही थी जिसमे बड़ो के अलावा स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे भी शराब पीने के आदि हो रहे थे।

गांव में ही होता है आपसी विवादों का समाधान

जुहली गांव में कोई भी समस्या या विवाद थाने तक नहीं पहुंचता। गांव की महिलाएं, सरपंच और पंच मिलकर आपसी संवाद और पंचायत के माध्यम से ही हर मुद्दे का समाधान करते हैं। नशे से संबंधित किसी भी गतिविधि पर तुरंत गांव स्तर पर सख्त कार्रवाई की जाती है। पुलिस भी हैरान है कि जुहली गांव से पिछले 15 वर्षों में एक भी आपराधिक मामला दर्ज नहीं हुआ है। एसएसपी रजनेश सिंह ने भी चेतना अभियान में इन महिला कमांडो को चेतना प्रहरी की उपाधि प्रदान की। एसएसपी श्री सिंह के मुताबिक गांव की महिलाएं प्रदेश के लिए प्रेरणा हैं। उन्हें आई कार्ड और महिला कमांडो का दर्जा भी दिया गया है। हालांकि पुलिस नियमों के अनुसार इनका कार्यक्षेत्र गांव तक सीमित रहेगा।

अखाड़े की मिट्टी में लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सीख रहीं कुश्ती के दांव-पेंच

मजबूत बेटियों की दहाड़ अखाड़े में भर रहीं हुंकार

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हरिभूमि टीम पहुंची दंतेश्वरी अखाड़ा

कुश्ती को लंबे समय तक पुरुषों का खेल माना जाता रहा है, लेकिन अब राजधानी रायपुर की बेटियां इस धारणा को तोड़ रही हैं। पुरानी बस्ती स्थित दंतेश्वरी अखाड़ा इन दिनों बिल्कुल फिल्म दंगल की कहानी जैसा नजर आता है। यहां लड़कियां अखाड़े की मिट्टी में लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कुश्ती के दांव-पेंच सीख रही हैं और कई प्रतियोगिताओं में जीत दर्ज कर राज्य का नाम रोशन कर रही हैं।

ललित राठोड़ ⏭ रायपुर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हरिभूमि टीम अखाड़े पहुंची। यहां अभ्यास कर रहीं लड़कियों के दांव इतने सटीक थे कि वे पलक झपकते ही सामने वाले खिलाड़ी को चित कर देती हैं। नेशनल खिलाड़ी 18 वर्षीय निधी यादव बताती हैं कि दंतेश्वरी अखाड़ा उनके जन्म से पहले का है और बचपन से ही वह यहां लोगों को कुश्ती करते देखती आई हैं। वहीं अक्षरा बताती हैं कि पांच-छह साल पहले तक लड़कियों के लिए अखाड़े का माहौल सहज नहीं था। शुरुआत में उन्हें भी झिझक थी कि लड़कों के साथ दांव कैसे लड़ाएंगी, लेकिन आगे बढ़ने की चाह ने उन्हें अखाड़े तक पहुंचाया। कुछ ही महीनों में उन्होंने लड़कों के साथ अभ्यास करते हुए कुश्ती के कई दांव सीख लिए। आज यहां दर्जनों लड़कियां नियमित अभ्यास करने आती हैं और जरूरत पड़ने पर लड़कों के साथ भी मुकाबला करती हैं।

पांच साल में शून्य से 20 के पार पहुंचीं महिला पहलवान

राजधानी में चार प्रमुख अखाड़े हैं, लेकिन लड़कियां मुख्य रूप से दंतेश्वरी अखाड़े में ही अभ्यास करने आती हैं। अखाड़े के प्रशिक्षक अशोक पहलवान और दिलीप यदू बताते हैं कि यहां से हर साल एक दर्जन से अधिक लड़कियां स्कूल और कॉलेज स्तर के नेशनल गेम्स में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करती हैं। करीब पांच साल पहले तक यहां महिला पहलवानों की संख्या शून्य के बराबर थी, लेकिन अब यह आंकड़ा 20 के पार पहुंच चुका है। इनमें से एक दर्जन से ज्यादा लड़कियां नियमित रूप से अभ्यास करने आती हैं। प्रशिक्षक का कहना है कि दंगल और सुल्तान जैसी फिल्मों के बाद लड़कियों में कुश्ती के प्रति उत्साह बढ़ा है। अब ये बेटियां समाज की परवाह किए बिना अखाड़े की मिट्टी में पसीना बहा रही हैं और लड़कों को चुनौती देने में भी पीछे नहीं हट रहीं।

परिवार का साथ मिला, सालभर में बनीं नेशनल खिलाड़ी

नेशनल प्रतियोगिता की पहलवान राधिका पटेल बताती हैं कि कुश्ती में 'धोबी पछाड़' दांव देखने के बाद ही उन्होंने तय कर लिया था कि उन्हें भी यह खेल सीखना है। शुरुआत में लड़कों के बीच अभ्यास करने को लेकर झिझक थी, लेकिन परिवार ने पूरा साथ दिया। राधिका बताती हैं कि शुरुआती प्रतियोगिताओं में उनका मुकाबला लड़कों से भी हुआ। इससे उनका आत्मविश्वास और बढ़ा। आज वह नेशनल स्तर की प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले रही हैं और नियमित रूप से अखाड़े में अभ्यास करती हैं। उनका कहना है कि कुश्ती ताकत के साथ तकनीक का भी खेल है। सही समय पर सही दांव लगाना ही जीत का मूल मंत्र है। अगर तकनीक और टाइमिंग सही हो, तो सामने चाहे पुरुष खिलाड़ी ही क्यों न हो, उसे भी चित किया जा सकता है।

हर दरवाजे पर दस्तक, पर बिजली विभाग में नहीं 'लाइन वूमन' मप्र के जमाने से चली आ रही परंपरा, छत्तीसगढ़ में आज तक एक भी लाइन वूमन नहीं

हर काम में नारी की भागीदारी, पर बिजली खंभों पर नहीं जिम्मेदारी

राजकुमार ग्वालानी ⏭ रायपुर

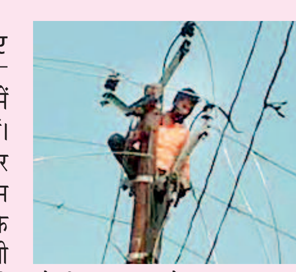

महिलाएं आज लगभग हर क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज करा चुकी हैं। प्रशासन, सेना, पुलिस से लेकर तकनीकी क्षेत्रों तक महिलाएं काम कर रही हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ के बिजली विभाग में आज तक एक भी 'लाइन वूमन' नहीं है। राज्य बिजली वितरण कंपनी में महिलाएं कई पदों पर कार्यरत हैं, पर लाइनमैन का पद अब तक पुरुषों के लिए ही सीमित रहा है। यह परंपरा मध्यप्रदेश के जमाने से चली आ रही है। दरअसल बिजली विभाग में लाइनमैन का काम काफी कठिन माना जाता है। इसमें बिना सीढ़ी के खंभों पर चढ़कर बिजली लाइनों की मरम्मत और रखरखाव करना पड़ता है। भर्ती प्रक्रिया में भी अभ्यर्थियों को तय समय में खंभे पर चढ़ने जैसे शारीरिक परीक्षण से गुजरना पड़ता है। संभवतः इसी कारण अब तक किसी महिला को इस पद पर मौका नहीं मिला। मप्र में खुला रास्ता, यहां भी उम्मीद मध्यप्रदेश में इस परंपरा को बदलते हुए इस वर्ष लाइनमैन की भर्ती में महिला उम्मीदवारों से भी आवेदन मांगे जा रहे हैं। वहां करीब 2700 पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई है, जिसमें महिलाओं को आरक्षण का लाभ भी मिलेगा। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले समय में छत्तीसगढ़ में भी लाइन वूमन के लिए रास्ता खुल सकता है। कभी नहीं मिला मौका छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद करीब 15 साल पहले लाइनमैन की भर्ती की गई थी। इसके बाद वर्ष 2021 में लगभग तीन हजार पदों के लिए विज्ञापन जारी किया गया था, लेकिन उसमें महिलाओं के लिए पद आरक्षित नहीं थे। यह भर्ती फिलहाल हाईकोर्ट में लंबित है। बिजली विभाग में करीब छह हजार लाइनमैन के पद स्वीकृत हैं, लेकिन वर्तमान में लगभग आधे पद ही भरे हुए हैं। कई जगहों पर प्लेसमेंट के माध्यम से काम चलाया जा रहा है। कई राज्यों में काम कर रहीं लाइन वूमन भले ही छत्तीसगढ़ में एक भी लाइन वूमन नहीं है, लेकिन देश के कई राज्यों में महिलाएं इस जिम्मेदारी को निभा रही हैं। महाराष्ट्र में तीन हजार से अधिक महिलाएं लाइन वूमन के रूप में कार्यरत हैं। इसके अलावा तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु में भी महिलाएं बिजली लाइनों के रखरखाव और मरम्मत का काम संभाल रही हैं।

भर्ती होगी तो महिलाओं को मिलेगा मौका

भर्ती होगी तो महिलाओं को मिलेगा मौका बिजली विभाग में लंबे समय से लाइनमैन के पदों पर भर्ती नहीं निकली है। जब भी भर्ती प्रक्रिया शुरू होगी, तो नियमों के अनुसार महिला उम्मीदवारों को भी मौका दिया जाएगा।

– भीम सिंह कंवर, एमडी, राज्य विद्युत वितरण कंपनी

महिलाओं के लिए ड्राइवरी का पद आरक्षित भी है, बावजूद इसके महिलाएं ड्राइवर बनने से कतरा रहीं

हर क्षेत्र में नारी की उड़ान, पर पुलिस ड्राइविंग में अब भी अनजान

महिलाएं आज हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। सेना में सेवाएं देने से लेकर फाइटर प्लेन उड़ाने तक महिलाएं अपनी क्षमता का लोहा मनवा चुकी हैं। पुलिस विभाग में भी आईपीएस से लेकर सिपाही तक कई पदों पर महिलाएं कार्यरत हैं, लेकिन ड्राइवर के पद पर अब तक उनकी भागीदारी शून्य है। हैरानी की बात यह है कि पुलिस भर्ती में महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत आरक्षण होने के बावजूद राज्य बनने के 25 साल बाद भी छत्तीसगढ़ पुलिस में एक भी महिला ड्राइवर नहीं है। पुलिस अफसरों के अनुसार ड्राइवर पद के लिए अब तक किसी महिला ने आवेदन ही नहीं किया है।

गिरीश केशरवानी ⏭ रायपुर

इस संबंध में जब हरिभूमि ने राज्य के उप मुख्यमंत्री व गृहमंत्री विजय शर्मा से सवाल किया, तो उन्होंने कहा कि महिलाओं को पुलिस विभाग में ड्राइवर बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इच्छुक महिलाओं को शासन स्तर पर प्रशिक्षण देने की व्यवस्था भी की जाएगी। वहीं अतिरिक्त परिवहन आयुक्त डी. रविशंकर ने कहा कि पुलिस विभाग में ड्राइवर बनने की इच्छुक महिलाओं को ड्राइविंग सिखाने में परिवहन विभाग हरसंभव सहयोग करेगा। यह होना चाहिए, हम हर संभव मदद करेंगे। दूसरे राज्यों में महिलाएं संभाल रहीं ड्राइविंग पुलिस विभाग में महिला ड्राइवर की शुरुआत केरल से हुई थी। वहां वर्ष 2014 से महिला पुलिसकर्मी ड्राइविंग का कार्य कर रही हैं। इसके बाद मुंबई, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, तमिलनाडु, कोयंबटूर और बिहार में भी महिला कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल पीसीआर वैन, एंबुलेंस और पुलिस गश्ती वाहन चला रही हैं। छत्तीसगढ़ के बाद बने तेलंगाना जैसे राज्य में भी 'विमेंस सेफ्टी विंग' के तहत महिलाओं को ड्राइवर के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

महिला पुलिसकर्मियों को करेंगे प्रोत्साहित

प्रोत्साहित किया जाएगा पुलिस विभाग में ड्राइविंग कार्य करने की इच्छुक महिला पुलिसकर्मियों को शासन स्तर पर प्रोत्साहित किया जाएगा। जो महिलाएं पुलिस विभाग में ड्राइवर बनना चाहती हैं, उन्हें प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाएगी।

– विजय शर्मा, गृहमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

महिलाओं को 30 प्रतिशत आरक्षण पुलिस विभाग में निकलने वाली भर्तियों में अनारक्षित से लेकर आरक्षित सभी पदों में महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है। ऐसे में ड्राइवर के पद पर कार्य करने की इच्छुक महिलाओं को भी उनकी योग्यता के अनुसार नौकरी मिल सकती है। इसके बावजूद पुलिस विभाग में ड्राइवर पद के लिए अब तक किसी महिला ने आवेदन नहीं किया है। यही कारण है कि राज्य गठन के 25 साल बाद भी छत्तीसगढ़ पुलिस में एक भी महिला ड्राइवर नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर में दिखा नारी शक्ति का साहस पिछले वर्ष मई 2025 में हुए ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय महिला सैन्य अधिकारी विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी ने अद्वितीय साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया था। इन दोनों अधिकारियों ने पाकिस्तान में आतंकी लॉन्च पैड को नष्ट कर 'नारी शक्ति' का लोहा पूरी दुनिया में मनवाया था।

महिलाओं की भर्ती होनी चाहिए

राज्य के पूर्व पुलिस महानिदेशक डीएम अवस्थी के अनुसार राज्य बनने के पहले से लेकर अब तक जितनी महिलाओं की पुलिस में भर्ती हुई है, उनमें एक भी महिला पुलिसकर्मी ने ड्राइवर बनने के लिए आवेदन नहीं किया है। उनके अनुसार पुलिस विभाग में ज्यादातर बड़े और भारी वाहन होते हैं, जो ट्रक जैसे होते हैं और फोर्स की गाड़ियां ज्यादा रहती हैं। संभवतः इसी कारण महिला पुलिसकर्मी ड्राइवर बनने से कतराती हैं। हालांकि महिला पुलिसकर्मियों को ड्राइवर पद पर भर्ती किया जाना चाहिए। वे पेट्रोलिंग के साथ टीआई और अन्य अधिकारियों की गाड़ियां भी चला सकती हैं।

-डीएम अवस्थी, सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक

परिवहन विभाग करेगा मदद

अतिरिक्त परिवहन आयुक्त डी. रविशंकर ने कहा कि पुलिस विभाग में ड्राइवर बनने की इच्छुक महिलाओं को ड्राइविंग सिखाने में परिवहन विभाग हरसंभव सहयोग करेगा। उन्होंने बताया कि महिलाओं को पुलिस वाहन चलाने के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग एंड ट्रैफिक रिसर्च (आईडीटीआर) में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जा सकती है।

-डी. रविशंकर, अतिरिक्त परिवहन आयुक्त

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

आनंद का सच्चा भाव®
18 कैरेट रेट* (75.00%) = ₹121097/-
22 कैरेट रेट* (91.60%) = ₹147900/-
24 कैरेट रेट* (99.99%) = ₹161447/-
सोने का भाव* प्रति 10 ग्राम | GST Extra
*Conditions apply
anand® Jewels
Pandri, Raipur

एक तस्वीर में तमाम दिग्गज...

आईएनएच-हरिभूमि के "जिला संवाद – 2026" कार्यक्रम में नवापारा-राजिम को जिला बनाने की मांग उठी। छत्तीसगढ़ में साय सरकार के दो वर्ष होने पर जिले के विकास, जनकल्याणकारी योजनाओं और जमीनी समस्याओं पर चर्चा के लिए राजिम स्थित प्रेम रतन मैरिज पैलेस में आयोजित इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और समाज के प्रबुद्ध लोगों ने खुलकर विचार रखे। एक तरफ जहां सत्तापक्ष के लोगों ने क्षेत्र में किए गए काम गिनाए तो विपक्ष के प्रतिनिधियों ने कमियां गिनाने की कोशिश की। कार्यक्रम का संचालन आईएनएच-हरिभूमि के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने किया।

साय सरकार के दो साल, विकास और जन सरोकार पर मंथन

गरियाबंद जिला संवाद : आईएनएच-हरिभूमि के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने जनप्रतिनिधियों से की चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राजिम

पहले सत्र में व्यवसायी गिरधारी अग्रवाल ने राजिम और नवापारा को मिलाकर नया जिला बनाने की मांग उठाई। वहीं सामाजिक कार्यकर्ता लाला साहू और जितेंद्र (राजू) सोनकर ने कहा कि पिछले दो वर्षों में राजिम क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण विकास कार्य हुए हैं, जिसकी सराहना की जानी चाहिए। इस दौरान आर.बी. शर्मा ने कहा कि जिले में शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी काफी सुधार की आवश्यकता है और इस दिशा में विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। दूसरे सत्र में कलेक्टर भगवानदास उइके और पुलिस अधीक्षक उपस्थित रहे।

महानदी में बैराज की योजना

तीसरे सत्र में राजिम विधायक रोहित साहू, अभनपुर विधायक इंद्रकुमार साहू, बिन्द्रानवागढ़ विधायक जनक ध्रुव और पूर्व विधायक अमितेश शुक्ल मौजूद रहे। डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने विधायक रोहित साहू से पूछा कि राजिम जिला कब बनेगा और महानदी की सफाई कब होगी? इस पर विधायक रोहित साहू ने ▶▶ शेष पेज 7 पर

कल्प-कुंभ से मिली पहचान

चौथे सत्र में रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल, भंडार गृह निगम अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद चंदूलाल साहू और पूर्व मंत्री धनेंद्र साहू शामिल हुए। डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने सांसद बृजमोहन अग्रवाल से पूछा कि वे मंत्री रहते समय अधिक खुश थे या अब सांसद बनने के बाद। ▶▶ शेष पेज 7 पर

छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा काम का दावा

धान खरीदी पर किए प्रश्न के उत्तर पर मंत्री दयालदास बघेल ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में किसान दर दर भटकते थे। बारदाना तक के लिए किसान परेशान रहते थे। घर पहुंचने से पहले किसानों के खाते में पैसा पहुंचने से किसानों के खाते में पैसे पहुंचाने का काम साय सरकार ने किया है। विधायक रोहित साहू ने छत्तीसगढ़ में लोक निर्माण विभाग द्वारा सर्वाधिक कार्य का दावा करते हुए सरकार का आभार जताया।

inh 24x7
छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश का सर्वाधिक लोकप्रिय चैनल देखें
TATA PLAY चैनल नं. 1155 | airtel चैनल नं. 366

मां के संघर्ष और पत्नी के सहयोग से यहां तक पहुंचा : सीएम साय

महिला दिवस विशेष

रायपुर की चार महिला पत्रकारों ने लिया मुख्यमंत्री का इंटरव्यू

विनय त्रिवेदी अवस्थी ▶▶| रायपुर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने महिलाओं की भूमिका, परिवार, राजनीति और छत्तीसगढ़ के विकास से जुड़े कई मुद्दों पर खुलकर बात की। रायपुर की चार महिला पत्रकारों ने मुख्यमंत्री से उनके जीवन, मातृशक्ति के योगदान, महिला सशक्तिकरण और बस्तर के विकास से जुड़े सवाल पूछे। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सफलता के पीछे उनकी माता और पत्नी का बड़ा योगदान रहा है और राज्य में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

सवाल : हर सफल व्यक्ति के पीछे एक महिला का हाथ होता है। आपकी सफलता के पीछे मातृशक्ति का कितना योगदान है?

सीएमः मेरी सफलता के पीछे मेरी माता जी का बहुत बड़ा योगदान है। जब मैं 10 साल का था, तभी मेरे पिता का निधन हो गया था। हम चार भाइयों में सबसे बड़े थे। पिता के जाने के बाद माता जी ने ही मां और पिता दोनों की जिम्मेदारी निभाई। उन्होंने हमें संघर्ष करना और संस्कारों के साथ जीवन जीना सिखाया। उन्हीं की मेहनत और तपस्या की वजह से आज मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया हूं।

सवाल : आदिवासी संस्कृति मातृसत्तात्मक मानी जाती है। माता जी के बाद आपकी पत्नी की क्या भूमिका रही?

सीएमः मैं 26 साल की उम्र में विधायक बना और उसके एक साल बाद मेरी शादी हुई। राजनीति में रहने के कारण परिवार को समय देना मुश्किल ▶▶ शेष पेज 7 पर

सवाल : छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण को लेकर आपकी क्या सोच है? क्या आज भी इसकी जरूरत है?

सीएमः मेरा राजनीतिक अनुभव लंबा रहा है। पहले महिलाएं घरों से कम निकलती थीं। राजनीतिक कार्यक्रमों में भी उनकी संख्या बहुत कम होती थी। लेकिन छत्तीसगढ़ बनने के बाद डॉ. रमन सिंह की सरकार में महिला स्वसहायता समूहों ▶▶ शेष पेज 7 पर

छत्तीसगढ़ में केवल एक महिला आर्थोपेडिक सर्जन, अब दशक बाद दिखी उम्मीद की किरण

12 साल पहले रायपुर मेडिकल कॉलेज से बनी थीं हड्डी रोग विशेषज्ञ, अभी जशपुर में दे रहीं सेवाएं, इस बार शहर के एक निजी मेडिकल कॉलेज में आर्थो विभाग में एक महिला डॉक्टर ने लिया पीजी में एडमिशन

विकाश शर्मा ▶▶| रायपुर

छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि पूरे देश में महिला आर्थोपेडिक सर्जनों की संख्या बेहद कम है। ऑल इंडिया आर्थोपेडिक एसोसिएशन में हड्डी रोग विशेषज्ञों की कुल संख्या 17 हजार से अधिक है, लेकिन इनमें महिला डॉक्टरों की संख्या मात्र 260 है। लेकिन छत्तीसगढ़...हमारे प्रदेश में केवल एक ही महिला आर्थोपेडिक सर्जन है।

प्रदेश में स्थिति और भी सीमित है। छत्तीसगढ़ में वर्तमान में केवल एक महिला आर्थोपेडिक सर्जन कार्यरत हैं। लगभग 12 साल पहले रायपुर के शासकीय मेडिकल कॉलेज से डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव ने अस्थि रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी पढ़ाई पूरी की थी और फिलहाल जशपुर जिले में अपनी सेवाएं दे रही हैं। अब एक दशक बाद इस क्षेत्र में एक नई उम्मीद जगी है। रायपुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज में इस वर्ष एक महिला डॉक्टर ने पीजी में आर्थोपेडिक विभाग में एडमिशन लिया है, जिससे आने वाले समय में प्रदेश में महिला आर्थोपेडिक सर्जनों की संख्या बढ़ने की संभावना जताई जा रही है।

कठिन और चुनौतीपूर्ण माना जाता है क्षेत्रःहड्डी रोग विशेषज्ञ बनने का रास्ता काफी चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस क्षेत्र में सर्जरी के दौरान ज्यादा शारीरिक मेहनत और तकनीकी कौशल की जरूरत होती है। खींचतान, भारी उपकरणों का इस्तेमाल और लंबे ऑपरेशन की वजह से कई महिला डॉक्टर इस विषय को चुनने से हिचकिचाती हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थोपेडिक सर्जनों की संख्या ज्यादा होने के बावजूद महिला डॉक्टरों की भागीदारी बेहद कम है। ▶▶ शेष पेज 7 पर

चुनौती स्वीकार कर बनाया रास्ता

डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव (जिला अस्पताल जशपुर) ने बताया कि पढ़ाई के दौरान उन्हें सर्जरी में विशेष रुचि थी। शुरुआत में उनके फैसले का विरोध भी हुआ, लेकिन उन्होंने ▶▶ शेष पेज 7 पर

दुष्कर्म पीड़िता को परिवार सहित किया 12 साल के लिए समाज से बहिष्कृत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| वाड्रफनगर

शर्मनाक खबर

एक तरफ पूरा देश आज महिलाओं के सम्मान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मना रहा है तो वहीं दूसरी ओर आज भी दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में समाज का ऐसा तबका मौजूद है जो कड़े कानून के बाद भी महिलाओं को प्रताड़ित करने का काम कर रहा है। विकासखंड के बसंतपुर थाना क्षेत्र से भी एक ऐसा ही हैरान करने वाला मामला सामने आया है जिसमें दुष्कर्म पीड़िता और उसके परिवार को दबंगों ने समाज से 12 साल से बहिष्कृत करने की सजा सुना दी।

इसके लिए बाकायदा दबंगों ने गांव में पंचायत बैठाई और पीड़ित महिला और उसके परिवार का सहयोग करने के बदले उन्हें ही सजा सुना दी। इस घटना के बाद अब महिला और उसके परिवार के सदस्यों ने एसडीओपी वाड्रफनगर से मामले की लिखित शिकायत करते हुए न्याय की गुहार लगाई है। अब मामला सामने आने के बाद जिला व पुलिस प्रशासन भी जांच के बाद कार्रवाई की बात कर रहा है।

यह है मामला

बताया जा रहा है कि बसंतपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत रहने वाली युवती को उसके ही गांव के एक युवक ने शादी का झांसा देकर दुष्कर्म किया। इस दौरान युवती सात माह की गर्भवती भी हो गई। जब युवती ने युवक से शादी की बात की तो वह मुकर गया। युवती ने मामले की शिकायत पुलिस से की जिसके बाद पिछले माह ही पुलिस ने दुष्कर्म के आरोप में आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। आरोपी को जेल भेजने के बाद गांव में दबंगों ने पंचायत बुलाई और पीड़िता पर ही दबाव बनाते हुए पीड़िता के परिवार को ही दोषी ठहराकर सामाजिक दंड का निर्णय ले लिया। आरोप है कि पंचायत में यह फैसला सुनाया कि पीड़िता और उसके पूरे परिवार को 12 साल तक गांव के समाज से बहिष्कृत रखा जाएगा।

- गांव में बुलाई गई पंचायत, किया जा रहा प्रताड़ित
- गर्भवती महिला और उसके परिवार को सुनाई गई 12 वर्षों की सजा

पंचायत का विवादित आदेश

दुष्कर्म पीड़िता गर्भवती महिला को समाज से बहिष्कृत करने की सजा सुनाकर भी गांव में दबंगों की प्रताड़ना खत्म नहीं हुई है। आरोप है कि पंचायत द्वारा पीड़िता के परिवार के सामने कुछ अपमानजनक शर्तें भी रखी गई हैं। बताया जा रहा है कि सरपंच ने कहा कि यदि पीड़िता का परिवार अपनी गलती स्वीकार करता है, तो उन्हें पूरे गांव के लोगों के पैर धोकर उस पानी से नहलाया जाएगा। इसके अलावा दंड के रूप में पूरे समाज को बकरा और शराब देने की भी बात कही गई है। इस तरह के फैसले को लेकर गांव में भी तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं।

जांच के बाद होगी कार्रवाई

मामला प्रशासन के संज्ञान में आया है। दोनों पक्षों को बुलाकर बैठाया जाएगा और पूरे मामले की जांच के बाद उचित निर्णय लिया जाएगा।

- नीरनिधि नन्देहा,
एसडीएम

एसडीओपी से शिकायत, न्याय की गुहार

इस घटना के बाद अब महिला और उसके परिवार के सदस्यों ने एसडीओपी वाड्रफनगर से मामले की लिखित शिकायत करते हुए न्याय की गुहार लगाई है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए और पंचायत द्वारा दिए गए इस फैसले की भी जांच कर दोषियों पर कार्रवाई की जाए।

गर्भवती को नहीं मिल रही सुविधाएं

बड़ी बात यह है कि महिला एवं बाल विकास विभाग के पास गर्भवती महिलाओं के लिए शासन की अनेकों योजनाएं संचालित हैं। आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं का पंजीयन कर समय समय पर उनकी एएनसी जांच कराई जाती है, पोषण आहार प्रदान किया जाता है लेकिन दुष्कर्म पीड़िता को इसका कोई लाभ नहीं मिल रहा है। गर्भवती महिला को टीकाकरण एवं पोषण हर दिए जाने के संबंध में वाड्रफनगर महिला बाल विकास अधिकारी विनय यादव ने बताया कि इस संबंध में हमारे विभाग में कोई जानकारी नहीं है।

समर्पित माओवादियों में बस्तर, बीजापुर के पीसीएम कमांडर एनड्री करितराम सहित दर्जनों शामिल

4.18 करोड़ का था ईनाम, 124 हथियार भी सौंपा

तेलगांना में मुख्यमंत्री के सामने 130 माओवादियों ने डाले हथियार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

तेलगांना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के सामने अलग-अलग कैडर के 130 माओवादियों ने आत्मसमर्पण कर शनिवार को मुख्यधारा में शामिल हो गए। समर्पण करने वाले नक्सलियों में 3 स्टेट कमेटी मेंबर, 1 रीजनल कमेटी मेंबर, 10 डीवीसीएम कैडर, 40 एरिया कमेटी मेंबर और 70 पार्टी मेंबर शामिल हैं। इन पर 4.18 करोड़ रुपए से अधिक का इनाम घोषित था। इन्होंने 124 अत्याधुनिक हथियार भी सौंप दिया है।

समर्पित माओवादियों में बस्तर के बीजापुर जिले के कमकानार निवासी पीएलजीए बटालियन नम्बर एक का पीसीएम कमाण्डर एनड्री करितराम उर्फ उईके कल्लू उर्फ प्रभाकर व कोरसा लक्कू उर्फ मुथैय्या उर्फ राजू समेत दर्जनों शामिल है। आत्मसर्पण करने वालों में बटालियन में सक्रिय 42, तेलंगाना स्टेट कमेटी में सक्रिय 30, दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी से जुड़े 32, सीआरसी के 16 और केंद्रीय समिति सदस्य देवजी की टीम से जुड़े 10 माओवादियों ने हिंसा का रास्ता छोड़ा है।

ये हथियार सौंपे

नक्सलियों ने 1 इंसास एलएमजी, 21 एके 47, 21 इंसास रायफल, 20 एसएलआर, 18 थ्रीनॉटथ्री रायफल, 1 नौ एमएम कारबाइन, 2 नाइन एमएम पिस्टल, 2 आठ एमएम बोल्ट-एक्शन रायफल, 18 कंट्री मेड गन और 2 बीजीएल के अलावा अलग-अलग कैलिबर के करीब 5205 जिंदा कारतूस भी सुरक्षा बलों को सौंपा है।

समर्पित नक्सलियों में यह शामिल

पीएलजीए बटालियन नम्बर एक का कमाण्डर एण्ड्री करितराम उर्फ प्रभाकर, कोरसा लक्कू, मड़कम जोगा, मड़कम कोसा, मोड़ियम लच्छू, माड़वी इंगा, पुनेम मैनी, कोवसी बुदराम, माड़वी पोज्जे, सोड़ी राजू, पुनेम देवा, पोटम कुमे, सोड़ी सुकलाल, उइके लखमे, पद्दाम इड़मा, कोवासी पीद्दो, पुनेम गुड्डु, मुचाकी जोगा, उइका चन्दू, लेकम सोमडू, सवलम पोज्जे, मुचाकी, इदुम, माड़वी आयता, पूनेम राजेश, सोयम छोटू, कुजांम सुकमती, सोड़ी सुक्की, मुचाकी मंगडू, मढ़कम जोगा, अवलम ललीता, तेलम पोज्जे, सोढ़ी लिंगा, कोरसा मोती, उइके भीमा, पोटम शिल्पा, वेजांम छोटू, ताती मल्ला, कलमू मासा, कुरसम राकेश, सवलम स्वरूपा, वेको सुक्की, अपका बुज्जी व अन्य शामिल हैं।

समर्पित नक्सलियों को 25-25 हजार अंतरिम राहत राशि

समर्पण करने वाले सभी 130 नक्सलियों को 25-25 हजार अंतरिम राहत राशि दी गई है। तेलगांना स्टेट की पुनर्वास व रीइंटीग्रेशन पॉलिसी के मुताबिक अन्य लाभ मिलेगा। स्टेट कमेटी मेंबर को 20 लाख, डीवीसीएम को 5 लाख , एसीएम कैडरों को 4 लाख तथा सभी पार्टी मेंबर को 1-1 लाख दिया जाएगा। हथियार के साथ समर्पण करने वाले नक्सलियों को अलग से राशि दी जाएगी। राज्य व केन्द्र की राहत और पुनर्वास पॉलिसी के मुताबिक सभी दस्तावेज पूरा होने के बाद समर्पित नक्सलियों के बैंक अकाउंट खुलने के बाद राशि उनके खातों में जमा किया जाएगा।

नेता कर रहा था अफीम की खेती, भाजपा ने किया निलंबित, भूपेश ने कहा-छग बना सूखे नशे का गढ़

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिलाई

जेवरा-पुलिस चौकी अंतर्गत ग्राम समोदा में अफीम की खेती ने राजनीतिक रंग ले लिया है। शनिवार को प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कांग्रेस के अन्य दिग्गज नेता मौके पर पहुंचे। भूपेश ने कहा कि अब यह स्पष्ट हो गया है कि छत्तीसगढ़ सूखे नशे का गढ़ बन चुका है। मामले में कलेक्टर - एसपी एक्शन में हैं। दूसरी तरफ भाजपा ने नेता को पार्टी से निलंबित कर दिया हैं। बता दें कि करीब 5 एकड़ 65 डिसमिल में अफीम की खेती की जा रही है। पुलिस ने मुख्यआरोपी भाजपा नेता विनायक ताम्रकार सहित 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। विनायक किसान मोर्चा से जुड़े रहे। राइस मिल प्रसंस्करण प्रकल्प किसान मोर्चा के प्रदेश संयोजक थे। घटना को लेकर कलेक्टर अभिजीत सिंह और एएसपी सुखनंमदन राठौर ने बताया कि ग्राम समोदा में खसरा 309, 310, 2 की जमीन मधुमति, प्रीतबाला के संयुक्त नाम से दर्ज है।

तस्करी में लिप्त नव्या

इस पूरे मामले को लेकर भूपेश बघेल ने कहा कि पहले तो बड़ा अचंभा हुआ लेकिन अब जब कड़ियाँ जुड़ रही हैं तो समझ आ रहा है कि खेल बड़ा है। कमल के फूल वाली पार्टी के नेता अपने खेत में अब अफ़ीम के पौधे और फूल उगा रहे हैं। अवैध नशीला पदार्थ हेरोइन का निर्माण भी इसी अफ़ीम के पौधे से होता है। इसी हेरोइन की सप्लायर नव्या भी थी। लेकिन नव्या अचानक से सरकार की सूची से बाहर कैसे हो गई? भाजपा के इस नेता का बड़े अधिकारियों और मंत्रियों के साथ उठना-बैठना है, जिस प्रकार से सरकार की सूची से एक बड़ी नशा तस्कर का नाम गायब होता है, इन सब में कड़ियाँ जुड़ तो रही हैं। उन्होंने कहा कि अफ़ीम की इस खेती में कौन-कौन मंत्री, अधिकारी शामिल हैं? नव्या का नाम सरकार की लिस्ट से किसने बाहर किया? नव्या कितने बार विदेश गई और किसके साथ विदेश गई? मुख्यमंत्री निवास में ताम्रकार कब-कब आया है? किन-किन नेताओं और अधिकारियों से संबंध हैं? होली के दिन सिर्फ राजधानी रायपुर में ही 5 मर्डर हुए हैं। इससे पता चलता है कि प्रदेश में कानून व्यवस्था कैसी है।

HMS घमंडी - दर्द का दुश्मन 25 दर्द की एक दवा
सिर दर्द, कमर दर्द, पसली दर्द या किसी भी अंग के आकस्मिक दर्द पर, दांत-दाढ़ के दर्द पर, चोट, मोच, सूजन पर, सर्दी- जुकाम पर, खांसी व श्वास (दमा) पर, न्यूमोनिया पर, गांठ (मांस की गांठ पड़ जाने पर), गिल्सी पर, टांसिल बढ़ने पर, कुलंग वात (सायटिका) पर, गठिया वात पर, चिकनगुनिया के दर्द पर, पेट फूलने पर, पेट दर्द व गैस पर, ताजे घाव का खून बंद करने के लिए, पके घाव के चारों और सूजन पर, खाज-खुजली पर, उठती हुई फुड़िया, बिस्कुटी आदि पर, खुर्रा पर, बिबाई फटने पर, बर्र काटने पर, बिच्छू काटने पर, थकावट पर असरकारक है।
गैस आउट सिरप
गैस, अरुचि, कब्ज़, अफरा, अपचन में तुरंत असरकारक नैचुरल आयुर्वेदिक है
सुगर के मरीज भी ले सकते हैं...
HMS देखकर खरीदें एक बार उपयोग कर देखें 94060-21769

पत्रकार हत्याकांड में राम रहीम बरी लेकिन जेल में ही रहेगा डेरा प्रमुख

एजेंसी ▶▶| चंडीगढ़

पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने शनिवार को सिरसा के पत्रकार रामचंद्र छत्रपति हत्याकांड में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को बरी कर दिया है। यह फैसला विशेष सीबीआई (सीबीआई) अदालत द्वारा राम रहीम को दोषी ठहराए जाने और उम्रकैद की सजा सुनाए जाने के करीब सात साल बाद आया है।

हाईकोर्ट ने 2019 की सजा को चुनौती देने वाली अपीलों पर सुनवाई करते हुए सुनाया। अदालत ने संदेह लाभ देते हुए राम रहीम की सजा को रद्द करते हुए उन्हें इस मामले के सभी आरोपों से मुक्त कर दिया है।

यह है मामला

अक्टूबर 2002 में सिरसा में अपना स्थानीय समाचार पत्र 'पूरा सच' चलाने वाले पत्रकार रामचंद्र छत्रपति को उनके घर के बाहर गोली मार दी गई थी। पत्रकार छत्रपति ने अपने अखबार में डेरा प्रमुख के खिलाफ लगे आरोपों से संबंधित खबरें प्रमुखता से छापी थीं।

तीन दोषियों की सजा बरकरार

हालांकि अन्य तीन दोषियों कुलदीप, निर्मल सिंह और किशन लाल की सजा बरकरार रखी गई है। राम रहीम फिलहाल रोहतक की सुनारिया जेल में दो साध्वियों के साथ दुष्कर्म मामले में 20 साल की सजा काट रहा है। यानी इस मामले में बरी होने के बावजूद, राम रहीम बलात्कार सहित अन्य मामलों में मिली सजा के कारण फिलहाल जेल में ही रहेगा।

भारत विरोधी नेता ओली की करारी हार बालेन शाह ने 50 हजार वोट से हराया

- नेपाल चुनाव: अपने ही गढ़ में पूर्व पीएम को मिले केवल 18 हजार मत

एजेंसी ▶▶| काठमांडू

नेपाल के आम चुनाव परिणामों में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार बालेन शाह ने बड़ी जीत हासिल कर ली है। झापा जिले के निर्वाचन क्षेत्र–5 से बालेन शाह को विजयी घोषित किया गया है। खासबात ये है कि इस सीट से उन्होंने नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री और प्रमुख नेता केपी शर्मा ओली को करीब 50 हजार मतों के अंतर से हराया है। अंतिम मत परिणाम के अनुसार बालेन शाह को कुल 68,348 वोट मिले, जबकि केपी शर्मा ओली को इस निर्वाचन क्षेत्र में लगभग 18 हजार वोट प्राप्त हुए। इस प्रकार दोनों उम्मीदवारों के बीच लगभग 50 हजार मतों का बड़ा अंतर रहा और बालेन शाह ने शानदार जीत दर्ज की है। ओली ने झापा-5 सीट से 2017 और 2022 का चुनाव जीता था।

58 फीसदी मतदान : पिछले साल सितंबर में हुए हिंसक प्रदर्शनों के बाद 5 मार्च को हुए चुनाव में 58% लोगों ने वोट डाले। वोटों की गिनती पूरी होने में 3 से 4 दिन लगने की उम्मीद है। चुनाव आयोग ने कहा है कि 9 मार्च तक काउंटिंग पूरी करने की कोशिश की जाएगी।

सबसे बड़ी पार्टी बनी आरएसपी : 165 सीटों पर शुरुआती रुझान आ चुके हैं। रैपर और काठमांडू के मेयर रहे बालेन शाह की राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। आरएसपी ने अब तक 46 सीटें जीत ली हैं, जबकि 73 सीटों पर आगे चल रही है। यह पार्टी सिर्फ 4 साल पहले एक पत्रकार रहे रबि लामिछाने ने बनाई थी।

हरिभूमि HEALTH CARE
छत्तीसगढ़ के मेडिकल विशेषज्ञ

डायबिटिज मधुमेह का सर्वोत्तम इलाज - अब दिल्ली, मुंबई, चेन्नई क्यू जाना
मधुमीत डायबिटिज हॉस्पिटल | डॉ राका शिवहरे MBBS, MD FNIC FIPA | भर्ती सुविधा उपलब्ध
Ecg, Echo, Tmt, Doppler, Carotid, Doppler, Insulin, Pump, Cgms, Homa IR
शिव मंदिर चौक, अवंति विहार, रायपुर, मो. 8269885003, मो. 7389485756

डॉ. राठौर चेस्ट क्लिनिक
दमा, टी.बी., छाती एवं एलर्जी रोग विशेषज्ञ
सुविधाएं : पी.एफ.टी., ब्रांकोस्कोपी, स्लीप स्टडी
स्पेशलिस्ट : खांसी, श्वांस, दमा, टी.बी., निमोनिया, एलर्जी फेफड़े का कैंसर, खर्राटे व नींद
समय दोपहर 2.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक (रविवार अवकाश)
गरचा कॉम्प्लेक्स, कचहरी चौक, जेल रोड़, रायपुर मो. 7999450384, 7042974029

Skin Care डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल
चर्म एवं गुप्त रोग विशेषज्ञ
सुविधाएं • लेजर हेयर रिमूवल • हाइड्रोफेशियल • कार्बन फेशियल • केमिकल पीलिंग • रेडियोफ्रिक्वेंसी • एलर्जी टेस्ट
रविवार अवकाश
क्लीनिक : छत्तीसगढ़ कॉलेज के सामने, सिविल लाईन, बैरनबाजार, रायपुर (छ.ग.) समय : सुबह 10:00 से 2:00 बजे तक
सिटी कोतवाली के पास, छोटापारा रोड, रायपुर (छ.ग.) शाम 5:00 से 8:30 बजे तक, फोन : 0771-2546760, 9300323131

डायबिटीज / शुगर संबंधी सभी समस्याएं, थायराइड, मोटापा, प्रेग्नेंसी डायबिटिस, फुलबॉडी चेकअप, डायबिटिक सेक्स रोग, नसों की सुन्नता।
डायबिटिक क्लीनिक
Dr. Satyajeet Sahu Advance Dibetes & Thyroid care centre
Diabetic Clinic
Appointments No. 7724035770 9329004557 9303724304
17, गुरूकुल कॉम्पलेक्स, कालीबाड़ी रायपुर, समय - सुबह 10 से 5, शाम 6 से रात 9 बजे तक

सुधा सूरज फर्टिलिटी केयर
डॉ. सूरज कुमार चौधरी MD (Physician, Pathology)
डॉ.सुधा अग्रवाल चौधरी MBBS, MS (OBG) FRM स्त्री रोग विशेषज्ञ, इंफर्टिलिटी कंसल्टेंट
• पुरुष और महिला बांझपन परीक्षण • आईवीएफ, आईयूआई, पीसीओएस, सोनोग्राफी, • सभी पैथोलॉजी परीक्षण (रक्त, मूत्र, मल और वीर्य विश्लेषण) • गर्भवती महिला एवं गर्भाशय की सोनोग्राफी (टीवीएस, डॉप्लर 3डी, 4डी)
C-81, VIP Estate, Opposite Ashoka Ratan Gate No.2, Shankar Nagar, Raipur, Mob. 63549 65797, 95120 44488

Vrinda Multispeciality Hospital Chest & Allergy Centre
वृन्दा चेस्ट एंड एलर्जी मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल
छाती, एजलीं एवं सांस से जुड़ी सभी बीमारियों का आधुनिक एवं विशेषज्ञ उपचार एक ही स्थान पर
50 बिस्तरों का सर्वसुविधायुक्त हॉस्पिटल 24 घंटे आपात चिकित्सा
अवंति बाई चौक, लोधीपारा, पंडरी रोड, कांपा, रायपुर (छ.ग.) संपर्क : 8962566221, 07714916125, 7223065604

कान, नाक, गला, एलर्जी एवं वर्टिगो (चक्कर) कोअब्लेशन एवं लेजर सर्जरी हॉस्पिटल
डॉ. जाऊलकर ई.एन.टी. हॉस्पिटल
सेन्ट्रल एवेन्यू चौबे कालोनी प्रगति कॉलेज रायपुर (छ.ग.) (ISO 9001-2000 Certified)
फोन: 0771-4044551 समय: सुबह 9.30 से 4.30 तक

निवेद चेस्ट & आई केयर
डॉ. देवी ज्योति दास M.D. DNB PULMONARY MEDICINE (DELHI) (Gold medalist)
उपलब्ध सुविधायें: एलर्जी, अस्थमा, निमोनिया, फिजीयोथेरेपी, धूम्रपान नियंत्रण स्लिप स्टडी और आईसीयू केयर
आई केयर सुविधायें: मोतियाबिंद, काला मोतिया, डायबिटिक रेटिनोपैथी और मेडिकल रेटिना
डॉ. नमित नंदे MS Ophthalmology
24, Central Avenue, Ground Floor, Below SBI Personal Banking Branch, Choubey Colony, Raipur (C.G.), Mob.: 0711-4337888,7697752001

अग्रवाल हॉस्पिटल (मल्टीस्पेशियेलिटी सेन्टर)
उपलब्ध विशेषताएं • लेप्रोस्कोपिक एवं जनरल सर्जरी • जनरल मेडीसीन • ऑर्थोपेडिक्स • जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी • ऑन्कोलॉजी (सर्जिकल) • गायनेकोलॉजी
लेप्रोस्कोपिक सर्जरी में सभी प्रकार की हार्निया, अपेन्डिक्स, पित की थैली, बच्चादानी आदि से संबंधित ऑपरेशन सभी तरह की कैंसर सर्जरी एवं कीमोथेरेपी की सुविधा उपलब्ध OPD समय - शाम 4 से 6 बजे
जी.ई.रोड, आर.के.सी. कॉम्पलेक्स के सामने, रायपुर (छ.ग. 492001)
फोन: +91-0771-4088107/108, ईमरजेंसी नंबर 9109187755, डॉ. सजन अग्रवाल - 9329101037

सभी प्रकार के स्किन एवं बाल संबंधी समस्याओं का निदान, मुंहासे, झांई, झुर्रियों का इलाज, अनचाहे बालों हेतु लेजर ट्रीटमेंट
सिंघानिया स्किन केयर 36, प्रथम तल, गुरूकुल कॉम्प्लेक्स कालीबाड़ी, रायपुर 0771-4053311 Email:bsinghania111@yahoo.co.in
Makeover Skin, Hair & Aesthetic Cente रानी सती मंदिर के पास, केनाल लिंकिंग रोड, रवींनगर, राजातालाब, रायपुर
मो. 94252-14479 0771-4020411 www.makeoverraipur.com त्वचा व बाल संबंधी समस्याओं का इलाज

अष्टविनायक हॉस्पिटल बच्चों एवं महिलाओं का अस्पताल
• प्रसूति • नवजात • शिशु रोग • बांझपन • सोनोग्राफी • आयुष्मान कार्ड • बच्चों एवं बड़ों के आपरेशन • अनुभवी डॉक्टर्स प्रतिदिन
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.), 9826182221 9301744425

मोतियाबिंद आयुष्मान कार्ड सुविधा
SBH साईं बाबा नेत्र हॉस्पिटल
छोटी लाईन ब्रिज के पास, फाफाडीह, रायपुर 9644099925

डॉ. मनोज अग्रवाला एमडी (सीएमसी वेल्लोर) (गोल्ड मेडलिस्ट)
स्किन क्लिनिक
सेवाएं • मुहासें • सोरासिस • स्किन एलर्जी • पिगमेंटेशन • विटिलियो / ल्यूकोडरमा • पीआरपी थेरेपी • एलोपेसिया • अर्टीकेरिया • फंगल इंफेक्शन • टेली कंसल्टेशन • लेजर थेरेपी
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छत्तीसगढ़) 0771-4003777, 77778-76292

पाइल्स क्षारकर्मा (लेप विधि) विशेषज्ञ (ना कोई सुई, ना भर्ती 2 घंटे के बाद डिस्चार्ज)
राज-राजेश्वरी आयुर्वेदिक वेलनेस सेंटर
25 वर्षों का अनुभव
13000 से ऊपर सफल चिकित्सा
फाफाडीह / पंडरी, रायपुर, मो. 9039050422

वैरिकोज वेन्स & VASCULAR clinic
वैरिकोज वेन्स & वैस्कुलर क्लिनिक
डॉ. प्रशांत पोटे MD DNB FVIR Interventional Radiologist
• वैरिकोज वेन्स • पैर का अल्सर • डीवीटी • फाइब्रॉइड • थायरॉइड/गॉइटर
पता- 309, लालगंगा बिजनेस पार्क, पचपेड़ी नाका, रायपुर, मोबाईल : 7400628099

विज्ञापन हेतु संपर्क करें:-
7987119756, 9303508130

नक्सल गतिविधियों की चुनौती के बीच कानून व्यवस्था बनाने में निभाई अहम भूमिका

दस साल बस्तर की धरती पर साहस सेवा और समर्पण की मिसाल

बस्तर में जब नक्सली गतिविधियां चरम पर थी तो बहुत से पुलिस अफसर भी वहां पदस्थापना से घबराते थे। ऐसे दौर में छत्तीसगढ़ की प्रथम डीएसपी निवेदिता पॉल ने सारी चुनौतियों को स्वीकारते हुए करीब 10 साल साहस के साथ अपनी सेवाएं दी। नक्सल गतिविधियों की चुनौती के बीच कानून व्यवस्था बनाने में अहम भूमिका निभाई। दुर्गम इलाकों में कई-कई किलोमीटर पैदल चलते हुए अभियानों को अंजाम दिया। छत्तीसगढ़ की प्रथम डीएसपी निवेदिता पॉल बस्तर की धरती पर साहस, सेवा और समर्पण की मिसाल हैं। बस्तर में पोस्टिंग किसी चुनौती से कम नहीं है। घने जंगल, दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियाँ और नक्सल गतिविधियों की चुनौती,इन सबके बीच कानून-व्यवस्था बनाए रखना किसी भी पुलिस अधिकारी के लिए आसान नहीं होता। ऐसी कठिन परिस्थितियों में उप पुलिस अधीक्षक निवेदिता पॉल ने अपने सेवा काल के महत्वपूर्ण दस वर्ष बस्तर क्षेत्र को समर्पित किए। कार्यकाल के दौरान कांकेर, कोंडागांव और जगदलपुर जैसे जिलों में उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ रहीं।

रायगढ़ से स्वतंत्र महंत की रिपोर्ट

सीमित संसाधनों में किया काम

निवेदिता पॉल ने बताया कि बस्तर में अपने कार्यकाल के दौरान अनेक नक्सल विरोधी अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने घने जंगलों, पहाड़ी इलाकों और सीमित संसाधनों के बावजूद अपनी टीम के साथ मिलकर कई महत्वपूर्ण ऑपरेशनों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इन अभियानों में सर्च ऑपरेशन, एरिया डॉमिनेशन, संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त तथा सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना शामिल रहा। कई बार सुरक्षा बलों को दुर्गम क्षेत्रों में कई किलोमीटर पैदल चलकर अभियान संचालित करने पड़ते थे। ऐसे कठिन अभियानों में उनका नेतृत्व, साहस और दृढ़ संकल्प पुलिस बल के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

गर्भावस्था के दौरान नक्सल विरोधीअभियानों में लिया भाग

निवेदिता की सेवाकाल का मार्मिक पहलू यह भी है कि बस्तर में पदस्थापना के दौरान गर्भावस्था में भी कई नक्सल विरोधी अभियानों में भाग लेकर उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। महिलाओं का यह दौर जीवन का सबसे कठिन दौर होता है। यह केवल साहस ही नहीं, बल्कि सेवा के प्रति उनके गहरे समर्पण को भी दर्शाता है। पुत्री समायरा के जन्म के बाद भी उन्होंने बिना रुके लगातार अभियानों और फील्ड ड्यूटी में सक्रिय भागीदारी जारी रखी। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कई स्थानों पर नक्सलियों द्वारा बनाए गए स्मारक और प्रतीक चिन्ह भय और हिंसा के प्रतीक बन चुके थे। निवेदिता ने ऐसे कई नक्सल स्मारकों को ध्वस्त करने की कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नक्सलियों के आत्मसमर्पण में निभाई भूमिका

नक्सल विरोधी अभियानों के साथ-साथ उन्होंने नक्सलियों के आत्मसमर्पण को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य किया। संवाद और पुनर्वास की योजनाओं के माध्यम से कई युवाओं और भटके हुए लोगों को मुख्यधारा में लौटने के लिए प्रेरित किया गया। निवेदिता पॉल ने सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक विकास और जागरुकता को भी समान महत्व दिया। बस्तर के दूरस्थ क्षेत्रों में सड़क, शिक्षा और अन्य बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए प्रशासन और स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर उन्होंने कार्य किया। उन्होंने बस्तर के अंदरूनी क्षेत्रों में स्थित स्कूलों तक पहुँचकर बच्चों से संवाद किया, उन्हें पढ़ाया और शिक्षा के महत्व के बारे में प्रेरित किया।

मिला सम्मान वर्तमान में निवेदिता पॉल सेनानी, छठवीं वाहिनी, रायगढ़ (उर्दना) में पदस्थ हैं। इससे पूर्व वे दुर्ग, कवर्धा और कांकेर में उप पुलिस अधीक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुकी हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कोंडागांव, कोरिया, बलौदा बाजार, धमतरी, बस्तर और सारंगढ़ जिलों में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के रूप में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। उनकी उत्कृष्ट और साहसिक सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार द्वारा उन्हें सराहनीय सेवा के लिए भारतीय राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें वर्ष 2026 में गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के अवसर पर माननीय भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनके साहस, कर्तव्यनिष्ठा और संवेदनशील क्षेत्रों में किए गए उल्लेखनीय कार्यों की राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता है। निवेदिता पॉल की सेवा यात्रा यह सिद्ध करती है कि दृढ़ संकल्प, साहस और समाज के प्रति समर्पण के साथ कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

कालेज में एनसीसी लेने के दौरान देश सेवा का सपना और मजबूत हुआ

गांव से निकल सेना में लेफ्टिनेंट बनीं सुप्रिया इंजीनियरिंग और सैटेलाइट को करेंगी कंट्रोल

मेहनत, लगन और सपने बड़े हों, तो गांव से निकलकर भी देश सेवा करते हुए पहचान बनाई जा सकती है। इसे साबित किया है, मुंगेली जिले के ग्राम टेढ़ाधौरा की रहने वाली सुप्रिया ठाकुर ने। सुप्रिया का चयन भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद के लिए हुआ है। सुप्रिया का चयन एसएससी (महिला) टेक -66 एंट्री के माध्यम से हुआ है। उन्हें 17 एसएसबी बोर्ड, बेंगलुरु से रिकमेंडेशन मिला है।

बिलासपुर से विकास चौबे की रिपोर्ट

मेहनत, लगन और सपने बड़े हों, तो गांव से निकलकर भी देश सेवा करते हुए पहचान बनाई जा सकती है। इसे साबित किया है, मुंगेली जिले के ग्राम टेढ़ाधौरा की रहने वाली सुप्रिया ठाकुर ने। सुप्रिया का चयन भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद के लिए हुआ है। सुप्रिया का चयन एसएससी (महिला) टेक -66 एंट्री के माध्यम से हुआ है। उन्हें 17 एसएसबी बोर्ड, बेंगलुरु से रिकमेंडेशन मिला है। खास बात यह है कि सुप्रिया ने इलेक्ट्रॉनिक्स वैकेंसी में ऑल इंडिया रैंक-4 हासिल कर देशभर में शानदार प्रदर्शन किया है। सुप्रिया ने बताया कि उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट जोसेफ कॉन्वेंट हायर सेकेंड्री स्कूल, तारबहार, बिलासपुर से पूरी की। इसके बाद उन्होंने चौकसे इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेलीकम्युनिकेशन में इंजीनियरिंग किया। इस दौरान उन्होंने एनसीसी भी लिया था जिसमें 'सी' सर्टिफिकेट भी प्राप्त कर चुकी हैं। इसी

दौरान उन्हें भारतीय सेना का एक्सपोजर मिला, जिससे उनके भीतर देशसेवा का सपना और मजबूत हुआ। सुप्रिया ने बताया कि बचपन से ही उनके मन में सेना में ऑफिसर बनकर देश की सेवा करने की इच्छा थी। इस सफलता के पीछे उन्होंने अपने माता-पिता और भाई का बड़ा योगदान माना है। सुप्रिया के पिता वैदेही शरण सिंह श्रीनेत और माता संतोषी सिंह श्रीनेत हैं।

गया में होगी 11 महीने की ट्रेनिंग

सुप्रिया की इस उपलब्धि पर पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है। वहीं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने भी सुप्रिया ठाकुर को भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद पर चयनित होने पर शुभकामनाएं दी हैं। सुप्रिया ने बताया कि 25 मार्च से गया (बिहार) में उनकी 11 महीने की ट्रेनिंग शुरू होगी। ध्यान रहे कि गया में आफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी है। इस ट्रेनिंग में देश भर की चयनित 29 महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करेंगी। इसके बाद इन्हें स्ट्रीम अलाटमेंट के साथ पोस्टिंग मिलेगी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को विश्वभर में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, समाज में समानता का संदेश देना और महिलाओं के योगदान को सम्मान देना है। मौजूदा समय में महिलाएं शिक्षा, राजनीति, खेल, विज्ञान, प्रशासन और व्यापार सहित लगभग हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। इसके बावजूद समाज में कई स्थानों पर महिलाओं को अभी भी बराबरी का दर्जा नहीं मिल पाया है। देश में महिलाओं ने अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर उच्च पदों तक पहुंचकर देश का नाम रोशन किया है। यह बात सही है कि स्त्री शक्ति ने देश-दुनिया में समय-समय पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। लेकिन महिलाओं को कमतर होने का अहसास दिलाने की पुरुष वर्ग की मानसिकता आज भी स्त्रियों को उनके हकों से वंचित कर रही है। नारी सशक्तीकरण की बातें कागजी योजनाओं में काफी अच्छी लगती हैं पर धरातल पर अभी काफी कुछ होना बाकी है। खास तौर से आधी आबादी को लोकतांत्रिक व्यवस्था में बराबरी का हक देने को लेकर। इसी का विश्लेषण करता आजकल का यह खास अंक...

आधी आबादी को अवसर से बदलेगी फ़िज़ा

विश्लेषण
प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
केंद्रीय विवि पंजाब में चेयर प्रोफेसर

सामाजिक स्तर पर विश्व में महिलाओं के सशक्तीकरण की बातें हो रही हैं। विश्व श्रम संगठन-आईएलओ का खुद यह मानना रहा है कि सामाजिक न्याय का मूल आधार सम्मानजनक रोजगार है। हर व्यक्ति को, हर जगह सम्मानजनक रोजगार मिलना चाहिए। आज सम्मानजनक रोजगार की जगह श्रम के बदले श्रम मूल्य तो मिल नहीं रहे हैं। हां, युद्धरत देशों में जीवन से हाथ धोने ज़रूर पड़ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर हुए अध्ययन बताते हैं कि महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों द्वारा अर्जित प्रत्येक डॉलर के लिए 51 सेंट कमाती हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस से ठीक दो दिन पहले महिला अधिकार पैरोकार, शिक्षाविद और लेखिका डॉक्टर हंसा मेहता की स्मृति में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में यूएन महासभा की अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक का व्याख्यान हुआ है। ऐनालेना बेयरबॉक ने कहा कि डॉक्टर हंसा मेहता द्वारा सुझाए गए सिद्धांत, मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा के पारित होने के 77 वर्ष और यूएन चार्टर के पारित होने के 80 वर्ष बाद भी बहुपक्षवाद आधारित कामकाज को दिशा दिखा रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हंसा मेहता के जीवन से तीन अहम सबक़ हम ले सकते हैं। पहला, यह बहुत ज़रूरी है कि अपने सिद्धान्तों के पक्ष में मज़बूती से खड़ा हुआ जाए। दूसरा, समानता की प्राप्ति के लिए प्रयास, सम्पूर्ण समाज के लिए निरन्तर जारी रहते हैं, और केवल आधी आबादी के लिए नहीं। तीसरा, यदि कोई एक व्यक्ति ही इतने बड़े बदलावों को आकार दे सकता है तो यह कल्पना कीजिए कि यदि ऐसे अवसर पूरी मानवता को उपलब्ध कराए जाएं, तो कितनी गहराई तक समाज में परिवर्तन लाना सम्भव है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हंसा मेहता के लिए की गई सकारात्मक टिप्पणी बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह टिप्पणी उस समय आई है, जब दुनिया में महिलाएं प्रत्येक दिन संघर्ष कर रही हैं।

सम्मानजनक रोजगार जरूरी

सामाजिक स्तर पर विश्व में महिलाओं के सशक्तीकरण की बातें हो रही हैं। विश्व श्रम संगठन-आईएलओ का खुद यह मानना रहा है कि सामाजिक न्याय का मूल आधार सम्मानजनक रोजगार है। हर व्यक्ति को, हर जगह सम्मानजनक रोजगार मिलना चाहिए। आज सम्मानजनक रोजगार की जगह श्रम के बदले श्रम मूल्य तो मिल नहीं रहे हैं। हां, युद्धरत देशों में जीवन से हाथ धोने ज़रूर पड़ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर हुए अध्ययन बताते हैं कि महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों द्वारा अर्जित प्रत्येक डॉलर के लिए 51 सेंट कमाती हैं। असमान वेतन, अवसरों तक सीमित पहुंच और ऐसी अपेक्षाए जो महिलाओं की महत्वाकांक्षाओं व नेतृत्व को रोकती हैं, वे सामाजिक न्याय में बाधा हैं। इसी वर्ष विश्व उद्यमी और निवेश मंच में मनामा घोषणापत्र दृष्टिकोण सामने आया था। इसमें महिला उद्यमियों को, आर्थिक बदलाव की शिल्पकार के रूप में मान्यता दिए जाने की वकालत हुई और यह कहा गया कि महिलाओं को आर्थिक बदलाव की केवल लाभार्थी समझा जाए अपितु उन्हें इसके लिए सशक्त हस्तक्षेपकर्ता माना जाए। कुछ समय पहले ही तो यूएनडीपी ने कहा था कि लैंगिक समानता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद, वैश्विक स्तर पर महिलाएं औसतन पुरुषों से 20% कम कमाती हैं। हम समान मूल्य के काम के लिए समान वेतन की मांग करते हैं।

दुनिया भर में महिलाओं के लिए वित्त, प्रौद्योगिक और उच्च कौशलयुक्त भूमिकाओं के क्षेत्र में संकल्प को दोहराना अब ज़रूरी हो गया है, जिससे टिकाऊ विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण करके लक्ष्य को हासिल किया जाए। सामाजिक न्याय की यह एक सशक्त कोशिश हो सकती है, वरना संघर्ष की जिस आंच में महिलाओं के ऊपर खतरे मंडरा रहे हैं, वे बहुत ही कठिन दौर में हमें ले जाने वाले हैं। दुनिया में बदलाव के बीच परंपराएं, संस्कृतियों और सभ्यताओं का संघर्ष चल रहा है। महिलाएं इसमें प्रायः पिस जाती हैं और लक्ष्य से दूर चली जाती हैं।

इस सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुटेरेश ने यह चिंता जताई थी कि यह असमानता तकनीकी क्षेत्र में और अधिक गहरी है। डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े कार्यों में महिलाएं केवल 26 प्रतिशत हैं, जबकि 'क्लाउड कम्प्यूटिंग' में उनकी भागेदारी महज़ 12 प्रतिशत है। अब तो हम इन्हीं तकनीकी सभ्यता में जीने के लिए तैयार हैं तो महिलाओं व लड़कियों को खासकर किशोर महिलाओं के भीतर स्वप्न जगाना नितांत आवश्यक है। विज्ञान क्षेत्र में महिलाओं व लड़कियों के इनोवेशन भी हो रहे हैं और समावेशन भी। महिलाओं व लड़कियों ने कई बड़े वैज्ञानिक उपलब्धियों को अर्जित कर चौंकाया है। किन्तु साथ ही डिजिटल कौशल में लैंगिक अंतर कैसे कम किया जा सकता है। महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों को कैसे प्रोत्साहन मिल सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानि एआई संबंधी नीतियों को कैसे अधिक संवेदनशील बनाया जा सकता है, इस पर रणनीतिकार विचार कर रहे हैं।

महिला अधिकारों की संवेदना

भारत में महिलाओं के बारे में भ्रामक बातें अगर न हो तो यहाँ की स्त्रियां काफी आगे बढ़ती हुई दिख रही हैं। देश के प्रथम महिला राष्ट्रपति के रूप में प्रतिभा देवीसिंह पाटील का नाम सुनहरे अक्षरों में अंकित है तो आज द्रौपदी मुर्मू जो कि आदिवासी समाज से आती हैं, भारत की राष्ट्रपति के रूप में कार्य कर रही हैं। भारतीय वैज्ञानिक महिलाओं का भी अपना स्थान है। चंद्रयान 2 के कुशलतापूर्वक सफलता में महिलाएं रही हैं।

भारत में असंख्य सफलता की कहानियां हैं। ये कहानियां हैं महिलाओं की, लड़कियों की, किशोरियों की जो न केवल चेंजमेकर के रूप में सामने आ रही हैं, बल्कि वे भारत की तस्वीर बदलने की भूमिका में हैं। भारत सरकार ने बहुत पहले बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा दिया, उससे भी बदलाव आया है। एक सच यह भी है कि उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाली भी लड़कियां अभी अपने अधिकारों को ठीक-ठीक नहीं जानतीं। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग, नई दिल्ली के लिए बतौर स्पेशल मॉनिटर, मानवाधिकार शिक्षा एवं लैंगिक समानता पर कार्य करते हुए विभिन्न संस्थाओं में जांच के दौरान ऐसा महसूस हुआ कि भारत में लैंगिक समानता के लिए अभी व्यापक जागरूकता ज़रूरी है।

गरिमा सुरक्षित करना शेष

विश्व भर में स्त्रियों को सशक्त बनाने की मुहीम चल रही है, लेकिन संकटों से गुजर रहे देशों के भी स्त्रियों के जीने के हक से लेकर गरिमा भी सुरक्षित करने का कार्य अभी शेष है। ऐनालेना संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष मात्र 44 वर्ष की अवस्था में बन गयीं। हम अगर न्यायपूर्ण सोच के साथ स्त्रियों को अवसर दें और स्त्रियां मेहनत, निष्ठा व ज़ज्बे के साथ आगे बढ़ें तो बहुत सी संभावनाएं दिख रही हैं। केवल अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर उनके लिए आयोजन करने से औपचारिकताएं पूरी होती हैं, लक्ष्य नहीं हासिल होते।

लैंगिक भेदभाव महिलाओं के विकास में बड़ा दुश्मन

मुद्दा
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ पत्रकार

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को मनाया जाता है। इस वर्ष 2026 में दान से लाभ थीम रखी गई है। इसका अर्थ है कि जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो उससे समाज के साथ-साथ हमें भी लाभ मिलता है और लैंगिक समानता को मजबूती मिलती है। यह दिन महिलाओं की उपलब्धियों, संघर्षों और उनके अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए समर्पित है। यह दिवस रश्मि होता जा रहा है। इस दिन हम महिला सुरक्षा, जागरूकता और सशक्तिकरण की जोर-शोर से चर्चा करते हैं और समारोह का आयोजन कर उन्हें सम्मानित करते हैं। देश और दुनिया को बताते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में हमने महिला प्रगति और विकास का डंका बजाया है। भारत में नारी पूजने का भी गर्व के साथ स्मरण करते हैं। मगर आज के दिन हमें इस दिखावे और वास्तविकता को समझना होगा। महिला दिवस पर आधी आबादी की वास्तविकता और धरातलीय चुनौतियों को समझने की जरूरत है। मुट्ठी भर महिलाओं के आगे बढ़ने से सम्पूर्ण महिला समाज का उत्थान नहीं होगा। महिला समानता और सुरक्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है।

यूनीसेफ की रिपोर्ट यह बताती है कि महिलाएं नागरिक प्रशासन में भागीदारी निभाने में सक्षम हैं। यही नहीं, महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बगैर किसी भी क्षेत्र में काम ठीक से और पूर्णता के साथ संपादित नहीं हो सकता।

आजादी से पूर्व हमारा देश अनेक रूढ़ियों से ग्रसित था। बेटी को कोख में मारने, सती प्रथा जैसी कुप्रथा समाज में प्रचलित थी। नारी को पढ़ाना तक पाप समझा जाता था। नारी घूंघट में रहे, ऐसा हमारा सोचना और विचारना था। अंग्रेजों के आने के बाद हालांकि नारी स्वतंत्रता और समानता की बातें सुनने और पढ़ने को मिली। धीरे-धीरे समाज और वातावरण में आये बदलाव ने महिला स्वतंत्रता को समझा और उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों की बातें होने लगी। नारी को चूल्हे-चौकी से बाहर लाया गया।

आजादी के 77 वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति गौर करने के लायक है। आये दिन समाचार पत्रों में लड़कियों के साथ होने वाली छेड़छाड़ और बलात्कार जैसी खबरों को पढ़ा जा सकता है। स्वतंत्रता के 7 दशक बाद भी ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं को दोयम दर्जे की मार से जूझना पड़ रहा है। यूनीसेफ की रिपोर्ट यह बाताती है कि महिलाएं नागरिक प्रशासन में भागीदारी निभाने में सक्षम हैं। यही नहीं, महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बगैर किसी भी क्षेत्र में काम ठीक से और पूर्णता के साथ संपादित नहीं हो सकता। एक स्वयंसेवी संस्था की रिपोर्ट में जाहिर किया गया है कि महिला की दुश्मन महिला ही है। वह भूल जाती है कि वह भी महिला है। इसलिए सबसे पहले महिला ही अपनी सोच को बदले और अपनी संतान को आगे बढ़ाने का साहसी कदम उठाये। महिला विकास और महिला सशक्तिकरण की दिशा में सबसे बड़ी बाधा भ्रूण हत्या है। भ्रूण हत्या हमारे पुरजोर प्रयासों के बावजूद पूरी तरह नियंत्रित नहीं हो पाई है जिसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ रहा है। लड़कियों को शिक्षा ओर रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में हमारे सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर बाधाएँ सामने आती हैं। हम लड़कों को आगे बढ़ाने में अपनी रूचि लेते हैं ओर लड़कियों को पीछे रखने में अपनी भलाई समझते हैं।

‘आधी आबादी’ को मिलना चाहिए उसका पूरा हक

समानता
अर्चना कुमारी
स्वतंत्र पत्रकार

भारत में महिलाएं देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। यूं तो यह आधी आबादी कभी शोषण तो कभी अत्याचार के मामलों को लेकर अक्सर चर्चा में रहती है। हालांकि जब भी हम महिलाओं की समानता की बात करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि किसी भी वर्ग में समानता के लिए सबसे पहले अवसरों की समानता का होना बेहद जरूरी है। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि देश में आधी आबादी राजनीति में अभी भी हाशिये पर है। ये स्थिति तब है, जबकि जितनी भी महिलाओं को राजनीति के निचले पायदान से ऊपरी पायदान तक जितना भी और जब भी मौका मिला, उन्होंने अपनी योग्यता और क्षमताओं का लोहा मनवाया है। ऐसे में यह सवाल भी उठना स्वाभाविक है कि आजादी के 75 सालों में लैंगिक समानता की दिशा में हासिल की गई उपलब्धियां आखिर गिनती की ही क्यों रह गई हैं? आखिर सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लैंगिक असमानता क्यों बरकरार है? वह भी तब, जब हम इस वर्ग को ‘आधी आबादी’ का संबोधन देते हैं। यह बात सही है कि स्त्री शक्ति ने देश-दुनिया में समय-समय पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। लेकिन महिलाओं को कमतर होने का अहसास दिलाने की पुरुष वर्ग की मानसिकता आज भी स्त्रियों को उनके हकों से वंचित कर रही है। नारी सशक्तीकरण की बातें कागजी योजनाओं में काफी अच्छी लगती हैं पर धरातल पर अभी काफी कुछ होना बाकी है। खास तौर से आधी आबादी को लोकतांत्रिक व्यवस्था में बराबरी का हक देने को लेकर। यह विडम्बना ही है कि विधायिकाओं में 50 फीसदी नहीं, बल्कि महज 33 फीसदी आरक्षण की सालों से चल रही मांग आज तक अधूरी ही है। पंचायत और स्थानीय निकाय स्तर पर आरक्षण से महिलाओं को मौका जरूर मिला लेकिन यहां भी कितना सशक्तीकरण नारी शक्ति का हो पाया है यह किसी से छिपा नहीं है। शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वावलंबी, ऊंचे पदों पर बैठी महिलाओं के विपरीत लैंगिक भेदभाव की उस तस्वीर को भी देखना होगा जहां महिलाओं को यह तक पता नहीं कि कानून ने किन-किन क्षेत्रों में उनको कितना संरक्षित कर रखा है।वहीं संसद में भी पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। वर्ष 2024 के संसदीय चुनावों के बाद महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व मात्र 14 प्रतिशत ही है - इसीलिए उनके दायित्व और प्रतिनिधित्व का भार, निर्वाचित पुरुष सांसदों से कहीं अधिक हैं। भारत की मौजूदा जनसंख्या के अनुसार, लोकसभा में एक निर्वाचित सांसद औसतन 26 लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं एक निर्वाचित महिला सांसद औसतन 92 लाख महिलाओं का प्रतिनिधित्व करतीं हैं। ऐसे में निर्वाचित महिला सांसदों का राजनैतिक दायित्व भी कहीं अधिक है। जाहिर है महिला अधिकारों और महिलाओं के राजनैतिक प्रतिनिधित्व के राजनैतिक दावों और उसकी वास्तविकता के मध्य एक गहरा राजनैतिक विरोधाभास और राजनैतिक दलों का दोगलापन है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि डॉ. आंबेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं की क्या स्थिति है? दुनिया की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है, इसलिए जब तक उनका समुचित विकास नहीं होता कोई भी देश चहुंमुखी विकास नहीं कर सकता। डॉ. आंबेडकर का मानना था कि सही मायने में प्रजातंत्र तब आएगा जब महिलाओं को पैतृक संपति में बराबरी का हिस्सा मिलेगा और उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिए जाएंगे। उनका दृढ़ विश्वास कि महिलाओं की उन्नति तभी संभव होगी जब उन्हें घर परिवार और समाज में बराबरी का दर्जा मिलेगा। शिक्षा और आर्थिक तरक्की उन्हें सामाजिक बराबरी दिलाने में मदद करेगी। लेकिन ये सच है कि पितृसत्तात्मक मानदंडों और परम्परागत मानसिकता के चलते ऐतिहासिक रूप से भारत में महिलाओं को हाशिए पर रखा गया। आजादी के बाद भारत के संविधान ने ये व्यवस्था दी कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में पुरुषों एवं महिलाओं के साथ समान व्यवहार किया जाएगा, लेकिन भारत में अधिकांश राज्य विधानसभाओं में महिला सदस्यों के प्रतिनिधित्व का परिदृश्य आज भी निराशाजनक है। वास्तव में भारत की आधी आबादी का एक बहुत बड़ा भाग अभी भी अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित है।

आजादी के 75 सालों में लैंगिक समानता की दिशा में हासिल की गई उपलब्धियां आखिर गिनती की ही क्यों रह गई हैं? आखिर सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लैंगिक असमानता क्यों बरकरार है?

नारी : सदियों से संघर्ष और आज की चुनौती

अराजकता
मुनीष भाटिया
स्वतंत्र पत्रकार

ईमानव सभ्यता के लंबे इतिहास पर दृष्टि डालें तो एक कटु सत्य बार-बार सामने आता है कि नारी को अनेक बार समाज और युद्ध की राजनीति में एक कमजोर कड़ी मान लिया गया। शत्रु देशों और दुष्ट प्रवृत्तियों ने अक्सर नारी की अस्मिता पर आघात को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। इतिहास के अनेक पन्नों में यह दर्दनाक सच्चाई दर्ज है कि युद्ध केवल रणभूमि तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उनका सबसे क्रूर प्रभाव स्त्रियों के जीवन पर भी पड़ा। कभी शत्रु सेनाओं के हाथों, तो कभी सामाजिक परिस्थितियों के कारण नारी को अपमान और शोषण का सामना करना पड़ा। स्त्रियों को अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए असाधारण साहस दिखाना पड़ा। जब आक्रमणकारियों की क्रूरता अपनी सीमा पार कर जाती थी, तब भारत की वीरांगनाओं ने जौहर जैसे कठोर और दर्दनाक निर्णय भी लिए। यह केवल एक घटना नहीं थी, बल्कि उस समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की भयावहता का प्रतीक थी। जौहर के पीछे एक ही भावना थी—अपनी गरिमा और सम्मान की रक्षा। दरअसल, युद्ध की मानसिकता में अक्सर यह सोच काम करती रही कि यदि किसी समाज की महिलाओं को अपमानित किया जाए तो उस समाज की आत्मा को चोट पहुंचाई जा सकती है। इसी कारण कई बार नारी को विजय के प्रतीक के रूप में देखा गया और उसे लूट का हिस्सा बना दिया गया। यह प्रवृत्ति मानवता के लिए एक कलंक रही है, जिसने सभ्यता की प्रगति पर भी प्रश्नचिह्न लगाए हैं। समय के साथ समाज में परिवर्तन आया, शिक्षा का प्रसार हुआ और महिलाओं की स्थिति भी काफी हद तक मजबूत हुई। आज महिला शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, प्रशासन, खेल और सेना जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे रही हैं। वे केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सक्रिय भागीदार बन चुकी हैं। इसके बावजूद कुछ चुनौतियां ऐसी हैं जो नए रूप में सामने आती रहती हैं। आज के युग में युद्ध का स्वरूप बदल गया है। पहले युद्ध तलवारों और सेनाओं से लड़े जाते थे, लेकिन आज कई बार यह युद्ध मानसिक और भावनात्मक स्तर पर लड़े जा रहे हैं। आधुनिक समय में भी नारी को कमजोर समझ कर उसे भावनात्मक जाल में फंसाने की घटनाएं सामने आती रहती हैं। कई बार झूठे प्रेम, छल या किसी छिपी हुई मंशा के माध्यम से महिलाओं को भ्रमित किया जाता है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के विस्तार के साथ ऐसे मामलों में और भी जटिलता आ गई है। दुखद तथ्य यह है कि इस प्रकार के छलावे का शिकार केवल अशिक्षित महिलाएं ही नहीं, बल्कि कई बार पढ़ी-लिखी और जागरूक महिलाएं भी हो जाती हैं। इसका कारण केवल भावनात्मक संवेदनशीलता नहीं, बल्कि समाज में बढ़ती कृत्रिमता और विश्वास की कमी भी है। जब कोई व्यक्ति झूठे प्रेम या सहानुभूति का जाल बुनता है, तो कई बार सच्चाई को पहचानना कठिन हो जाता है। इस स्थिति से निपटने के लिए केवल कानून ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी अत्यंत आवश्यक है। परिवार और समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलाओं को न केवल शिक्षा मिले, बल्कि उन्हें जीवन के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में भी जागरूक किया जाए। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और विवेक की भावना ही उन्हें ऐसे छलावे से बचा सकती है।

जब तक समाज की सोच में परिवर्तन नहीं आएगा, तब तक महिलाओं के प्रति वास्तविक समानता और सुरक्षा की भावना स्थापित नहीं हो सकेगी।

समाज में छिपे उन भेड़ियों को पहचानना भी जरूरी है जो सभ्यता और संवेदनशीलता का मुखौटा पहनकर अपने स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ सामाजिक स्तर पर स्पष्ट और दृढ़ संदेश देना होगा कि महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता। नारी को केवल भावुकता का प्रतीक मानना भी एक बड़ी भूल है।

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का स्वरूप माना गया है। वह केवल स्नेह और करुणा की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि साहस, धैर्य और संघर्ष की भी मिसाल है। इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं से लेकर आधुनिक समय की अनेक सफल महिलाओं तक, नारी ने हर क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध की है, इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि नारी को कमजोर समझने की मानसिकता को पूरी तरह बदला जाए। समाज को यह समझना होगा कि नारी केवल संरक्षण की पात्र नहीं, बल्कि समान अधिकार और सम्मान की अधिकारी है। जब तक समाज की सोच में परिवर्तन नहीं आएगा, तब तक वास्तविक समानता और सुरक्षा की भावना स्थापित नहीं हो सकेगी। साथ ही महिलाओं को भी आत्मनिर्भर और आत्म सजग बनने की आवश्यकता है।

महिला किसान - अनदेखी ना रहे अन्नपूर्णा की भागीदारी

सशक्तीकरण
डॉ. मोनिका शर्मा
स्वतंत्र स्तंभकार

दुनियाभर में स्त्रियों के लिए सम्मान, समानता और सुरक्षा से जुड़े विषयों पर जन-जागरूकता लाने का विशेष दिन है। आधी आबादी की बेहतरी हेतु सजगता लाने और भेदभाव को लेकर सवाल उठाने का परिवेश बनाना इस वैश्विक आयोजन का मुख्य उद्देश्य है। हालांकि हर देश, हर समाज में महिलाओं की समस्याएं अलग होती हैं पर बीते कुछ वर्षों में दुनिया के हर हिस्से में ही स्त्रियों की भागीदारी को समझने और लैंगिक समानता लाने का भाव बढ़ा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो स्त्रियों की आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक भागीदारी को आँकने की सोच को बहुत बल मिला है। कामकाजी और शिक्षित स्त्रियों के बढ़ते आंकड़े आधी आबादी की बढ़ती भूमिका को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं। महिला दिवस पर विज्ञान से लेकर तकनीक और समाज से लेकर सैन्य बलों तक, अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करवाती स्त्रियों के प्रेरणादायी चेहरे सामने आते हैं। वर्कफोर्स का हिस्सा बनी इन महिलाओं की समस्याओं पर चिंतन किया जाता है। उनकी उपलब्धियों की चर्चा होती है। भविष्य से जुड़े सकारात्मक बदलावों का धरातल बनाने को लेकर सोचा जाता है।

विचारणीय है कि महानगरों में बड़े आयोजनों तक सिमट जाने वाले महिला दिवस से जुड़े विमर्श में महिला किसान आज भी नदारद हैं। पर्यावरण संरक्षण से लेकर अन्न उपजाने और पशुधन को पालने तक, अनगिनत कामों में लगीं स्त्रियों की यह श्रमशील भूमिका आज भी वैचारिक बहसों का हिस्सा नहीं बन सकी है। जबकि कृषि क्षेत्र से सबसे ज्यादा महिलाएं ही जुड़ी हैं। कृषि कार्यों जैसे बुवाई, कटाई, निराई, खेत की सफ़ाई, कटाई, सिंचाई, उपज की सफ़ाई और भंडारण जैसे काम अधिकतर महिला किसान ही करती हैं। 2023-24 के आंकड़ों के अनुसार खेती-किसानी में पुरुषों की भागीदारी 36.3 प्रतिशत और महिलाओं की हिस्सेदारी करीब 64.4 प्रतिशत थी। खेती से जुड़े अन्य कार्यों को भी जोड़ लिया जाए तो पशु पालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, वर्मीकम्पोस्ट, उत्पादन, मशरूम की खेती और फल-सब्जी प्रसंस्करण जैसे कार्यों में 73 फीसदी से अधिक योगदान महिलाओं का ही है। स्पष्ट है कि हमारे देश में कृषि क्षेत्र बहुत हद तक स्त्रियों के श्रम पर ही निर्भर है। बावजूद इसके अन्नपूर्णा कही जाने वाली महिला किसानों को अस्थायी श्रमिक मानकर अनदेखा किया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण से लेकर अन्न उपजाने और पशुधन को पालने तक, के कामों में लगीं स्त्रियों की यह श्रमशील भूमिका आज भी वैचारिक बहसों का हिस्सा नहीं बन सकी है।

आज भी खेती-किसानी में महिला श्रमिकों को पुरुष कामगारों समान वेतन नहीं मिलता। घर की खेती संभालने वाली महिलाओं के काम का तो कोई मौद्रिक मूल्यांकन ही नहीं होता।

इतना ही नहीं, खेती-किसानी से जुड़ीं ग्रामीण महिलाओं में केवल 13 प्रतिशत के पास अपनी भूमि का स्वामित्व है। गौरतलब है कि कुछ समय पहले अंतरराष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संगठन, जेंडर इम्पैक्ट प्लेटफॉर्म और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित वैश्विक सम्मेलन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी कृषि से जुड़ी महिलाओं के योगदान पर बात करते हुए उनके पीछे छूट जाने का विषय उठा चुकी हैं। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा था कि महिलाओं को कृषि ढांचे के ‘पिरामिड’ में सबसे नीचे रखा जाता है।

चिंतनीय है कि बात चाहे भूमि स्वामित्व की हो या स्वास्थ्य समस्याओं की। सुरक्षा की हो या सम्मान की, अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले कृषि क्षेत्र में लगीं महिला कृषकों से जुड़े विषय विचार-विमर्श का विषय नहीं हैं। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के आंकड़ों में भी महिला कृषकों का जिक्र कम ही होता है। सुखद है कि अब खुद महिला किसान स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों के माध्यम से संगठित एवं जागरुक हो रही हैं। जैविक खेती, तकनीकी का उपयोग या उत्पादकता बढ़ाने वाले नवाचार, महिला किसानों को सजग-सशक्त बना रहे हैं। ज्ञात हो कि संयुक्त राष्ट्र ने भी वर्ष 2026 को महिला किसान के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के रूप में नामित किया है।

इसका उद्देश्य भी उत्पादन से लेकर व्यापार तक कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की भूमिका और हासिल किए जा रहे उन लक्ष्यों को सामने लाना है, जिन्हें आमतौर पर मान्यता नहीं मिलती। असल में महिला किसानों की हिस्सेदारी को मान दिए बिना उनका सशक्तीकरण संभव नहीं। उनकी भागीदारी को आंके बिना सामाजिक-पारिवारिक उलझनों और लैंगिक भेदभाव के दंश को नहीं समझना मुश्किल है। उनके श्रम को मान्यता दिए बिना मानसिक-भावनात्मक अनुभूतियों का विमर्श का हिस्सा बनना कठिन है।स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र का प्रमुख कार्यबल बनी इन स्त्रियों को सशक्त बनाने के प्रयास भी आवश्यक हैं।

जॉन की 'फोर्स 3' में हर्षवर्धन राणे की हुई एंट्री

मुंबई। जॉन अब्राहम की फिल्म 'फोर्स' और 'फोर्स 2' 2011 और 2016 में रिलीज हुई थी। अब निर्माता इसकी तीसरी कड़ी लेकर आ रहे हैं जिसमें हर्षवर्धन राणे भी आधिकारिक तौर पर शामिल हो गए हैं। इस खबर ने उनके फैंस को खुश होने का बड़ा मौका दे दिया है। दिलचस्प बात यह है कि 'फोर्स 3' में अपने होने की पुष्टि हर्षवर्धन ने सोशल मीडिया पर खुद की है। साथ ही, फिल्म के सेट एक वीडियो भी साझा किया है। हर्षवर्धन ने गुजरात में 'फोर्स 3' की शूटिंग शुरू कर दी है। इससे पहले, उन्होंने इंस्टाग्राम पर मुहूर्त पूजा का एक वीडियो साझा किया है जिसमें वह शूटिंग शुरू करने से पहले भगवान का आशीर्वाद लेते।

लाइफ Style

दिव्या

'चिरैया' सीरीज का दमदार ट्रेलर जारी

दिव्या दत्ता सिनेमा का वो चेहरा हैं, जो अपने अभिनय के दम पर दिल और दिमाग में छाप छोड़ जाती हैं। फिर वह कुछ ऐसा करते दिखाई देंगी, लेकिन इस बार उन्होंने भारतीय समाज के सबसे संवेदनशील मुद्दे को उठाया है।

एजेंसी ▶▶ मुंबई

दिव्या एक ऐसी कहानी ला रही हैं जिसके जरिए समाज को यह संदेश दिया जाएगा कि 'शादी लाइसेंस नहीं देती' है। उनकी आगामी वेब सीरीज का नाम 'चिरैया' है जिसका दमदार ट्रेलर और रिलीज तारीख जारी हो गई है। 'चिरैया' का ट्रेलर 1 मिनट 43 सेकंड लंबा है जिसकी शुरुआत एक आदर्श परिवार से होती है। दिव्या मुख्य किरदार में हैं, और संजय मिश्रा उनके पति की भूमिका निभा रहे हैं।

ट्रेलर के जरिए बताने की कोशिश की गई है कि शादी का मतलब यह नहीं होता कि पति को अपनी पत्नी की सहमति के खिलाफ जाकर उसके साथ जबरदस्ती करने का हक मिल जाएगा। सीरीज कई साल से चली आ रही समाज की मानसिकता पर सवाल उठाती है। शशांत शाह द्वारा निर्देशित 'चिरैया' का निर्माण एसवीएफ एंटरटेनमेंट के बैनर तले किया गया है। दिव्या और संजय के अलावा, सिद्धार्थ शॉ, सरिता जोशी, फैसल राशिद, टीनू आनंद और प्रसन्ना बिष्ट जैसे सितारे सीरीज में अलग-अलग किरदारों के साथ दिखे हैं। सीरीज में कुल 6 एपिसोड हैं जिनका प्रीमियर 20 मार्च, 2026 से जियोहॉटस्टार पर किया जाएगा।

हॉलीवुड मसाला

खुद को फिट और फाइन रखते हैं

लॉस एंजिल्स। 'हैरी पॉटर' सीरीज के स्टार डेनियल रेडक्लिफ ने अपनी फिटनेस जर्नी और सेहत के प्रति जुनून के बारे में खुलकर बात की। इस दौरान उन्होंने बताया कि एक समय ऐसा भी था कि उनकी लाइफस्टाइल काफी खराब थी, लेकिन अब वह फिटनेस को लेकर बेहद गंभीर हैं। डेनियल रेडक्लिफ ने बताया कि कैसे उन्होंने बुरी आदतों को छोड़कर जिम और हेल्दी रूटीन को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाया। डेनियल ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया कि टीन एज में वह 'पूरे दिन कॉफी और सिगरेट' पर चलते थे।

19 साल बाद भारत लौट रहीं पॉप स्टार शकीरा

मुंबई। करीब दो दशकों के बाद ग्लोबल पॉप स्टार शकीरा एक बार फिर भारत में लाइव परफॉर्म करेंगी। खास बात यह है कि इस बार शकीरा 10 अप्रैल को मुंबई में और 15 अप्रैल को दिल्ली में परफॉर्म करेंगी। यह पहली बार है कि शकीरा का भारत दौरा दो शहरों में आयोजित किया जा रहा है। दोनों ही शहरों में उनके भारी संख्या में फैंस हैं। माना जा रहा है कि ये कॉन्सर्ट्स पूरी तरह हाउसफुल रहेंगे। शकीरा की एनर्जी, डांस मूव्स और सुपरहिट गानों का जादू भारतीय दर्शकों के सिर चढ़कर बोलेगा। अगर शकीरा के भारत कनेक्शन की बात करें, तो उन्होंने आखिरी बार साल 2007 में मुंबई में परफॉर्म किया था। उस समय वह अपनी 'ओरल फिक्सेशन टूर' के तहत भारत आई थीं। अब लगभग 19 साल बाद फैंस को उनकी लाइव परफॉर्मेंस देखने के लिए मिलेगी।

टी-20 विश्व कप के समापन समारोह में आज प्रस्तुति देंगे रिकी मार्टिन, चलाएंगे सुरों का जादू

अहमदाबाद। टी-20 विश्व कप 2026 के समापन समारोह के लिए हर कोई उत्साहित है। यह शाम और ज्यादा रंगीन होगी, क्योंकि पॉप गायक रिकी मार्टिन अपनी लाइव प्रस्तुति से सभी का मन मोहने आएंगे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने आधिकारिक पोस्ट साझा करते हुए यह खुशखबरी दी है। परफॉर्मेंस शाम 5:30 बजे से शुरू होंगी।' बता दें, क्रिकेट का यह फाइनल मुकाबला अहमदाबाद के प्रतिष्ठित नरेंद्र मोदी स्टेडियम में आयोजित होगा। रविवार 8 मार्च को होने वाले इस मुकाबले में भारतीय क्रिकेट टीम का सामना न्यूजीलैंड से होगा।

जानिए कौन हैं रिकी मार्टिन

दो बार ग्रैमी पुरस्कार विजेता रिकी मार्टिन, लोकप्रिय प्यूर्टो रिकन गायक, गीतकार और एक अभिनेता भी हैं। उन्हें सबसे ज्यादा 'लिविन' ला विडा लोका' के लिए जाना जाता है जो 1999 का लोकप्रिय हिट पॉप गाना है। इसने रिकी को वैश्विक स्तर पर रातों-रात चमका दिया था। उनके अन्य लोकप्रिय गानों में 'द कप ऑफ लाइफ', 'मारिया' और 'शी बैंग्स' शामिल हैं। बतौर अभिनेता उन्हें 'द असासिनेशन ऑफ जियानी वर्साचे' और 'जनरल हॉस्पिटल' जैसी सीरीज में देखा गया है।

आईसीसी ने सोशल मीडिया पर किया ऐलान : आईसीसी ने रिकी मार्टिन के आगमन की पुष्टि करते हुए लिखा, 'टी-20 विश्व कप का जश्न और भी बड़ा हो गया है! हमें यह ऐलान करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि वैश्विक आइकन और सुपरस्टार रिकी मार्टिन आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 के फाइनल से पहले समापन समारोह में मुख्य कलाकार होंगे। यह एक ऐसा उत्सव है जिसे आप बिल्कुल भी छोड़ना नहीं चाहेंगे!

'एस्पिरेंट्स सीजन-3' का ट्रेलर जारी

मुंबई। द वायरल फीवर की बेहद लोकप्रिय ड्रामा सीरीज 'एस्पिरेंट्स' अपने तीसरे सीजन के साथ धमाका करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। 6 मार्च को निर्माताओं द्वारा इसका ट्रेलर जारी कर दिया गया है। इसके निर्देशन की कमान दीपेश सुमित्रा जगदीश ने संभाली है। 'एस्पिरेंट्स सीजन 3' का प्रीमियर अमेजन प्राइम वीडियो पर किया जाएगा। यह 13 मार्च से भारत समेत दुनियाभर के 240 से ज्यादा देशों और क्षेत्रों में एक साथ दस्तक देगी। 'एस्पिरेंट्स सीजन 3' के ट्रेलर में कहानी को नए मोड़ पर पहुंचते हुए दिखाया गया है।

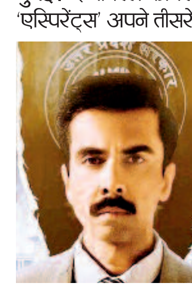

टीवी मसाला

'सरप्राइज, सरप्राइज!' एक बार फिर लौट रहे हैं अमिताभ

मुंबई। देवियों और सज्जनों, मैं, अमिताभ बच्चन, आप सभी का एक बार फिर स्वागत करता हूँ" यह आवाज़ जल्द ही आपके घरों में गूंजेगी। देश के सबसे पॉपुलर और पसंदीदा क्विज़ रियलिटी शो, "कौन बनेगा करोड़पति" का 18वां सीज़न टेलीविज़न पर आने के लिए पूरी तरह तैयार है। सोनी टीवी के शो का एक नया प्रोमो सोशल मीडिया पर सामने आया है, जिसमें सदी के महानायक, अमिताभ बच्चन अपने पुराने अंदाज़ में शो की वापसी की घोषणा करते हुए दिख रहे हैं।

चुलबुले अंदाज में प्रोमो की शुरूआत : प्रोमो की शुरुआत अमिताभ बच्चन के चुलबुले अंदाज़ से होती है। कैमरे के सामने आकर वह कहते हैं, "सरप्राइज़!" लाल वेलवेट कोट और काली पैंट पहने वह हमेशा की तरह डैपर लग रहे हैं। वीडियो में, बिग बी शीशे के सामने खड़े होकर अपनी बाहें फैलाते हुए कहते हैं, "सरप्राइज़!" हालांकि, बीच में वह एक छोटी सी गलती पर मुस्कुराते हुए कहते हैं, "सॉरी, मुझसे गड़बड़ हो गई," और फिर अपना वीडियो जारी रखते हुए केबीसी रजिस्ट्रेशन की घोषणा करते हैं।

रजिस्ट्रेशन की तारीख का खुलासा : केबीसी के इस नए सीज़न का बेसब्री से इंतज़ार है। फैंस के लिए सबसे बड़ी खबर यह है रजिस्ट्रेशन की तारीख। वीडियो में साफ-साफ बताया गया है कि शो के सवाल और रजिस्ट्रेशन प्रोसेस 9 मार्च से शुरू होंगे। दर्शक सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव ऐप के जरिए हिस्सा ले सकते हैं।

स्कैम से सावधान रहने की अपील

प्रोमो के आखिर में एक जरूरी डिस्क्लेमर भी दिया गया है, जिसमें कंटेस्टेंट को किसी भी स्कैम या लॉटरी स्कैम का शिकार न होने की चेतावनी दी गई है। चैनल ने साफ किया है कि 'कौन बनेगा करोड़पति' कभी किसी से कोई फीस या चार्ज नहीं मांगता है।

फैंस एक्साइटेड हैं

अमिताभ बच्चन और केबीसी का पुराना रिश्ता है। पिछले सीजन के आखिर में जब बिग बी इमोशनल हो गए थे, तो उनकी वापसी को लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन अब, इस ऑफिशियल प्रोमो ने उन सभी कयासों पर विराम लगा दिया है। फैंस अपने पसंदीदा होस्ट को फिर से हॉट सीट पर देखने के लिए बेताब हैं। सूत्रों के मुताबिक, नया सीजन जुलाई या अगस्त में आएगा।

गांव की छोरी बनकर मचाएंगी धमाल

मुंबई। सुपरस्टार राम चरण की आगामी फिल्म 'पेड्डी' लंबे समय से लोगों का ध्यान खींच रही है। 2025 में आई 'गेम चेंजर' की निराशाजनक परफॉर्मेंस के बाद, राम की इस फिल्म से लोगों की उम्मीदें काफी ज्यादा हैं। बुची बाबू सना द्वारा निर्देशित 'पेड्डी' में जाह्नवी कपूर बतौर मुख्य अभिनेत्री नजर आएंगी। चूकि 6 मार्च को अभिनेत्री 29 साल की हो गई हैं। इस खास मौके पर फिल्म से उनकी नई झलक जारी की गई है। आगामी 30 अप्रैल को रिलीज हो रही 'पेड्डी' में, जाह्नवी को 'अचियम्मा' के रूप में पेश किया गया है। पोस्टर में वह साहसी, आत्मविश्वासी और ऊर्जा से भरपूर दिखी हैं। सूती कपड़ों के साथ, गोल फ्रेम का चश्मा लगाए उनका लुक गांव की देहाती छोरी जैसा प्रतीत होता है।

कार्तिक की नई हीरोइन प्रीति मुकुंदन कौन हैं

'नागजिला' से कर रहीं बॉलीवुड में एंट्री

मुंबई। अभिनेता कार्तिक आर्यन इन दिनों अपनी अगली रोमांचक फिल्म 'नागजिला' को लेकर सुर्खियों में हैं, लेकिन इस बार चर्चा सिर्फ कार्तिक की नहीं, बल्कि उनके साथ नजर आने वाली अभिनेत्री प्रीति मुकुंदन की भी हो रही है। साउथ फिल्म इंडस्ट्री में काम करने के बाद प्रीति अब करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस के बैनर तले बन रही इस फिल्म के जरिए अपना बॉलीवुड सफर शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। बॉलीवुड हंगामा के मुताबिक, फिल्म के निर्माता प्रीति के चयन से बेहद खुश हैं। सूत्रों का कहना है कि प्रीति मुकुंदन इस भूमिका के लिए बिल्कुल फिट बैठती हैं।

कौन हैं प्रीति मुकुंदन?

प्रीति एक अभिनेत्री, मॉडल और डांसर हैं, जो अब तक कई तेलुगू, तमिल और मलयालम भाषा की फिल्मों में काम कर चुकी हैं। प्रीति ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत साल 2024 में तेलुगू हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'ओम भीम बुश' से की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म 'स्टार' के जरिए तमिल सिनेमा में कदम रखा। उधर 'मैंने प्यार किया' उनकी पहली मलयालम फिल्म थी। प्रीति को विष्णु मांचू और अक्षय कुमार अभिनीत तेलुगू फिल्म 'कन्नप्पा' में भी देखा गया था।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रहीं फैसले फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।

अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आने वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को भरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना तो है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर भरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।

सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आपः सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करेंः घर का किराया या ईएमआई, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं
- तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च

60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही?

- बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट
   सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
   कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी
   यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है।
   ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें

- धीरे-धीरे 6–12 महीनों में आपका फंड तैयार हो सकता है।

जीवन की पहली सुरक्षा परत

- इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
- सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रखता है। याद रखें सुरक्षा पहले, निवेश बाद में।

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल!

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसले लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसों को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और असरदार वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूलः कमाई का सही बंटवारा

यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, ईएमआई), 30% आय इच्छाओं पर (घूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए, तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और "पहले बचत, फिर खर्च" की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूलः गाड़ी का सपना

नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा ईएमआई और कार खर्च पर न जाएं। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकते हैं।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें

निवेश की दुनिया में "कंपाउंडिंग" सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला हैः 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)।
उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3–6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच

जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश

निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 – आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100–25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (FD, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

epaper : www.haribhoomi.com
हरिभूमि CLASSIFIED
Email : response.haribhoomi@gmail.com

आवश्यकता आपकी सुविधा हमारी
Contact for advertisment booking :
Raipur- 6263818152
79871-19756

Appointment आवश्यकता

टेलीकॉलर

Requirment- Creditsea Finance Hiring Telecaller - Collection Associates (Hindi, English, Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam). Salary 15,000–25,000; Male/Female; Complete Desk Job.3rd floor, Radhey Chambers, Pandri. Contact HR : 9109165137, 7999611198, 9131205196; Freshers, Experienced apply Immediately now. (RO-7243)

सुरक्षागार्ड

आवश्यकता है- 24 घंटे के लिए सुरक्षा गार्ड चाहिए स्थानः- Maple Town, Opp. St. Xavier School, Borsi-Dhanora Road, Durg रहने की सुविध उपलब्ध तुरंत जॉइनिंग संपर्क करें:- 7771967111. (आरो नं.-232)

आवश्यकता है- प्रतिष्ठित सुरक्षा एजेंसी हेतु तत्काल सिक्योरिटी गार्ड की आवश्यकता है आयु 18–45 वर्ष। 14,000 प्रतिमाह संपर्क :- Target Security Service ऑफिसः- 5/9, Priyadarshini Parisar East, G.E. Road, Supela, Bhilai: 9399646319, 7470845654. (आरो नं.-234)

लाउन्ड्री कार्य

आवश्यकता है- मुकुन्द ड्राई क्लीनर एंव लाउन्ड्री कार्य करने हेतु लड़के एंव लड़कियों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार पता- चांदनी चौक कोटा रायपुर (छ.ग.) मों.-9993247475. (आरो-6695)

डिजाइनर

आवश्यकता है- Corel Draw & Adobe Illustrator सॉफ्टवेयर में 2–3 वर्ष का अनुभव रखने वाले डिज़ाइनर की आवश्यकता है। Kavita Polymers (संपर्क – +91 94252 02114) (आरो-0356)

केयर टेकर

आवश्यकता है- घर पर ही रहकर बुजुर्ग एवं पेशेंट की देखभाल हेतु लड़के एवं लड़कियों की आवश्यकता है। योग्यता 10 वी, 12 वी, जी.एन. एम, ए. एन. एम, बी. एस. सी नर्सिंग, ड्यूटी 10 घंटे एवं 24 घंटे, स्थान- दुर्ग,भिलाई मो. -8770891489. (आरो नं.-233)

इलेक्ट्रीशियन/मेकेनिक

आवश्यकता है- परमानेंट जॉब सभी इंजीनियर, वेल्डर कटर, फिटर, गार्ड, कम्प्यूटर ऑपरेटर, आफिस कार्य-10, ड्राइवर, चपरासी-20, स्टोर कीपर, हेल्पर, सुपरवाईजर, 5वीं- ग्रेजुएट वेतन 11000-30000 रहना फ्री, सम्पर्क- व्यापार विहार बिलासपुर 6232429364 (आरो-40095)

हरिभूमि क्लासीफाईड

पैकिंग कार्य

आवश्यकता है- चायपत्ति के पैकिंग कार्य लड़की व महिला और पुरूष, लड़को की जरूरत है संपर्क - जैन ट्रेडर्स नियर SBI ATM आकृति विहार अमलीडीह में नम्बर - 74699-8000, 0771-4075490. (आरो-6698)

टेक्नीशियन/हेल्पर

आवश्यकता है- Hitachi Service Center धमतरी में A.C Tech-4 पद, A.C Helper -6 पद, कम्प्युटर ऑपरेटर- 2 पद, मों.नं.- 9926388911, 9871-88911. (आरो-6699)

टीलर

Wanted- Required Dealers/Associates at different locations in following states - Chhattisgarh & Madhya Pradesh.(Packaged Drinking Water). Only Individuals or Companies having experience need apply. Mail:info@oxineer.com Website-www.oxineer.com,Ph: 9165446688. (आरो-45935)

इलेक्ट्रीशियन/मेकेनिक

आवश्यकता है- प्रशिक्षण अधिकारीः- ट्रेड- इलेक्ट्रिशियन कोपा, डीजल मेकेनिक योग्यताः- बी.ई./ डिप्लोमा/ आई.टी.आई. पास (CITS पास एवं अनुभवी को प्राथमिकता) आवेदन मेल करें: - agraseniti@gmail.com (आरो- 231

क्लासीफाईड

ऑफिस कार्य

शीघ्र आवश्यकता है- जो बाहर रहकर कार्य कर सके इंदौर में ऑफिस कार्य हेतु लड़को की , आयु 18 से 30 वर्ष वेतन 12000 + कमीशन + बोनस के साथ 20000 रहना फ्री + गाड़ी किराया +कोई नियुक्ति शुल्क नहीं लगेगा संपर्क, 9165407080, 9165820635. (आरो-501)

मजदूर

आवश्यकता है- पुणे, महाराष्ट्र में 40-50 मजदूरों की आवश्यकता है। आवास उपलब्ध कराया जाएगा। संपर्क करें: 9545231187. (आरो-45804)

Property प्रापर्टी

प्लाट

प्लॉट बेचना है - रायपुरा वृंदावन कॉलोनी के पास आवासीय 800 वर्गफीट एवं 1000 वर्गफीट पूर्व पश्चिम दिशा का प्लाट बेचना हैं। सम्पर्क करें- पारस कंसट्रक्शन, मो. 9827192035, 9204936794. (आरो-057)

बेचना है- खैरा में 20 एकड़ एकचक तारघेरा खेती जमीन 4 बोर सहित रेट 22लाख प्रति एकड़ किरना (मदवानी) रायपुर हाईवे से 5KM अन्दर बेचना है खरीददार ही सम्पर्क करें- 7999616184, 6261938189. (आरो-40106)

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

प्लॉट बेचना है - अमलेश्वर (कृष्णा नगर 2250 वर्ग रेट 1100 प्रति वर्ग फुट) (कार्नर) प्लांट एवं भाटागांव भारींखार में 600 वर्ग फुट रेट 1400 प्रति वर्ग फुट डायवर्सन प्लॉट बेचना है। संपर्क पुरुषोत्तम यदु 8823780696 पोषण यदु 9754685471 महामाई परा रायपुर. (आरो-6686)

For Sale- For lease transfer 3B Street 18 Sector 4 Bhilai Plot/ Plinth 5150/1370 sqft Not in plant expansion area Contact Prakhar Pandya 9375798674/ 9033074041 WA (आरो-45189)

Finance फायनेंस

फाइनेंस - प्रगति फाइनेंस द्वारा सभी प्रकार लोन उपलब्ध बिजनेस , पर्सनल, कृषि महिला समूह , मकान , दुकान, लघु उद्योग, पर्सनल लोन, आधार कार्ड , पैन कार्ड प्रति उपलब्ध (2% ब्याज), (30% छूट) संपर्कः- 7489545029. (आरो-1338)

आवश्यक सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेकर व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेन देन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रकाशक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापन दाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

वैवाहिकी

वर चाहिए

वर चाहिए
जीवन साथी चाहिए जिस किसी व्यक्ति को रिश्ता करना हो सम्पर्क करें
7566281535

वधु चाहिए

वधू चाहिए
बंगाली ब्राह्मण उम्र 38वर्ष जन्म 1987 हाइट 5'-2", शिक्षा एमएससी केमेस्ट्री+ बीएड, रेप्यूटेड प्राइवेट स्कूल टीचर सैलरी 30000+ ट्यूशन क्लास इंकम 10000 प्रतिमाह बिलासपुर निवासी, मध्यम वर्गीय परिवार, स्वयं का मकान, पत्नी केवल एक महीने रही। तलाकशुदा, बच्चे नही। हिन्दू धर्म में कोई जाति बन्धन नहीं, अविवाहित, तलाकशुदा एवं बिना बच्चों वाले मान्य।
सम्पर्क करें- 6260632297,7415334573
मैरिज ब्यूरो एवं संस्था वाले सम्पर्क ना करें

वधू चाहिए
इकरार साह खान
उर्म: 50 वर्ष, जिला दुर्ग. केला बाड़ी मजार के पास. (दिल्ली) बिजनेश मैन हेतु वधू चाहिए. जाति बन्धन नही. तुरंत सम्पर्क करे. लड़की डायरेक्ट बात करे.
93033 96004
88512 89207

नोट - विज्ञापन प्रकाशन के पहले दिन ही करेक्शन मान्य होगा।

CLASSIFIED RATE CARD
01 अप्रैल 2025 से लागू
हरिभूमि समाचार ही नहीं, विचार भी

EDITION	Appointment	Service/Business	Property Rent & Sale	Display
Raipur City	500	620	550	175/- Sq cm
Bhilai + Durg Edition	440	560	520	150/- Sq cm
Bilaspur City	440	500	520	140/- Sq cm
Raipur All Edition	720	820	800	240/- Sq cm
Bilaspur All Edition	610	780	690	195/- Sq cm
All CG	1000	1150	1120	310/- Sq cm
All CG + MP	1280	1750	1600	330/- Sq cm
All Edition	1700	2100	2000	380/- Sq cm

SCHEME
1. Pick of the day 15 % extra.
2. Rs. 70/- per day extra charge for bold advt.
3. Box Prise per day Rs. 80/-
4. 20% per day extra charge for colour advt.
5. After 30 words Rs. 10/- per day per extra word charge.
6. For E-mail Id Rs. 50/- Extra per day.
7. Business & Services- ASTROLOGY, SMS & Others
8. NO SCHEME FOR TOWER & FINANCE AD
9. SINGLE DAY BOOKING 100% EXTRA.

COLOUR 20% Extra Charge For Disply
5% GST For All Ad

EDUCATION SPECIAL

EDITION	RATE	
Raipur City	3000	2+1
Bhilai + Durg Edition	2800	5+3
Raipur Edition	4400	10+10
Bilaspur City	2500	15+18
Bilaspur Edition	3800	
All CG	5500	

MATRIMONIAL CG+MP

(Runing Matter)	(Size 5x1 Box)
500 /- 1 Sunday	800 /- 1 Sunday
900 /- 2 Sunday	1200 /- 2 Sunday
1200/- 3 Sunday	1500/- 3 Sunday

HEALTH CARE 10X1 FIX SIZE

Raipur City	55000	85000	1,10,000
Bilai + Durg Edition	50000	80000	1,00000
Bilaspur City	40000	70000	1,00000
Raipur All Edition	70000	1,20,000	1,60,000
Bilaspur All Edition	55000	1,00000	1,20,000
All CG	1,10,000	1,80,000	2,30,000

CONTACT:- HARI BHOOMI PRESS
Dhamtari Road, Tikarapara, Raipur Ph.: 0771-4242242, Mob.: 09098138778 E-mail- response.haribhoomi@gmail.com
Ring Road-2, Gourav Path Marg, Bilaspur. Mob.: 9826782100 E-mail- hbclassified375@gmail.com

Healthcare

गुप्त रोगी स्वयं मिले

शादी से घबराहट गुप्त रोग
- शीघ्र पतन से शारीरिक कमजोरी
- शारीरिक एवं मानसिक नपुंसकता
- लिंग में ढ़ीलापन, छोटापन, पतलापन
- लिंग में टेढ़ापन
- वीर्य में शुक्राणु की कमी
- बढ़ती उम्र में सेक्स की कमी
- पेशाब में धातु जाना
- शुगर से सेक्स में आई हुई कमजोरी

संपर्क जे.जे. अहमद दवाखाना
सरकारी आई.टी.आई. पॉवर हाऊस अंबेडकर चौक, सी मार्ट के सामने बस स्टैण्ड, भिलाई
प्रतिदिन - सोम से शनि समय - 9 बजे से 5 बजे तक
रविवार - 9 बजे से 2 बजे तक
9098889899

अमेरिका के 'थाड' पर वार, ट्रंप बोले-ईरान पर होगा भीषण हमला

एजेंसी ▶▶ तेहरान/दुबई

मिडिल ईस्ट में जारी युद्ध आठवें दिन और भयानक हो गया है। इजरायल ने शनिवार को ईरान पर बड़े पैमाने पर हवाई हमले किए। इधर, ईरान ने भी अमेरिका में डिफेंस सिस्टम पर वार किया। ईरान ने बीते एक हफ्ते में सऊदी अरब, यूएई और जॉर्डन में तैनात अमेरिका के टर्मिनल हाई एल्टीट्यूड एरिया डिफेंस (थाड) सिस्टम को निशाना बनाया है। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भीषण हमले की चेतावनी दी है। अमेरिका और ईरान के बीच 28 फरवरी को शुरू हुई जंग में अब तक दोनों पक्षों को भारी नुकसान हुआ है, लेकिन शुरुआती दिनों में ईरान के हमलों ने खास तौर पर अमेरिकी रक्षा ढांचे को बड़ा झटका दिया। युद्ध के पहले चार दिनों में ही ईरान ने अमेरिका के करीब 2 अरब डॉलर के रडार और रक्षा सिस्टम क्षतिग्रस्त या नष्ट कर दिए। इनमें अत्याधुनिक थाड डिफेंस सिस्टम, सबसे महंगा रडार सिस्टम और मिलिट्री कम्युनिकेशन सिस्टम शामिल हैं। इजरायल के हमलों के दौरान ईरान के कई शहरों में जोरदार धमाके सुने गए।

ट्रंप ने फिर दी चेतावनी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को चेतावनी दी कि युद्ध में ईरान के और भी अधिकारियों को निशाना बनाया जाएगा। ट्रंप ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान द्वारा पड़ोसी देशों से माफी मांगने का जिक्र किया। ट्रंप ने लिखा, ईरान के खराब व्यवहार के कारण अब ऐसे इलाकों और लोगों के समूहों को भी निशाना बनाने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है, जिन्हें अब तक निशाना बनाने के लिए नहीं सोचा गया था।

दुबई में ईरान का हमला

ईरान ने खाड़ी देशों पर भी मिसाइल और ड्रोन हमले जारी रखे। शनिवार सुबह दुबई में कई धमाके सुने गए। दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास ड्रोन हमले के बाद वहां अफरा-तफरी मच गई और कुछ समय के लिए उड़ानों को रोकना पड़ा।

जॉर्डन में थाड का रडार सिस्टम तबाह

ईरान के हमलों में के 'मुवफ्फाक साल्टी एयर बेस' पर लगे थाड का रडार सिस्टम तबाह हो गया है। एक थाड सिस्टम की कीमत 22 हजार करोड़ रुपए तक होती है, जबकि थाडके रडार सिस्टम की कीमत 2700 करोड़ रुपए (300 मिलियन डॉलर) तक होती है। यह रडार थाड सिस्टम का अहम हिस्सा होता है। दुश्मन की बैलिस्टिक मिसाइलों को पहचानने और ट्रैक करने का काम करता है। अमेरिका के पास सिर्फ 7-8 थाड सिस्टम ही मौजूद हैं। इसलिए इसे बड़ा सैन्य नुकसान माना जा रहा है।

तरकश

-संजय के. दीक्षित

राजपरिवारों को झटका

राज्यसभा में पहुंचने के लिए बीजेपी, कांग्रेस दोनों पार्टियों से जुड़े राजपरिवारों की प्रबल दावेदारी थी। बीजेपी से जशपुर राजपरिवार के रणविजय सिंह पहले राज्यसभा में रह चुके हैं। फिर भी उम्मीदें उन्हें कम नहीं थी। पिछले विधानसभा चुनाव में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रणविजय को कई रोड शो, रैलियों में अपने साथ घुमाया था। मगर सरकार बनने के बाद उन्हें कुछ मिला नहीं। लाल बत्ती की रेवड़ी अब बची नहीं, रही-सही राज्यसभा की आशा भी चली गई। उधर, जगदलपुर पैलेस के कोमल भंजदेव भी इस बार पूरा जोर लगा डाले थे। रमन सिंह के दौर में युवा आयोग के चेयरमैन रह चुके भंजदेव को राज्यसभा की दावेदारी इसलिए जोर पकड़ रही थी, क्योंकि बस्तर लाल आतंक से मुक्त हो रहा तो शायद पार्टी उनके नाम पर मुहर लगा दे। लेकिन, किस्मत से ज्यादा कुछ मिलता नहीं। बीजेपी ने लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा में भेजने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। उधर, कांग्रेस के सौम्य लीडर टीएस सिंहदेव को पार्टी ने वादे के विपरीत मुख्यमंत्री बनाया नहीं, विधानसभा चुनाव हारने से वे अभी किसी पद पर भी नहीं हैं। सो, आस उन्हें भी थी। कई मौकों पर टीएस ने बेबाकी से कहा भी था...पार्टी अगर चाहेगी तो राज्यसभा जरूर जाउंगा। मगर पार्टी ने फूलोदेवी नेताम को राज्यसभा में रिपीट कर दिया।

सीएम फेस और अलार्म

नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत और पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव जैसे दिग्गज नेताओं की दावेदारी को नजरअंदाज कर कांग्रेस पार्टी ने फूलोदेवी नेताम को राज्यसभा में भेजने का फैसला किया है, तो उसके अपने निहितार्थ हैं। दरअसल, फूलोदेवी पीसीसी की पसंद तो कतई नहीं थी। पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज खुद दावेदार थे। मगर फूलोदेवी के नाम को पार्टी सुप्रीमो सोनिया गांधी से हरी झंडी मिल गई। उसके बाद कांग्रेस में किन्तु-परन्तु का कोई स्पेस नहीं बच जाता। जाहिर है, छत्तीसगढ़ से लगातार तीन बाहरी नेताओं को राज्यसभा में भेजने का खामियाजा भुगत चुकी कांग्रेस ने इस बार स्थानीय को प्राथमिकता दी। मगर ये भी सही है...फूलोदेवी के चयन ने सूबे के बड़े नेताओं का चैन उड़ा डाला है। दरअसल, फूलोदेवी की गांधी परिवार के इनर सर्किल में इंट्री हो गई है। फिर महिला और आदिवासी भी हैं। जाहिर है, 2028 के विधानसभा चुनाव में सीएम की रेस में फूलोदेवी मजबूत दावेदार होंगी। ऐसे में नेताओं की नींद उड़ेगी ही।

जातिगत समीकरण

लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा सदस्य बना बीजेपी ने जातिगत समीकरण साधने का प्रयास किया है। सरकार के रणनीतिकारों को भले ही लगता है कि कुर्मी समाज का वोट उनके प्रतिद्वंद्वी को ज्यादा मिला। मगर भविष्य को भी देखना जरूरी है। जाहिर तौर पर सरकार में कुर्मी समुदाय का प्रतिनिधित्व कम है। साहू समाज से अरुण साव डिप्टी सीएम हैं और तोखन साहू केंद्रीय राज्य मंत्री। मगर कुर्मी समाज से मंत्रिमंडल में सिर्फ टंकराम वर्मा। विभागों की हिस्सेदारी में भी उनका नंबर उपर से दसवां होगा। लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा में भेज बीजेपी ने नारी शक्ति को साधने के साथ ही जातिगत संतुलन बनाने का प्रयास किया है।

सबसे पावरफुल चेयरमैन!

यदि आपसे पूछा जाए कि छत्तीसगढ़ के निगम-मंडलों में सबसे जलवेदार चेयरमैन कौन होगा? तो मुंह बिचका जवाब मिलेगा, जलवा तो एमडी काटते हैं। चेयरमैन रबड़ स्टैम्प होते हैं। हां...माईनिंग, ब्रेवरेज जैसे कुछ चेयरमैन होते हैं, जिन्हें हिसाब-किताब के लिए कैलकुलेटर की जरूरत पड़ती है। बाकी तो गाड़ी, पेट्रोल और खर्चे का बिल पास कराने में ही उनका कार्यकाल निकल जाता है। मगर ऐसा नहीं है। एक चेयरमैन हैं, जिनका जलवा सबसे अधिक होगा। वो हैं नागरिक आपूर्ति निगम के चेयरमैन संजय श्रीवास्तव। दरअसल, किसी भी चेयरमैन के पास ट्रांसफर के अधिकार नहीं होते। मगर पिछली सरकार में नॉन के चेयरमैन रामगोपाल अग्रवाल की सरकार में तूती बोलती थी। उन्होंने सरकार से अधिकारियों, कर्मचारियों के तबादले का पावर चेयरमैन के नाम करवा लिया था। दिसंबर 2013 में सरकार बदली। इसके बाद संजय श्रीवास्तव नॉन के चेयरमैन बनें और ट्रांसफर का अधिकार उन्हें मिल गया। संजय पढ़े-लिखे नेता हैं, पर्सनाल्टी भी ऐसी कि नगर निगम में सभापति बने या फिर आरडीए का चेयरमैन, छोटे पदों पर भी उन्हें अपना सिक्का जमाने आता है। नॉन में तो उन्हें ट्रांसफर का अधिकार मिल गया है, फिर समझ सकते हैं, उनका पावर कितना बढ़ गया होगा।

एक डीजीपी, तीन चार्ज

राज्य सरकार ने अरुणदेव गौतम को डीजीपी बनाया मगर पुलिस प्रमुख बनने से पहले जो चार्ज थे, उससे उन्हें मुक्त नहीं किया गया। गौतम के पास अभी भी होमगार्ड, फायर और अभियोजन की जिम्मेदारी है। होमगार्ड और अभियोजन में पूर्व में कई डीजी लेवल के अफसर पोस्ट रह चुके हैं। इसलिए, उसे छोटा नहीं आंकना चाहिए। रही बात डीजीपी की, तो राज्य में चीफ सिकरेट्री के बाद दूसरे सबसे बड़े पद पर बैठे अफसर को अतिरिक्त दायित्व नहीं सौंपना चाहिए। ये तो ऐसा ही हुआ कि किसी आईएएस अधिकारी को चीफ सिकरेट्री बनाकर दो-एक विभाग की जिम्मेदारी दे दो। इससे पहले रमन सिंह की तीसरी पारी में एएन उपध्याय जब 29 साल की आईपीएस की सर्विस में डीजीपी बन गए थे, तब उनके पास प्रशासन का चार्ज था। मगर दसेक दिन के भीतर सरकार ने प्रशासन से उन्हें मुक्त कर दिया था। दरअसल, डीजीपी पद की अपनी गरिमा होती है। एकाध-महीना चलता है। प्रभारी डीजीपी बने, उन्हें 13 महीने हो गए मगर अभी भी तिहरा चार्ज से छुटकारा नहीं पा मिला।

डीजीपी को बोनस

छत्तीसगढ़ बनने के 25 सालों में प्रभारी डीजीपी दो ही आईपीएस बने हैं। पहले अशोक जुनेजा और अब अरुणदेव गौतम। अशोक जुनेजा 11 महीने प्रभारी रहे मगर उसके बाद उनका पूर्णकालिक का आदेश आ गया था। नियमानुसार जिस दिन से मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर पूर्णकालिक डीजीपी बनाने का आदेश देता है, उस दिन से दो साल कार्यकाल मिलता है। जुनेजा को इसीलिए रिटायमेंट के बाद 11 महीने की सर्विस एक्स्ट्रा मिली। अरुण गौतम ने 13 महीने प्रभारी डीजीपी रहकर जुनेजा का रिकार्ड तोड़ दिया है। तुर्रा यह....गौतम घाटे में नहीं हैं, 13 महीने ये उनका बोनस है। जिस दिन वे पूर्णकालिक डीजीपी बनेंगे, उस दिन से उनका दो साल का मीटर घूमना शुरू होगा। मसलन, इस महीने मार्च में यदि वे पूर्णकालिक डीजीपी बन जाते हैं तो फिर वे अगले साल जुलाई 2027 में रिटायर नहीं होंगे। मार्च 2028 तक उनका कार्यकाल रहेगा। याने अरुणदेव नुकसान में नहीं हैं।

सत्र बाद बड़ी सर्जरी

विधानसभा के बजट सत्र के बाद कलेक्टरों की एक लिस्ट निकलेगी ही, एसपी लेवल पर बड़ी सर्जरी होगी। इसमें करीब आधे दर्जन से अधिक पुलिस अधीक्षकों का ट्रांसफर होगा। सात एसपी के डेढ़ से दो साल पूरे हो गए हैं। उन्हें इधर-से-उधर किया जाएगा। बलौदा बाजार की एसपी भावना गुप्ता प्रायवेट कारणों से लंबी छुट्टी पर जाने वाली है, वहां भी नया एसपी पोस्ट करना होगा। जिन पुलिस कप्तानों के ट्रांसफर की संभावनाएं हैं, उनमें रजनेश सिंह प्रशांत ठाकुर, शलभ सिनहा, सिद्धार्थ तिवारी, गौरव राय जैसे नाम हैं। सरकार को हालांकि, इस पर मशक्कत करनी होगी कि इन अधिकारियों को किस जिले में ट्रांसफर करें। इनमें कुछ नाम अच्छे हैं मगर उनकी सीनियरिटी के लायक जिला इस समय खाली नहीं है। सरकार को उसी में से कुछ गुंजाइश बनानी होगी।

डायरेक्ट आईपीएस, कोपभवन

कप्तानी में कभी डायरेक्ट आईपीएस अधिकारियों का दबदबा रहता था। पिछली सरकार तक दुर्ग से लेकर रायपुर, बिलासपुर, जांजगीर, रायगढ़ तक डायरेक्ट आईपीएस कप्तान रहे। मगर अब सिचुएशन 360 डिग्री में घूम गया है। रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, जांजगीर, रायगढ़, जशपुर जैसे बड़े जिलों में प्रमोटी आईपीएस एसपी हैं। यहां तक कि रायपुर पुलिस कमिश्नर की पोस्टिंग से उन्हें काफी उम्मीदें थी। लेकिन, वे हाथ मलते रह गए। इसके बाद असंतोष और गहरा गया है। आरआर याने डायरेक्ट आईपीएस अधिकारियों की इन दिनों बस एक ही गुहार...हमारी उपेक्षा हो रही। रायपुर पुलिस कमिश्नरेट में चार डायरेक्ट वाले डीसीपी बने हैं, वे भी खुश नहीं। उन्हें लगता है सीएसपी हो गए हैं। जिलों में कप्तान का जो जलवा होता है, वो रायपुर पुलिस कमिश्नरेट में कहां मिलेगा? उपर में संजीव शुक्ला और अमित कांबले जैसे अफसर उपर बैठ गए हैं। फिर कमिश्नरेट वाली ठसन भी नहीं है। छत्तीसगढ़ पुलिस ऐसी डिरेल्ड हुई है कि पहले जैसी ठसन आ भी नहीं सकती। पुलिस में जान फूंकने वाला कोई क्रांतिकारी आईपीएस अवतार लेगा, उसके बाद ही पुलिस का पुराना वैभव लौट पाएगा...मगर वो भी तब जब छत्तीसगढ़ के पॉलिटिशियन चाहेंगे। बहरहाल, इन परिस्थितियों में हो सकता है कि खाली होने वाले दो-एक जिलों में इस बार डायरेक्ट आईपीएस अफसरों को मौका मिल जाए।

नासमझ अफसर!

शराब से 1200 करोड़ का टारगेट पूरा करने का ये मतलब नहीं की कुछ भी कर दें। होली में शराब दुकान खोलने का मामला लगभग ऐसा ही रहा। जनवरी तक 867 करोड़ का ही रेवेन्यू आया है। दो महीने में 1200 करोड़ पहुंचाना था, बल्कि इससे क्रॉस होता तब वाहवाही मिलती। लिहाजा, होली के दिन दुकान ओपन रखने का आदेश जारी कर दिया। नासमझी की ये चरम स्थिति थी...सालों की सर्विस के बाद अफसरों को ये समझ नहीं आया कि होली और शराब का क्या रिश्ता है। महाराष्ट्र और साउथ के राज्यों में होली नहीं मनती। इसलिए वहां शराब दुकानें खुली रहती हैं। छत्तीसगढ़ में शराब दुकान बंद होने के बाद पुलिस वालों को लॉ एंड आर्डर में पसीना निकल जाता है। हालांकि, भारी विरोध के बाद बैकफुट पर आते हुए अफसरों ने फैसला बदला। मगर दुकानें खुली रहती तो इस होली को खून-खराबे के नाम पर याद किया जाता। क्योंकि, दुकानें बंद होने और पुलिस की तगड़ी चौकसी के बाद रायपुर जिले में शराब के नशे में 4 हत्याएं हो गई। जाहिर है, अफसरों को सिर्फ टारगेट के पीछे नहीं भागना चाहिए। आदेश वापिस लेने से सिस्टम पर भी सवाल खड़े हुए, जो कि सिर्फ अफसरों की वजह से हुआ।

सफलता का क्रेडिट

बस्तर में लाल आतंक के खात्मे का 90 फीसदी क्रेडिट केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को जाता है। उन्होंने जो कहा, उसे करके दिखाया। मगर बचे 10 परसेंट क्रेडिट सूबे में किसे मिलना चाहिए, इस पर असमंजस की स्थिति है। सिस्टम में बैठे अफसर और पुलिस मुख्यालय का यह दायित्व है कि क्रेडिट किसे दिलाया जाए। इसके लिए अहम पदों पर बैठे सरकार के रणनीतिकारों को फ्रंट पर आकर खेलना होगा। सरकार के दो साल पूरे होने के बाद भी अफसर अगर डिफेंसिव रहेंगे तो फिर औरा कायम नहीं हो पाएगा।

गुस्से में सीएम, और पब्लिक!

मीडिया में खबर है...छत्तीसगढ़ में सड़कों की दुर्दशा पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय पीडब्ल्यूडी के अफसरों पर बरस पड़े। अब बंद कमरे में क्या-क्या हुआ, इस बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं। मगर ये बात सही है कि सूबे की सड़कों की जर्जर स्थिति से पब्लिक भी खुश नहीं। भर्राशाही का आलम ये है कि सीएम के गृह जिलों की सड़कों पर पीडब्ल्यूडी का कोई ध्यान नहीं। मीटिंग में अफसरों की वर्किंग से सीएम काफी दुखी हुए। पीडब्ल्यूडी की मंथर गति के कई उदाहरण राजधानी रायपुर में भी है। कचना रेल ओवर ब्रिज का घिसट-घिसट कर चल रहे काम से दो लाख से ऊपर लोग तीन साल से त्रस्त हैं। मगर अफसरों की संवेदनशीलता हिलने-डुलने का नाम नहीं ले रही। सवाल उठता है बबूल के पौधे लगाने पर आम कैसे मिलेंगे। पिछली सरकार में जिस अफसर को लोगों का आक्रोश बढ़ने पर सस्पेंड किया गया, इस सरकार ने लाल जाजम बिछा न उसका स्वागत किया बल्कि विभाग का प्रमुख भी बना दिया। पता नहीं, उस अफसर में कौन सी वो खासियत कि पिछली सरकार के भी वे प्रिय रहे और अब इस सरकार के भी। जाहिर है, पिछली सरकार ने चुनाव से कुछ समय पहले दिखावे के लिए सस्पेंड किया था। कांग्रेस सरकार का काम न दिखने का एक बड़ा कारण सड़कों का खास्ता हाल भी रहा। लोगों ने सरकार को विदा कर दिया। बहरहाल, अगले चुनाव में सड़क और लॉ एंड आर्डर बड़ा मुद्दा बनने वाला है। लोगों ने बीजेपी को इसलिए वोट दिया कि इस सरकार में कम-से-कम सड़कों की दशा सुधर जाएगी। मगर आधा कार्यकाल खत्म होने वाला है, मुख्यमंत्री और पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर के जिले में आप जाएंगे तो माथा पकड़ लेंगे। ऐसे में, मुख्यमंत्री को भला गुस्सा क्यों नहीं आएगा। अब बात पब्लिक की...तो वह पांच साल में एक बार गुस्सा दिखाती है।

अंत में दो सवाल आपसे?

1. एक मिनिस्टर का नाम बताइये...बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पेनल में नाम आने के बाद उनका कांफिडेंस काफी बढ़ गया है?

2. लक्ष्मी वर्मा के राज्यसभा सदस्य बनने से राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा खुश होंगे दुखी?

पेज एक के शेष

महानदी में बैराज ...

कहा कि महानदी में बैराज निर्माण की योजना है, जिससे बारहों महीने पानी रहेगा और नौका विहार जैसी पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि राजिम-महासमुंद सड़क, राजिम-छुरा सड़क तथा राजिम से चौबेबांधा तक नदी किनारे फोर लेन सड़क स्वीकृत हो चुकी है। इसके अलावा कोपरा-पोखरा मार्ग और कोमा-पीपरछेड़ी मार्ग का निर्माण कार्य भी जारी है। वहीं इंद्रकुमार साहू ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में अभनपुर क्षेत्र में तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं और उनके क्षेत्र में दो नए कॉलेज सहित कई सड़क निर्माण कार्यों की स्वीकृति मिली है। दूसरी ओर जनक ध्रुव ने सिकासार जलाशय का पानी महासमुंद जिले के कुराड़ जलाशय तक ले जाने के प्रस्ताव पर आपत्ति जताते हुए कहा कि बिन्द्रानवागढ़ क्षेत्र को विकास से वंचित किया जा रहा है। पूर्व विधायक अमितेश शुक्ल ने अपने कार्यकाल के दौरान जतमई-घटारानी क्षेत्र के विकास और कोमा में 132 केवी सब स्टेशन की स्थापना का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे आज भी क्षेत्र के किसान लाभान्वित हो रहे हैं।

कल्प-कुंभ से ...

इस पर उन्होंने कहा कि वे पहले भी खुश थे और आज भी खुश हैं। उन्होंने कहा कि पहले वे "तालाब में तैरते थे, अब समुद्र में तैर रहे हैं", क्योंकि संसद देश की सबसे बड़ी पंचायत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय राजिम कुंभ को छोटा कर "मांझी पुन्नी मेला" बना दिया गया था, लेकिन मंत्री बनने के बाद उन्होंने इसे फिर से राजिम कुंभ (कल्प कुंभ) के रूप में स्थापित किया और इसकी पहचान देश-विदेश तक पहुंचाने का प्रयास किया। वहीं धनेंद्र साहू ने कहा कि रायपुर से ओडिशा तक रेल मार्ग की मांग वर्षों से की जा रही है, लेकिन अभी तक इस दिशा में ठोस पहल नहीं हुई है। पूर्व सांसद चंदूलाल साहू ने कहा कि जब वे 2003 में पहली बार विधायक बने, तब उन्होंने क्षेत्र में कई विकास कार्य कराए और कांग्रेस पर परिवारवाद की राजनीति करने का आरोप लगाया। विकास की बात : पांचवें सत्र में भाजपा जिला अध्यक्ष अनिल चंद्राकर (नवापारा), जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुखचंद बेसरा, नगर पालिका नवापारा अध्यक्ष ओमकुमारी साहू, गरियाबंद नगर पालिका अध्यक्ष रिखीराम यादव, नगर पालिका राजिम अध्यक्ष महेश यादव, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष नवापारा धनराज मधानी और जिला पंचायत सदस्य इंद्रजीत महादिक ने अपने विचार रखे और जिले के विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। रेत के अवैध उत्खनन पर सवाल : डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने कलेक्टर से जिले में रेत के अवैध उत्खनन को लेकर सवाल किया। इस पर कलेक्टर ने बताया कि शिकायत मिलने पर लगातार कार्रवाई की गई है। इसके अलावा स्वास्थ्य सुविधाओं और अन्य विकास कार्यों को लेकर भी सवाल पूछे गए, जिन पर कलेक्टर ने शासन की योजनाओं के तहत चल रहे कार्यों की जानकारी विस्तार से दी।

मां के संघर्ष और ...

होता है। ऐसे में मेरी धर्मपत्नी ने पूरा घर और परिवार संभाला। बच्चों की परवरिश से लेकर सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियां उन्होंने ही निभाईं। उनके सहयोग की वजह से मैं निश्चिंत होकर सार्वजनिक जीवन में काम कर पाया।

सवाल : मुख्यमंत्री के रूप में फैसले तो आप लेते हैं, लेकिन घर में फैसले कौन लेता है?

सीएमः घर में फैसले सामूहिक रूप से होते हैं। बड़े निर्णय हों तो परिवार के सभी सदस्य मिलकर फैसला करते हैं। हमारे घर में भी मां, पत्नी और भाई मिलकर निर्णय लेते हैं।

सवाल : आप इतने व्यस्त रहते हैं, ऐसे में परिवार और करियर के बीच संतुलन कैसे बनाते हैं?

सीएमः इस मामले में मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूं। मेरे परिवार की महिलाएं मुझे हमेशा प्रोत्साहित करती हैं और पूरा सहयोग देती हैं। उन्होंने घर-परिवार की जिम्मेदारी संभाल ली है, इसलिए मैं जनता के बीच जाकर काम कर पाता हूं।

सवाल : छत्तीसगढ़ को नक्सल मुक्त बनाने की दिशा में तेजी से काम हो रहा है। बस्तर की महिलाओं के लिए सरकार की क्या योजना है?

सीएमः बस्तर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर क्षेत्र है। लेकिन दुर्भाग्य से वहां लंबे समय तक नक्सलवाद का असर रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की नीतियों के कारण अब छत्तीसगढ़ नक्सलवाद से मुक्ति की ओर बढ़ रहा है। हमारी सरकार ने 'नियद नेल्लानार योजना' शुरू की है, जिसके माध्यम से बस्तर के गांवों तक सरकारी योजनाएं पहुंचाई जा रही हैं। वहां घर, बिजली, पानी और सड़क जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। आत्मसमर्पित महिला नक्सलियों के पुनर्वास के लिए भी काम किया जा रहा है।

सवाल : आत्मसमर्पित नक्सलियों को विधानसभा की कार्यवाही दिखाने को आप कितनी बड़ी उपलब्धि मानते हैं?

सीएमः यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। करीब 120 आत्मसमर्पित नक्सली विधानसभा पहुंचे और उन्होंने देखा कि लोकतंत्र कैसे काम करता है। यह संविधान के प्रति उनके विश्वास को दर्शाता है। अब छत्तीसगढ़ नक्सलवाद के नहीं, बल्कि विकास और पर्यटन के लिए जाना जाएगा।

सवाल : आपकी सरकार की योजनाओं में महिलाओं को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है, इसके पीछे क्या सोच है?

सीएमः मेरे जीवन में मां और पत्नी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैंने राजनीति में देखा कि जब महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत होती हैं तो पूरा परिवार और समाज आगे बढ़ता है। इसी सोच के साथ हमने महतारी वंदन योजना और लखपति दीदी योजना शुरू की है। छत्तीसगढ़ में अब तक आठ लाख महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं और हमारा लक्ष्य दस लाख महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है।

सवाल : प्रधानमंत्री की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पहल का छत्तीसगढ़ में क्या असर दिख रहा है?

सीएमः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच है कि बेटी को बोझ न समझा जाए। छत्तीसगढ़ में खासकर जनजातीय समाज में बेटी के जन्म पर खुशी मनाई जाती है। हमारी सरकार नारी सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और राजधानी रायपुर में पुलिस कमिश्नरी लागू होने के बाद अपराधों में कमी आई है।

सवाल : आपके सार्वजनिक जीवन में आपकी पत्नी की क्या भूमिका रही? सीएमः पिछले कई वर्षों से मेरी व्यस्तता बहुत बढ़ गई है। अब मैं अपने लिए कपड़े भी खुद नहीं खरीद पाता। मेरी पत्नी ही यह जिम्मेदारी निभाती हैं। मेरी अनुपस्थिति में वे सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियां भी संभालती हैं।

सवाल : क्या उन्होंने कभी राजनीति में आने की इच्छा जताई?

सीएमः नहीं, उन्होंने कभी राजनीति में आने की इच्छा नहीं जताई। वे सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों से जुड़ी रहती हैं।

सवाल : राजनीति में कौन-सी महिलाएं आपकी प्रेरणा रही हैं?

सीएमः जब मैंने राजनीति शुरू की तो सुषमा स्वराज और राजमाता विजयाराजे सिंधिया जैसी नेताओं से प्रेरणा मिली। वे जनसेवा के लिए दूर-दूर तक जाती थीं।

सवाल : बस्तर ओलंपिक के जरिए महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं?

सीएमः हमारे जनजातीय समाज में खेलों के प्रति बहुत उत्साह है। बस्तर ओलंपिक के माध्यम से खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ का नाम रोशन करें।

सवाल : छत्तीसगढ़ के विकास को लेकर आपका विजन क्या है?

सीएमः प्रधानमंत्री का लक्ष्य है कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाया जाए। इसी लक्ष्य के साथ हम भी विकसित छत्तीसगढ़ का विजन तैयार कर रहे हैं और 10 प्रमुख मिशनों पर काम कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में महिला...

का गठन हुआ। उन्हें प्रशिक्षण और आर्थिक सहयोग मिला। आज स्थिति बदल चुकी है। जनधन योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना और महतारी वंदन योजना जैसी योजनाओं से महिलाओं को बहुत लाभ मिला है।

छत्तीसगढ़ में केवल ...

दो महिला डॉक्टर प्रदेश से बाहर : छत्तीसगढ़ में डॉ. मधुलिका के साथ एक अन्य महिला डॉक्टर ने भी इस विषय में पढ़ाई पूरी की थी, लेकिन बाद में वे मध्यप्रदेश में सेवाएं देने चली गईं। इसके अलावा प्रदेश के एक वरिष्ठ आर्थोपेडिक सर्जन की पुत्री भी इसी विषय में मध्यप्रदेश से पढ़ाई कर रही हैं। प्रदेश के 10 शासकीय मेडिकल कॉलेजों में आर्थोपेडिक विभाग में पीजी की सीटें हैं और इनकी मांग भी काफी अधिक है। इसके बावजूद महिलाओं की संख्या यहां बेहद कम दिखाई देती है। **दूसरे राज्यों में स्थिति बेहतर** : ऑल इंडिया आर्थोपेडिक एसोसिएशन के प्रेसीडेंट डॉ. नवीन ठाकुर के अनुसार महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में महिला आर्थोपेडिक सर्जनों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। बदलते समय के साथ चिकित्सा क्षेत्र में नई तकनीक और उपकरणों के आने से महिलाओं की भागीदारी बढ़ने की संभावना है। राज्य आर्थोपेडिक एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत द्विवेदी के मुताबिक हड्डी रोग के इलाज में कई बार कठिन और असहज परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, इसलिए महिला डॉक्टर इस विषय को कम चुनती हैं।

चुनौती स्वीकार कर ...

चुनौती स्वीकार की। उनके अनुसार अस्थि रोग के इलाज में ड्रिलर, कटर जैसे औजारों का इस्तेमाल होता है और कई बार खून तथा जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि कई लोग इस विषय को चुनने से हिचकते हैं, लेकिन अगर रुचि हो तो यह क्षेत्र बेहद संतोष देने वाला है।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा।

:: शुद्धि –पत्र ::

इस कार्यालय के पत्रांक 2010 दिनांक 17.11.2025 द्वारा प्रकाशित अति अल्पकालीन ई– निविदा सूचना सं० **RDD/SD/CHAIBASA/12/2025-26 के** समूह संख्या 01 को अपरिहार्य कारणों से स्थगित किया जाता है। जिसका **PR No. 366170 West Singhbhum(25-26)_D** है।

ह०/–
कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल,
प० सिंहभूम चाईबासा

PR 374365 (West Singhbhum) 25-26 (D)

ई-नीलामी सूचना

भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड, पोस्ट ऑफिस - बाल्को नगर, कोरबा, छत्तीसगढ़, इंडिया- 495684 से जुड़े खराब साल्वेज "ब्रेकडाउन डैमेज्ड ESP (इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रीसिपिटेटर) और FF (फैब्रिक फिल्टर) हॉपर स्क्रैप (लॉट)" के डिस्पोज़ल के लिए, इच्छुक खरीदारों से ई-ऑक्शन फॉर्म मंगाए गए हैं। ये फॉर्म पूरी तरह से "जैसा है, जहां है" के आधार पर, 'लॉट बेसिस' पर होंगे।

निरीक्षण और ईएमडी जमा करने की अंतिम तिथि - 21/03/2026, ई-नीलामी 23/03/2026 को सुबह 11:00 बजे आयोजित की जाएगी। ई-नीलामी फॉर्म के लिए श्री अमन सिंह से संपर्क करें मोबाइल: +91- 8826079263

ऑक्शन एक्सप्रेस प्राइवेट लिमिटेड (नीलामीकर्ता)

अधिक जानकारी के लिए :
www.auctionexpress.in

पूर्व तट रेलवे

सामग्रियों की आपूर्ति

(1) निविदा सं. 30257203A, दिनांक: 27.02.2026

कार्य का नाम : आपूर्ति की तिथि के बाद से 30 महीने वारंटी अवधि के साथ वाइड बेस कर्व PSC स्लीपर (RT-8979-8982) के लिए कर्व चेक रेल (RT-8985) हेतु CI ब्रेक की आपूर्ति, मात्रा : 39332 संख्यक।

(2) निविदा सं. 30265150, दिनांक: 27.02.2026

कार्य का नाम : ट्रैक रख-रखाव के लिए ब्रॉड गेज हेतु इलेक्ट्रोनिक ट्रैक एवं टर्नआउट गेज की आपूर्ति, मात्रा : 139 संख्यक।

वारंटी अवधि : डिलीवरी की तिथि के बाद से 30 महीने (दोनों निविदा के लिए), TPI एजेंसी द्वारा निरीक्षण (दोनों निविदा के लिए)।

द्रष्टव्य : सामग्री 120 दिन (क्रम सं. 1 हेतु) एवं 90 दिन (क्रम सं. 2 हेतु) के भीतर आपूर्ति की जानी चाहिए।

निविदा खुलने की तिथि एवं समय : दिनांक 30.03.2026 को 1500 बजे (दोनों निविदा हेतु)।

संपूर्ण जानकारी वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।

वरिष्ठ मण्डल सामग्री प्रबंधक/वाल्टियर

PR-1193/Q/25-26

आम सूचना

वाके मौजा- मनहोरा, प.ह.नं.04, रा.नि.मं. रायपुर-15, धरसींवा, तहसील-धरसींवा, जिला रायपुर छ.ग. में स्थित पैतृक कृषि भूमि के विवादित होने से राजस्व न्यायालय एवं सिविल न्यायालय में प्रकरण लंबित रहने से क्रय-विक्रय का संव्यवहार नहीं किये जाने बाबत

एतद् सर्वसाधारण को सूचित किया जा रहा है, कि वाके मौजा मनहोरा, प.ह.नं. 04, रा.नि.मं. रायपुर-15, धरसींवा, तहसील-धरसींवा, जिला रायपुर छ.ग. में स्थित पैतृक कृषि भूमि जिसका खसरा नंबर 134/1, 134/5, 143/1, 148/3, 153/2, 181/5, 184/1, 202, 285/1, 285/4 शामिल खसरा 348/1 खसरा नंबर 348/4 शामिल खसरा नंबर 279/3, 401/3, 403/7, रकबा क्रमशः 0.1380, 0. 1210, 0.2430, 0.1780, 0.1610, 0.850, 0.4940, 0.3760, 0.0490, 0. 1010, 0.2920, 0.2430, 0.1820 हे. भूमि जो कि काशीराम पिता तुलराम के नाम पर राजस्व अभिलेखों में दर्ज रहा है, उक्त भूमि पैतृक भूमि है, जिस पर मेरे पक्षकारगण श्रीमती निर्मला साहू, श्रीमती रेखा साहू, रेणुका साहू, चंपा साहू व श्रीमती सुनीता साहू, जो कि उनकी पुत्री होने से उक्त भूमि पर हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम की धारा 6 के अनुसार उनका बराबर हक व हिस्सा होने के बावजूद उक्त भूमि के संबंध में उनके पुत्र स्व. अर्जुनलाल साहू की पत्नी श्रीमती अंजु साहू के द्वारा अपने पुत्र भूपेन्द्र साहू व नाबालिग शेष नारायण के पक्ष में श्री काशीराम के वृध्दावस्था एवं अस्वस्थ अवस्था में उन्हें बहला-फुसलाकर पृथक पृथक पंजीकृत दान पत्र का निष्पादन करा लिया गया है, उक्त भूमि के पैतृक भूमि होने के आधार पर नायब तहसीलदार धरसींवा के द्वारा उपरोक्त वर्णित मेरे पक्षकारगण का नाम तथा स्व. अर्जुनलाल साहू के वारिसान उनकी पत्नी एवं उनके दोनों पुत्रों का नाम संयुक्त रूप से राजस्व अभिलेखों में दर्ज किये जाने का आदेश पारित किया गया। तत्पश्चात राजस्व अभिलेखों में मेरे पक्षकारगण का नाम संयुक्त स्वामी बतौर दर्ज हुआ। भूपेश साहू एवं नाबालिग शेष नारायण साहू के द्वारा माननीय नायब तहसीलदार धरसींवा के द्वारा पारित आदेश को माननीय अनुविभागीय अधिकारी राजस्व के समक्ष अपील प्रस्तुत कर चुनौती दिया गया है, जिस पर माननीय अनुविभागीय अधिकारी के द्वारा उनके अपील को स्वीकार किया गया है। अनुविभागीय अधिकारी रायपुर के आदेश को मेरे पक्षकारगण के द्वारा माननीय आयुक्त महोदय रायपुर के समक्ष अपील प्रस्तुत कर चुनौती दिया गया है तथा माननीय अनुविभागीय अधिकारी के आदेश के क्रियान्वयन को रोक लगाये जाने हेतु स्थगन आवेदन प्रस्तुत किया गया है, जिस पर माननीय आयुक्त महोदय के द्वारा दिनांक 05/01/2026 एवं 04/02/2026 को 30 दिन व 30 दिन की अवधि हेतु स्थगन आदेश प्रदान किया गया है। उक्त स्थगन आदेश पारित होने के पश्चात भूपेन्द्र साहू एवं शेष नारायण साहू के द्वारा हल्का पटवारी से सांठ गांठ कर मेरे पक्षकारगण का नाम विलोपित करवाकर ऋण पुस्तिका प्राप्त कर लिया गया है। मेरे पक्षकारगण को यह जानकारी प्राप्त हुआ है, कि उनके द्वारा अपना नाम दर्ज कराने के पश्चात उक्त भूमि को अन्य व्यक्ति को विक्रय करने का प्रयास किया जा रहा है।

अतः आम जनता को ताकिद किया जा रहा है, कि उपरोक्त वर्णित पैतृक कृषि भूमि जिस पर मेरे पक्षकारगण का बराबर हक व हिस्सा है तथा उक्त भूमि के संबंध में राजस्व न्यायालय एवं सिविल न्यायालय में वाद लंबित होने से भूपेन्द्र साहू, शेष नारायण साहू व उनके द्वारा अधिकृत व्यक्ति से क्रय-विक्रय का संव्यवहार न करें, यदि ऐसा किया जाता है, तो उक्त संव्यवहार अवैध होने से मेरे पक्षकारगण पर बंधनकारी नहीं होगा। **सो सूचना जाने।**

रायपुर छ.ग.
दिनांक 07/03/2026

भवदीय
अखिलेश कुमार शर्मा, अधिवक्ता
पता-लीली चौक, बरई मंदिर के बाजू, पुरानीबस्ती, रायपुर छ.ग.
मो. नं. 8120975320

न्यायालय तहसीलदार तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर (छ.ग.)

// ईश्तहार //

क्रमांक / 202510115200001/अ-27
वर्ष 2025-2026
ग्राम-टेकारी उर सरारीडीह प.ह.नं. 26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक ध्रुव कुमार धीवर पिता श्यामलाल निवासी सरारीडीह वगैरह के नाम पर सयुक्त खाते में दर्ज भूमि कुल खसरा नंबर 08 कुल रकबा 0.4900 हे. का सातः बराबर बराबर भागो में तैयार किया है। उक्त संबंध मे हल्का पटवारी से फर्द बंटवारा सूची प्राप्त हुआ है जो निम्नगुनसार है-

पक्षकार-01- भागीरथी, सरस्वती पिसरान कुमार, जिवरानी पति कुमार, खसरा नं.- 649/2 का भाग, 730 का भाग, 788/2 का भाग,1360 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग,2476 का भाग, 3227/1 का भाग, **कुल खसरा** -08 रकबा- 0.005, 0.008, 0.001, 0.015, 0.012, 0.003, 0.004, 0.022, **कुल रकबा** - 0.0700, लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 02- धुब कुमार- **खसरा नं.-** 649/2का भाग, 730 का भाग,788/2 का भाग, 1360 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग **कुल खसरा -08 रकबा-** 0.005, 0.008, 0.001, 0.015, 0.012, 0.003, 0.004, 0.024, **कुल रकबा 0.0700**, लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 03- कुमारी पिता श्यामलाल, -खसरा नं.- 649/2 का भाग, 730 का भाग, 788/2 का भाग,1360 का भाग 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग **कुल खसरा -08** रकबा- 0.005, 0.007, 0.001, 0.015, 0.012, 0.003, 0.004, 0.023, **कुल रकबा**- 0.0700 0.18 लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 04- प्यारी पिता श्यामलाल- खसरा नं. 649/2का भाग, 730 का भाग, 788/2 का भाग, 1360 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग, **कुल खसरा**-08, **रकबा**- 0.005, 0.008, 0.002, 0.015, 0.012, 0.003, 0.004, 0.021, **कुल रकबा** 0.0700 लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 05- धानबाई पिता श्यामलाल- खसरा नं.- 649/2 का भाग, 730 का भाग, 788/2 का भाग, 1360 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग, **कुल खसरा** -08 रकबा- 0.005, 0.008, 0.001, 0.015, 0.012, 0.002, 0.004, 0.023, **कुल रकबा** 0.0700 लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 06- धनमत पिता श्यामलाल- खसरा नं.- 649/2का भाग, 730 का भाग, 788 /2 का भाग, 1300 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग, **कुल खसरा**-08, रकबा- 0.005, 0.008, 0.001, 0.010, 0.012, 0.003, 0.004, 0.022, **कुल रकबा**- 0.0700 लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

पक्षकार 07- उमा पिता श्यामलाल- खसरा नं.- 649/2का भाग, 730 का भाग, 788/2 का भाग, 1360 का भाग, 2391 का भाग, 2412 का भाग, 2476 का भाग, 3227/1 का भाग, **कुल खसरा**-08 रकबा 0.003, 0.008, 0.001, 0.015, 0.013, 0.003, 0.004, 0.023, **कुल रकबा**- 0.0700 लगान- 0.18, **कुल लगान** - 0.18

हल्का पटवारी से प्राप्त उक्त फर्द बटवारा सूची के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को दावा / आपत्ति यदि हो तो यह स्वयं या अभिभाशक या अपने विधिमान्य अभिकर्ता के द्वारा अपना दावा/आपत्ति दिर्नाक 11.03.2026. तक प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथी बाद प्राप्त दावा / आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 24.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के सील मुहर से जारी किया गया।

(मुहर) **तहसीलदार तिल्दा नेवरा**

केन्द्रीय विद्यालय एसईसीएल चिरमिरी

साक्षात्कार (Walk-In-Interview)

केंद्रीय विद्यालय चिरमिरी में सत्र 2026-27 हेतु विभिन्न पदों पर संविदा/अंशकालिक (Part-Time Contractual) आधार पर नियुक्ति के लिए साक्षात्कार का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक अभ्यर्थी अपने मूल प्रमाण पत्रों, उनकी स्वप्रमाणित छायाप्रतियों तथा दो नवीनतम पासपोर्ट आकार के छायाचित्रों सहित निर्धारित तिथि एवं समय पर विद्यालय परिसर में उपस्थित हों।

क्र.	पदों का विवरण	साक्षात्कार का तिथि एवं समय	पता
1	स्नातकोत्तर शिक्षक (PGT) -हिन्दी, अंग्रेजी, भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, जीव-विज्ञान, कंप्यूटर साइंस, वाणिज्य, गणित, अर्थशास्त्र	**दिनांक 19.03.2026 प्रातः 10:00 बजे दिन - गुरुवार**	केन्द्रीय विद्यालय चिरमिरी, पोस्ट - सोनावनी, डोमनहिल, चिरमिरी, जिला: मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (छ.ग.), पिन - 497557
2	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (TGT) -हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं संस्कृत		गूगल फॉर्म लिंक: https://forms.gle/ikfnChMET9PSZYUL7
3	प्राथमिक शिक्षक (PRT)		
4	अन्य-खेलकूद प्रशिक्षक, योगा अनुदेशक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) शिक्षक, कंप्यूटर अनुदेशक, विशिष्ट शिक्षक (Special Educator), नर्स, डांस कोच, काउंसलर		
पंजीकरण-आवेदन ऑफलाइन माध्यम से केंद्रीय विद्यालय, एसईसीएल चिरमिरी में किसी भी कार्यदिवस पर तथा ऑनलाइन माध्यम से गूगल फॉर्म के द्वारा किया जा सकता है। पंजीकरण अवधि: 10.03.2026 से 18.03.2026 तक			

महत्वपूर्ण निर्देश: 1. साक्षात्कार में भाग लेने हेतु कोई भी यात्रा भत्ता देय नहीं होगा। 2. वेतन केंद्रीय विद्यालय संगठन (KVS) के नियमानुसार देय होगा। पदों की शैक्षणिक योग्यताओं एवं अन्य जानकारी के लिए विद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट https://seclchirimiri.kvs.ac.in देखें। 3. सभी पद संविदा/अंशकालिक (Part-Time Contractual) आधार पर हैं, अतः नियमित नियुक्ति हेतु कोई दावा मान्य नहीं होगा। 4. हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों में पढ़ाने की योग्यता तथा कंप्यूटर संचालन का कार्यसाधक ज्ञान आवश्यक है। 5. अभ्यर्थियों का चयन न्यूनतम योग्यताओं की पूर्ति, साक्षात्कार में प्रदर्शन तथा के.वि.सं. (KVS) की अद्यतन मार्गदर्शिका के अनुसार किया जाएगा। विस्तृत जानकारी हेतु www.kvsangathan.nic.in का अवलोकन करें। 6. साक्षात्कार के लिए अभ्यर्थियों का प्रातः 08:00 बजे से 10:00 बजे तक ही पंजीकरण किया जाएगा। निर्धारित समय के बाद आने वाले अभ्यर्थियों को साक्षात्कार में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। 7. यदि अभ्यर्थियों की संख्या अधिक होती है, तो विद्यालय द्वारा लिखित परीक्षा आयोजित की जा सकती है।

प्राचार्य

शब्द पहेली - 6158

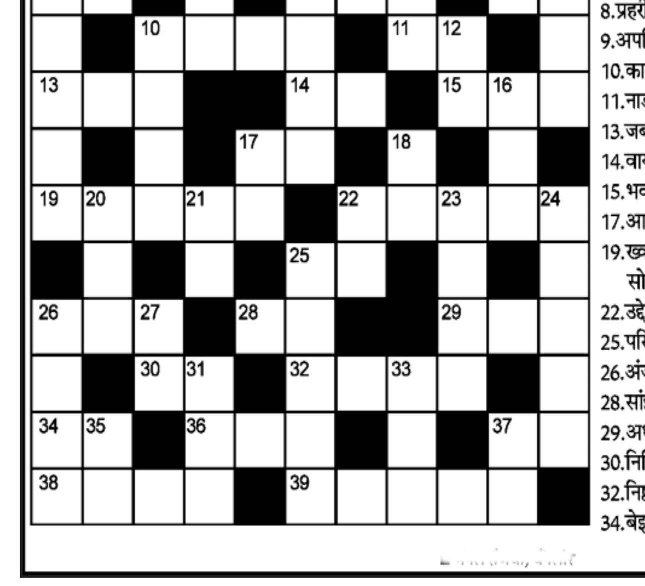

बाएँ से दाएँ

1.राजीव गांधी की पत्नी का नाम-3,2
4.उदारता,बडप्पन-4
7.भोजन,खाद्य पदार्थ-2
8.प्रहरी,रक्षा करने वाला-3
9.अपशिष्ट पदार्थ-2
10.कामदेव,चंद्रमा-4
11.नाड़ी,नस-2
13.जबरन,जबरदस्ती-3
14.वायदा,वचन-2
15.भवन,आलय-3
17.आर्ट,हुनर-2
19.ख्वाबगाह, आरामगाह, सोने का कमरा-5
22.उद्देश्यहीनता-5
25.परिणाम-2
26.अंजन,नेत्रांजन-3
28.सांझ,संध्या-2
29.अधीन-3
30.निश्चित-2
32.निष्ठावान,सत्तानिष्ठ-4
34.बेइमान,सेंधमार-2
36.दाम,मूल्य-3
37.एक छोटी सवारी गाड़ी-2
38.मुस्लिम कैलेंडर का एक महीना-4
39.अश्रु,आंसू-5

ऊपर से नीचे

1.स्वर्ण,कनक-2
2.गुजर करना-3
3.धैर्यवान-3,2
4.राशिचक्र की एक राशि-3
5.आंशिक भीगा हुआ-2
6.सामंजस्य-4
7.यायावर,बंजारा-5
10.चुनाव,वोटिंग-4
12.दुख,कष्ट-2
16.यज्ञ,होम-3
17.कमरा,रूम-2
18.उम्मीद,आस-2
20.जुड़वा-3
21.प्याला-2
22.हृदय,हार्ट-2
23.निकृष्टतर-4
24.बलवान,दमदार-5
25.स्वदेशवासी-5
26.आलसी,निठल्ली-4
27.बुरी आदत-2
31.भरोसा,विश्वास-3
33.आंचल,पल्लू-3
35.अंग्रेजी शराब का एक प्रकार-2
37.समय, वक्त-2

शब्द पहेली -6157 का हल

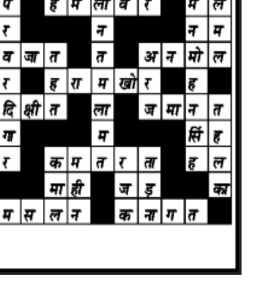

सूडोकु नवताल - 6168

★★★★★ कठिनतम

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

MANGAL SENACHA, BANGALORE

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल- 6167 का हल

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

{ **कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम** }

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गईं कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल की जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

{ **बदलाव / अपराजिता** }

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं।

दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

{ **कविता** ..... **कुसुम अग्रवाल** }

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

{ **लघुकथाएं** }

सपनों की उड़ान

'तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

एआई इमेज

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं!

'शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

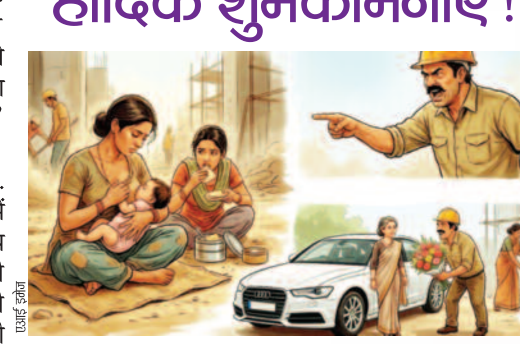
एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

'आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

{ **पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण** }

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं,
संपादन: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

खबर संक्षेप

फिट इंडिया का अंतरराष्ट्रीय महिला कार्निवल शुरू

नई दिल्ली। फिट इंडिया मूवमेंट ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में शनिवार से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्निवल शुरू किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आठ मार्च को मनाया जाता है। इस कार्यक्रम की थीम 'मजबूत महिलाएं, मजबूत राष्ट्र' है। इसमें सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस और दिल्ली पुलिस जैसे भारत के सशस्त्र बलों और सुरक्षा सेवाओं से जुड़ी 500 से अधिक महिलाएं भाग ले रही हैं। इसमें फिटनेस गतिविधियों और खेलों के माध्यम से महिलाओं की ताकत, लचीलेपन और नेतृत्वक्षमता को उजागर किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की शुरुआत में कई प्रख्यात हस्तियों ने भाग लिया और फिटनेस, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण पर अपने विचार रखे।

शीतकालीन पैरालंपिक खेल शुरू, रूसी ध्वज की वापसी

वेरोना। मध्य पूर्व में बढ़ते युद्ध के तनाव के बीच मिलान कोर्टिना शीतकालीन पैरालिंपिक खेल शुरू हो गए, जिसमें कुछ देशों ने वैश्विक खेल मंच पर रूसी ध्वज की वापसी के कारण उद्घाटन समारोह का बहिष्कार किया। उद्घाटन समारोह में इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले राष्ट्रों की परेड में रूस के ध्वज की वापसी हुई। इससे लॉस एंजिलिस में 2028 में होने वाले ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों से पहले रूस की ओलंपिक जगत में पूर्ण वापसी की संभावना बढ़ गई है। परेड के दौरान रूस के खिलाड़ी मंच पर आए तो कुछ दर्शकों ने उनकी हूटिंग की। चमकीले लाल रंग की पोशाक पहने चार खिलाड़ियों ने रूस का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने एरिना डि वेरोना में परेड करते हुए दर्शकों का अभिवादन किया। रूस के 2022 में यूक्रेन पर हुए आक्रमण के बाद पहली बार किसी बड़ी वैश्विक खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने पर उसका राष्ट्रगान बजाया जा सकता है।

टी20 विश्व कप : भारत और कीवी टीम के बीच फाइनल मुकाबला आज शाम 7 बजे से

इतिहास रचने के लिए टीम इंडिया को पार करनी होगी न्यूजीलैंड की मुश्किल बाधा

एजेंसी ▶▶| अहमदाबाद

बेहद प्रतिभाशाली और लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाली भारतीय टीम पर न्यूजीलैंड के खिलाफ रविवार को होने वाले टी20 विश्व कप के फाइनल में इतिहास रचने की उम्मीदों का बोझ होगा, भले ही सूर्यकुमार यादव की अगुवाई वाली टीम का पलड़ा भारी माना जा रहा है। दुनिया के सबसे बड़े स्टेडियमों में से एक नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में भारत को 19 नवंबर 2023 को बड़ा झटका लगा था जब वह ऑस्ट्रेलिया से वनडे विश्व कप का फाइनल हार गया था। तब भारत ने भावुक नम आंखों वाले रोहित शर्मा को ड्रेसिंग रूम की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखा था। केवल भारतीय टीम ही नहीं बल्कि स्टेडियम में मौजूद 93000 दर्शक भी सन्न रह गए थे। भारत ने हालांकि 2024 में रोहित शर्मा की कप्तानी में टी20 विश्व कप जीतकर इसकी काफी हद तक भरपाई कर दी थी। अब खेल के सबसे छोटे प्रारुप की भारतीय टीम सूर्यकुमार की कप्तानी में खिताब का बचाव करने और इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी को तीन बार जीतने वाली पहली टीम बनने की कोशिश करेगी।

भारत को टूर्नामेंट में मिला किस्मत का साथ

भारत को अब तक इस टूर्नामेंट में किस्मत का साथ मिला है। अगर वह खिताब जीत जाता है तो उन्हें सराहना मिलेगी लेकिन अगर वह हार जाते हैं तो फिर बहुत बड़ा बवाल मच सकता है। सूर्यकुमार ने पिछले दो वर्षों में टीम का बहुत अच्छी तरह से नेतृत्व किया है, भले ही एक बल्लेबाज के रूप में वह उम्मीदों पर पूरी तरह खरा नहीं उतर पाए। रविवार का दिन उनके करियर के लिए निर्णायक क्षण होगा। अगर उनकी टीम खुशगवार मौसम में अच्छा प्रदर्शन करती है तो उनकी सारी नाकामियां पल भर में भुला दी जाएंगी।

भारत के लिए न्यूजीलैंड की चुनौती आसान नहीं

भारत के लिए न्यूजीलैंड की चुनौती आसान नहीं होगी क्योंकि किसी भी दिन फिन एलन, लॉकी फर्ग्यूसन या मैट हेनरी जैसे खिलाड़ी अपनी क्षमता से कहीं बेहतर प्रदर्शन करना जानते हैं। मिचेल सैंटनर या ग्लेन फिलिप्स जैसे खिलाड़ी जानते हैं कि एक मजबूत टीम के खिलाफ किस तरह से चुनौती का सामना करना होता है। न्यूजीलैंड के लिए सबसे बड़ा खतरा 'अहमदाबाद का सरदार' होगा। इस सरदार का नाम जसप्रीत बुमराह है।

टीमें इस प्रकार

भारत : सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), इशान किशन, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, वरुण चक्रवर्ती, अर्शदीप सिंह, रिंकू सिंह, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, वाशिंगटन सुंदर।

न्यूजीलैंड: मिचेल सैंटनर (कप्तान), फिन एलन, टिम सीफर्ट, रचिन रविंद्र, मार्क चैपमैन, ग्लेन फिलिप्स, डैरिल मिचेल, मैट हेनरी, लॉकी फर्ग्यूसन, कोल मैककॉन्ची, काइल जैमीसन, जैकब डफी, डेवोन कॉनवे, जिमी नीशम, इश सोढ़ी।

टी20 विश्व कप

न्यूजीलैंड से मिली टीम इंडिया को दिल तोड़ने की चेतावनी

एजेंसी ▶▶| अहमदाबाद

न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल सैंटनर ने कहा कि जब दुनिया युद्ध की विभीषिका झेल रही है तब उनकी टीम रविवार को यहां होने वाले टी20 विश्व कप में करोड़ों भारतीयों के दिल को तोड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार है। सैंटनर वर्तमान समय के अन्य कप्तानों की तरह जोशीले नहीं हैं और ना ही वह मजाक करते हैं लेकिन उनकी हाजिरजवाबी से दर्शक ठहाके लगा देते हैं।

न्यूजीलैंड पिछले 11 वर्षों में पांच बार आईसीसी के किसी टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचा है लेकिन उसे दूसरे स्थान से ही संतोष करना पड़ा। सैंटनर ने कहा , 'हम मैदान पर उतरते हैं और एक टीम के रूप में अपना काम करते हैं। इस बार भी इसमें कोई बदलाव नहीं आएगा। निश्चित रूप से यह एक चुनौती होगी, क्योंकि हर कोई जानता है कि हम शायद जीत के प्रबल दावेदार नहीं हैं। हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ट्रॉफी जीतने के लिए कुछ लोगों का दिल तोड़ने में मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।'

उन्होंने कहा, ' यह कहना आसान है कि यह बस एक और मैच की तरह है लेकिन हर कोई जानता है कि ऐसा नहीं है। इसके लिए आपकी अच्छी रणनीति और तैयारी होनी चाहिए।' सैंटनर ने कहा, 'विशेषकर टी20 क्रिकेट में कुछ ही पलों में पासा पलट जाता है। इन पलों में आप विपक्षी टीम पर दबाव बना सकते हैं या उनका फायदा उठा सकते हैं। मुझे लगता है कि हमने हाल के मैचों में यही देखा।'

टीम की हर रणनीतिक चर्चा में बुमराह का नाम आना स्वाभाविक

न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल सैंटनर ने कहा कि भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप के फाइनल से पहले जसप्रीत बुमराह जैसी काबिलियत वाले गेंदबाज का नाम उनकी टीम की रणनीतिक चर्चाओं में आना स्वाभाविक है। बुमराह इस टी20 विश्व कप में शानदार फॉर्म में हैं और सेमीफाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ उनके डेथ ओवर के प्रदर्शन को अब तक की यादगार गेंदबाजी में गिना जा रहा है। सैंटनर ने कहा, 'बुमराह, मुझे लगता है कि वह जिस तरह से खेल रहे हैं, उनका नाम हर चर्चा में होना चाहिए। इंग्लैंड के खिलाफ उनकी गेंदों को हिट करना काफी मुश्किल लग रहा था। और निश्चित रूप से वह भारत के लिए 'गेम चेंजर' (मैच का रूख बदलने वाले' थे। ' लेकिन सैंटनर ने साथ ही चेतावनी भी दी कि केवल बुमराह पर ध्यान देना मूर्खतापूर्ण होगा क्योंकि कई भारतीय खिलाड़ी अलग-अलग मैचों में अहम भूमिका निभा चुके हैं।

पिंक बॉल टेस्ट : ऑस्ट्रेलिया ने की अपनी पकड़ मजबूत, भारत ने गंवाए 6 विकेट

एजेंसी ▶▶| पर्थ

भारत के खिलाफ वाका ग्राउंड पर जारी इकलौते डे-नाइट टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया की महिला क्रिकेट टीम ने अपनी पकड़ मजबूत कर ली है। टीम इंडिया दूसरे दिन की समाप्ति तक 6 विकेट खोकर सिर्फ 105 रन ही बना सकी है। फिलहाल मेजबान ऑस्ट्रेलिया के पास पहली पारी के आधार पर 20 रन की लीड शेष है।

टॉस गंवाकर बल्लेबाजी के लिए उतरी भारतीय टीम पहली पारी में सिर्फ 198 रन पर सिमट गई। भारत की ओर से इस पारी में जेमिमा रोड्रिगेज ने 84 गेंदों में 7 चौकों की मदद से 52 रन की पारी खेली, जबकि शेफाली वर्मा ने 35 रन और काश्वी गौतम ने नाबाद 34 रन टीम के खाते में जोड़े। विपक्षी खेमे से एनाबेल सदरलैंड ने सर्वाधिक 4 विकेट हासिल किए, जबकि लूसी हैमिल्टन ने 3 विकेट निकाले। 2 विकेट डार्सी ब्राउन के हाथ लगे। 1 विकेट एश्ले गार्डनर ने अपने नाम किया। इसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने 323 रन बनाकर पहली पारी के आधार पर 125 रन की शानदार बढ़त हासिल कर ली। कप्तान एलिस पेरी ने एनाबेल सदरलैंड के साथ चौथे विकेट के लिए 128 रन की साझेदारी की, जिसके बाद सदरलैंड ने बेथ मूनी के साथ पांचवें विकेट के लिए 54 रन जुटाए। एलिस पेरी 11 बाउंड्री के साथ 76 रन बनाकर आउट हुईं, जबकि बेथ मूनी ने 19 रन का योगदान टीम के खाते में दिया। सदरलैंड ने 171 गेंदों में 17 चौकों के साथ 129 रन बनाकर टीम को शानदार बढ़त दिलाने में अहम भूमिका निभाई। भारत की तरफ से सायली सतघरे ने सर्वाधिक 4 विकेट निकाले। क्रांति गौड़ और दीप्ति शर्मा ने 2-2 विकेट हासिल किए। स्नेह राणा और शेफाली वर्मा ने 1-1 विकेट निकाला।

चार्टर विमान से घर लौटेंगे द.अफ्रीका इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के खिलाड़ी

नई दिल्ली। अमेरिका और इजराइल के ईरान पर किए गए हमलों के बाद अंतरराष्ट्रीय हवाई क्षेत्र में हुए व्यवधान के बाद इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज की टीम इस सप्ताहांत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ओर से मुहैया कराई गई चार्टर उड़ानों से भारत से रवाना होंगी। सूत्र ने बताया कि गुरुवार को दूसरे सेमीफाइनल में भारत से हारने वाली इंग्लैंड टीम के शनिवार शाम को मुंबई से लंदन के लिए सीधी उड़ान से रवाना होने की उम्मीद है। वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका अन्य दो टीमें हैं, जो अपना अभियान समाप्त होने के बावजूद अब भी भारत में हैं।

भारत और उरुग्वे के बीच क्वालीफायर मैच आज

एजेंसी ▶▶| हैदराबाद

अनुभवी कोच शोर्ड मारिन के टीम से जुड़ने के बाद उत्साह से भरी भारतीय टीम एफआईएच महिला हॉकी विश्व कप में जगह बनाने के लक्ष्य के साथ क्वालीफायर में उरुग्वे के खिलाफ रविवार को होने वाले मैच में जीत दर्ज करके अपने अभियान की सकारात्मक शुरुआत करने की कोशिश करेगी। इस टूर्नामेंट में आठ टीमें मेजबान भारत, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, कोरिया, इटली, उरुग्वे, वेल्स और ऑस्ट्रिया विश्व कप के तीन स्थानों के लिए अपनी चुनौती पेश करेंगे। इस टूर्नामेंट में विश्व कप के तीन स्थान दांव पर लगे होने का मतलब है कि पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम बेल्जियम और नीदरलैंड में 14 से 30 अगस्त तक होने वाले विश्व कप के लिए क्वालीफाई करेंगी।

प्रपत्र संख्या [विनियम 33(2) देखें]
वसूली अधिकारी कार्यालय - I/II
ऋण वसूली न्यायाधिकरण जबलपुर
द्वितीय और तृतीय मंजिल, संचार विकास भवन (बीएसएनएल बिल्डिंग), प्रधान डाकघर के पास, रेजिडेंसी रोड, जबलपुर -482001, मध्य प्रदेश
आयकर अधिनियम, 1961 की द्वितीय अनुसूची के नियम 53 के तहत विक्रय घोषणा के निपटान हेतु सूचना, ऋण वसूली एवं दिवालियापन अधिनियम, 1993 के साथ पठित।
RC/129/2025 17-02-2026
आईडीबीआई बैंक बनाम इंदरपाल सिंह भल्ला
प्रति,
(सीडी1) इंदरपाल सिंह भल्ला,
नीलकंठेश्वर मंदिर, केलकर पारा, रायपुर जिला- रायपुर (सी.जी.) पिन-492001
चूंकि जबलपुर स्थित ऋण वसूली न्यायाधिकरण के पीठासीन अधिकारी ने, जिन्होंने OA/839/2023 में दिनांक 03/08/2025 को वसूली प्रमाण पत्र जारी किया था, आपको इंदरपाल सिंह भल्ला को भुगतान करने का आदेश दिया था। आवेदक बैंक/वित्तीय संस्थान (आवेदक का नाम) को 43,82,323.51 रुपये (तैंतालीस लाख बयासी हजार तीन सौ तेईस रुपये और इक्यावन पैसे मात्र) की राशि, 11.80% की दर से मुकदमे के दौरान और भविष्य के ब्याज सहित, 07/07/2023 से भुगतान होने तक, तथा 46000 रुपये (छियालीस हजार रुपये मात्र) के खर्च का भुगतान करने का आदेश दिया गया था, और चूंकि उक्त राशि का भुगतान नहीं किया गया है, इसलिए अधोहस्ताक्षरी ने नीचे उल्लिखित अचल संपत्ति की बिक्री का आदेश दिया है।
2. आपको सूचित किया जाता है कि बिक्री की घोषणा तैयार करने और उसकी शर्तों को तय करने के लिए 02/04/2026 को सुबह 10.30 बजे का समय निर्धारित किया गया है। आपसे अनुरोध है कि उक्त संपत्तियों या उसके किसी भाग से संबंधित किसी भी भार, प्रभार, दावे या देनदारियों को अधोहस्ताक्षरी के ध्यान में लाएं।
संपत्ति का विवरण
कृषि भूमि, सर्वेक्षण संख्या -50/1 क्षेत्रफल 1.670 हेक्टेयर; 50/2 क्षेत्रफल 0.800 हेक्टेयर; 51 क्षेत्रफल 0.080 हेक्टेयर; 77 क्षेत्रफल 0.260 हेक्टेयर; 81 क्षेत्रफल 0.480 हेक्टेयर; 264/1 क्षेत्रफल 0.060 हेक्टेयर; 2047/2 क्षेत्रफल 0.200 हेक्टेयर और 2078 क्षेत्रफल 0.400 हेक्टेयर, कुल क्षेत्रफल 3.950 हेक्टेयर, ग्राम-परखंडा, पटवारी हल्का नंबर-46, तहसील-कुरुद, जिला-धमतरी (छ.ग.) में स्थित है। श्री इंदरपाल सिंह भल्ला पुत्र श्री त्रिलोक सिंह भल्ला के नाम पर संपत्ति दर्ज है।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायाधिकरण की मुहर के तहत, दिनांक 17/02/2026 को दिया गया।
(मुहर)
वसूली अधिकारी, ऋण वसूली न्यायाधिकरण, जबलपुर

ऑल इंग्लैंड ओपन के फाइनल में लक्ष्य, कनाडा के लाई को हराया

एजेंसी ▶▶| बर्मिंघम

बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने पैर में दर्दनाक छाले और मांसपेशियों में खिंचाव से जूझते हुए कनाडा के विक्टर लाई को हराकर ऑल इंग्लैंड ओपन के पुरुष एकल फाइनल में जगह बनाई। अब वह इस बड़े खिताब के लिए भारत का 25 साल का इंतजार खत्म करने से महज एक जीत दूर हैं। यह मैच लक्ष्य के करियर के सबसे अच्छे मुकाबलों में से एक साबित हुआ। उन्होंने एक घंटे 37 मिनट तक चले संघर्ष में 21 साल के लाई पर 21-16, 18-21, 21-15 से जीत हासिल की जिन्होंने पिछले साल पेरिस में विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था। लक्ष्य 2022 चरण में उप विजेता रहे थे, जिससे यह उनका दूसरा ऑल इंग्लैंड फाइनल होगा। अल्मोड़ा के 24 साल के खिलाड़ी का सामना अब रविवार को फाइनल में दुनिया के 11वें नंबर के खिलाड़ी चीनी ताइपे के लिन चुन-यी से होगा। वह इसमें जीत से इतिहास रचना चाहेंगे। भारत के लिए प्रकाश पादुकोण (1980) और पुलेला गोपीचंद (2001) ही ऐसे खिलाड़ी हैं, जो ऑल इंग्लैंड खिताब जीत पाए हैं। उनके अलावा सिर्फ प्रकाश नाथ (1947) और साइना नेहवाल (2015) ही उप विजेता बनकर इसके करीब पहुंचे थे।

बैंक ऑफ इंडिया Bank of India BOI
सुपेला शाखा: तुलसी कॉम्प्लेक्स, कोहका रोड, सुपेला भिलाई, जिला - दुर्ग (छ.ग.), फोन-0788-2297155.
कब्जा सूचना (अचल सम्पत्ति के लिए)
जबकि
सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के [नियम 8 (1)] के तहत
अधोहस्ताक्षरकर्ता ने बैंक ऑफ इंडिया, सुपेला शाखा का प्राधिकृत अधिकारी होते हुए वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूतिहित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(2) और प्रतिभूतिहित (प्रवर्तन) नियम 2002 के नियम 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में मांग सूचना जारी की थी तथा ऋणी को मांग सूचना में उल्लेखित धनराशि जिसका विवरण नीचे दिया गया है का भुगतान सूचना प्राप्ति के 60 दिनों के भीतर करने को कहा गया था। ऋणी के यह राशि लौटाने में विफल होने पर ऋणी/बंधककर्ता और सर्वसाधारण को एतद् द्वारा सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरकर्ता ने उक्त अधिनियम की धारा 13(4) सपठित उक्त नियम के नियम 8 के तहत उसको प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में एतस्मिन नीचे वर्णित सम्पत्तियों का आधिपत्य (कब्जा) नीचे वर्णित दिनांक को ग्रहण कर लिया है तथा जिसका विवरण अधोवर्णित है। उधारकर्ता/गारंटर/बंधककर्ता (यों) का ध्यान सुरक्षित परिसंपत्तियों को छुड़ाने के लिये उपलब्ध समय के संबंध में अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (18) के प्रावधानों के लिये आमंत्रित किया गया है। ऋणी/बंधककर्ता को विशिष्ट रूप से और सर्वसाधारण को सामान्य रूप से एतद् द्वारा सम्पत्ति के साथ व्यवहार (क्रय-विक्रय) नहीं करने की चेतावनी दी जाती है और उक्त सम्पत्ति का किसी भी प्रकार से क्रय-विक्रय बैंक ऑफ इंडिया, सुपेला शाखा के मूल ब्याज व अन्य व्यय के भार के अधीन होगा जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

उधारकर्ता / जमानतदार	संपत्ति का विवरण	मांग पत्र दिनांक	देय राशि
उधारकर्ता:- मोहम्मद सिराज खान	समस्त भाग एवं आंशिक भाग की रिहायशी संपत्ति जिसका प्लॉट नं. खसरा नं. 7383/4 (खसरा संख्या 7383/2 का भाग) प.ह.नं. 14/19, वार्ड संख्या 07, प्लॉट संख्या 09 (भाग) मुर्रुम खदान, फरीद नगर, कोहका, सुपेला, भिलाई, कुल क्षेत्रफल 1200 वर्ग फुट। चौहद्दी:-उत्तर-सड़क, दक्षिण-गफ्फार का मुख्यालय, पूर्व-खान का मुख्यालय, पश्चिम-गुलाब खान का मुख्यालय।	दिनांक 28.11.2025 कब्जा दिनांक 05.03.2026	₹ 26,49,795.91 (छब्बीस लाख उन्चास हजार सात सौ पंचानवे रुपये एवं इक्यानवे पैसे मात्र) + ब्याज + अन्य खर्च

दिनांक : 08.03.2026
स्थान : सुपेला
प्राधिकृत अधिकारी
बैंक ऑफ इंडिया

रोनाल्डो की चोट गंभीर मैत्री मैचों में खेलना संदिग्ध

रियाद। अल-नासर के कोच जॉर्ज जीसस ने कहा कि क्रिस्टियानो रोनाल्डो की हैमस्ट्रिंग की चोट जितना अनुमान लगाया जा रहा था उससे अधिक गंभीर है। इस चोट के कारण 41 वर्षीय रोनाल्डो का पुर्तगाल की तरफ से आगामी मैत्री मैचों में खेलना भी संदिग्ध है। यह स्टार फुटबॉलर पिछले सप्ताहांत अल-नासर की सऊदी प्रो लीग में अल-फायहा पर 3-1 से मिली जीत के दौरान लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर चला गया था। जीसस ने कहा, 'पिछले मैच में क्रिस्टियानो को मांसपेशियों में खिंचाव के कारण मैदान छोड़ना पड़ा था।

URMILA MEMORIAL HOSPITAL
200 BEDDED MULTI-SUPER SPECIALITY HOSPITAL
UMH आयुष्मान भव:
24X7 EMERGENCY
उच्चस्तरीय आईसीयू और क्रिटिकल केयर प्रबंधन
CARDIAC ICU
NEURO ICU
MEDICAL ICU
SURGICAL ICU
STEP-DOWN ICU

EMPANELMENT WITH
ALL TPA, INSURANCE, SECL, SAIL, AIRPORT, NTPC,CSEB, CG STATE, CENTRAL GOVT.
कुशल एवं अनुभवी चिकित्सक, पैरामेडिकल स्टाफ एवं जीवनरक्षक उपकरणों के साथ-
उच्चतम चिकित्सा देखभाल
हृदय की नि:शुल्क ECHO जांच 10 मार्च 2026
लीवर की नि:शुल्क फाइब्रोस्कैन जांच 12 मार्च 2026
डायबिटीक फुट की नि:शुल्क जांच 20 मार्च 2026
मस्तिष्क की EEG जांच 25 मार्च 2026
सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक, सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा
0771-4088820, 9109125524, 9589956859
NAHAR ROAD, BHATAGAON, RAIPUR (C.G.)

दुनिया के सबसे दुर्लभ रंगीन सांप, जिन्हें देखकर आप भी कहेंगे- क्या नजारा है

सांपों की दुनिया का जिक्र आते ही दिमाग में काले या भूरे रंग की डरावनी तस्वीरें दिमाग में बन कर आती हैं, लेकिन हकीकत इससे कहीं ज्यादा रंगीन है। धरती पर ऐसे दुर्लभ सांप भी हैं जो नारंगी, नीले या हरे रंग के होते हैं। ये न केवल देखने में आकर्षक हैं बल्कि प्रकृति की रक्षा और अनुकूलन की अनोखी मिसाल भी पेश करते हैं। दुनिया में कुछ ऐसे दुर्लभ नारंगी रंग के सांप पाए जाते हैं, जो दिखने में बेहद खूबसूरत और अनोखे हैं। इनमें कोरल रेड कुकरी, अफ्रीकन बुश वाइपर, ऑरेंज-बैंडेड कोरल, ऑरेंज-कॉलर कीलबैक और गोल्डन ट्री स्नेक शामिल हैं। इनके रंग सिर्फ सुंदर नहीं, बल्कि सुरक्षा और शिकार की रणनीति भी हैं।

कोरल रेड कुकरी

कोरल रेड कुकरी दक्षिण एशिया का एक बेहद दुर्लभ सांप है, जिसका शरीर चमकदार नारंगी-लाल रंग का होता है। यह गैर विषैला सांप अपनी रंगत से जंगल में आसानी से छिप जाता है। इसकी चमकदार त्वचा इसे पेड़ों और झाड़ियों में लगभग अदृश्य बना देती है। कभी इसे विलुप्त माना गया था, लेकिन भारत के दुधवा नेशनल पार्क में इसे दोबारा देखा गया।

अफ्रीकन बुश वाइपर

अफ्रीकन बुश वाइपर मध्य और पूर्वी अफ्रीका के घने जंगलों में पाया जाता है। यह विषैला सांप पेड़ों और झाड़ियों में रहता है और अपनी खुरदुरी नारंगी स्केल्स से खुद को छिपा लेता है। यह रात में शिकार करता है और पक्षियों व छोटे जानवरों को पकड़ता है। हालांकि यह जहरीला है, मगर इंसानों से दूर रहना ही इसकी फितरत है।

ऑरेंज-बैंडेड कोरल

हिमालय की तराई में पाया जाने वाला यह सांप अपने सिर के पीछे नारंगी कॉलर जैसी पट्टी के लिए मशहूर है। यह हल्का जहरीला होता है लेकिन इंसानों के लिए खतरा नहीं है। लगभग 83 सेंटीमीटर लंबा यह सांप ठंडे इलाकों के जंगलों में रहता है। इसका मुख्य भोजन छोटे जीव-जंतु हैं। इसकी नारंगी चमक इसे प्रकृति के बीच अलग पहचान देती है।

ऑरेंज-कॉलर कीलबैक

हिमालय की तराई में पाया जाने वाला यह सांप अपने सिर के पीछे नारंगी कॉलर जैसी पट्टी के लिए मशहूर है। यह हल्का जहरीला होता है लेकिन इंसानों के लिए खतरा नहीं है। लगभग 83 सेंटीमीटर लंबा यह सांप ठंडे इलाकों के जंगलों में रहता है। इसका मुख्य भोजन छोटे जीव-जंतु हैं। इसकी नारंगी चमक इसे प्रकृति के बीच अलग पहचान देती है।

दुनिया के कई देशों सहित भारत में भी पाया जाता है हरा मेंढक

हरे मेंढक लगभग किसी भी उथले, स्थायी जल निकाय जैसे झरनों, दलदलों, नालों, तालाबों और झीलों में या उसके आसपास पाए जा सकते हैं। युवा हरे मेंढक गर्मियों में अस्थायी जल निकायों का उपयोग करते हैं।

हरा मेंढक दुनिया के कई हिस्सों में, मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और एशिया (भारत सहित) में पाया जाता है। ये आम तौर पर ताजे पानी के स्त्रोतों जैसे तालाबों, नदियों, झीलों और दलदली इलाकों के पास, और नम वर्षावनों में रहते हैं। हरा मेंढक (उपप्रजाति राणा क्लैमिटन्स मेलानोटा), एक सामान्य जलीय मेंढक (कुल रानिडे) है जो उत्तरपूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में तालाबों, नदियों और अन्य मीठे

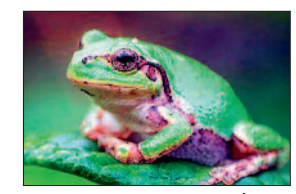

पानी के स्त्रोतों में पाया जाता है। हरा मेंढक 5 से 10 सेंटीमीटर (2 से 4 इंच) लंबा होता है और इसका रंग हरा से भूरा होता है। हरे मेंढक लगभग हर उस जीव जंतु को खा जाते हैं जिसे वे निगल सकते हैं! कीड़े, मकड़ियां, मछलियां, झींगा, अन्य मेंढक, मेंढक के बच्चे, छोटे सांप और घोंघे हरे मेंढक के शिकार की कई प्रजातियों में से हैं।

बार्बी से लेकर जीआई जो तक, ये हैं नीलामी में बिकने वाले सबसे महंगे खिलौने

आप सोचते होंगे कि खिलौने केवल बच्चों के लिए बनते हैं। हालांकि, कुछ वयस्कों को उनमें इतनी दिलचस्पी होती है कि वे उन्हें संग्रहित करना पसंद करते हैं। इसके चलते वे लाखों क्या, करोड़ों रुपये खर्च करने से भी पीछे नहीं हटते हैं। आज के लेख में हम आपको नीलामी में बिकने वाले अब तक के सबसे महंगे खिलौनों के बारे में बताएंगे। इन्हें बच्चों के बजाय वयस्कों के खरीदा है और ये सभी ऐतिहासिक हैं।

स्टेफानो कैंटुरी बार्बी: 2009 में बार्बी की 50वीं वर्षगांठ के लिए ऑस्ट्रेलिया में मैटल ने जेवर डिजाइनर स्टेफानो कैंटुरी के साथ हाथ मिलाया था। उन्होंने एक ऐतिहासिक बार्बी बनाई, जो दुनिया की सबसे महंगी है। स्टेफानो ने 4 हफ्तों तक बार्बी का शरीर, हेयर-स्टाइल, मेकअप, ड्रेस, जूते और सुंदर आभूषणों डिजाइन किए थे।

स्टार वार्स का रॉकेट फायरिंग बोबा फेट

स्टार वार्स से जुड़ी सभी चीजें करोड़ों में बिकती हैं तो इसके खिलौने कैसे पीछे रह सकते हैं। इस सूची में पहला स्थान रॉकेट फायरिंग बोबा फेट एक्शन फिगर का है। इसे 2024 में नीलाम किया गया था और इसकी कीमत 12 करोड़ रुपये से ज्यादा थी। यह 1979 में बनाया गया एक्शन फिगर है, जो नए जैसी हालत में है। यही कारण था कि इसे इतनी कीमत पर खरीदा गया और यह दुनिया का सबसे महंगा खिलौना बन गया।

दुनिया के कुछ सनकी राजा और उनकी अजीब आदतें, पागलों ष जैसे शौक रखते थे ये शासक

इतिहास में कई ऐसे राजा और शासक हुए हैं जिनकी आदतें इतनी विचित्र थीं कि वे आज भी लोगों को हैरान कर देती हैं। कुछ राजा सत्ता की ताकत दिखाते थे तो कुछ की आदतें व्यक्तिगत सनक से उपजीं थीं। इनकी आदतें, शौक व सनक ऐसी थीं जिनको पूरा करना असंभव काम था। कुछ राजाओं व शासकों की सनक पागलों से कम नहीं थी। कुछ राजा व शासक तो अपने शौक व सनक के कारण दिवालिया तक हो गए।

रोमन सम्राट रुडोल्फ द्वितीय : रुडोल्फ को जादू-टोने और ज्योतिष का शौक था। वे अपने महल में विचित्र जानवरों का संग्रह रखते थे, जैसे कि शेर और चीते, और वैज्ञानिकों व कलाकारों को इकट्ठा करते थे। अपने शौक के प्रति रुडोल्फ द्वितीय की सनक ऐसी थी कि वह महीनों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकलते थे।

रोमन सम्राट कैलिगुला

12-41 ईस्वी तक रोम पर राज करने वाले शासक कैलिगुला को अपने घोड़े से इंसिटाटस से इतना प्यार था कि उसने घोड़े को ही अधिकारी का पद दे दिया था। कैलिगुला अपने घोड़े को बिस्तर पर सुलाते थे और उसके लिए भव्य दावतें आयोजित करते थे। यही नहीं कैलिगुला खुद को देवता भी मानता था। फ्रेडरिक विलियम प्रथम 1688-1740 तक प्रशिया का राजा था। वह लंबे कद के सैनिकों का दीवाना था।

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक अनिल कुमार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से मुद्रित एवं हरिभूमि काम्पलेक्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक धनंजय वर्मा, संपादक (समन्वय) ब्रह्मवीर सिंह। RNI No. CHHHIN/2002/07457, फोन : 0771-4242222, e-mail:raipur@haribhoomi.com